चेन्नई के चमकते सितारे

भाग-2

प.पू. युगप्रधान आचार्यसम पं.चंद्रशेखरविजयजी म.सा.

समर्पणम्

ध्रुव तारे के समान

श्री शांतिसूरीश्वरजी म.सा. को,

जिन्होंने दूसरे बहुत से तारों को प्रगटाया...

और

वो छोटे-छोटे सितारों को,

जिन्होने अपने गुणों का दर्शन करवा के

मेरे सम्यग् दर्शन को निर्मल बनाया

मु.गुणहंस विजय

* दिव्याशीष *

सिद्धांत महोदधि सच्चारित्र चूडामणि

पूज्यपाद आचार्य श्रीमद् विजय प्रेमसूरीश्वरजी महाराज के

विनय पूज्यपाद युगप्रधानाचार्यसम

पू.पं.प्रवर श्री चंद्रशेखरविजयजी महाराज

* लेखक *

मुनिराज श्री गुणहंसविजयजी म.सा.

* प्रकाशन *

कमल प्रकाशन ट्रस्ट

102-ए, चंदनबाला कोम्पलेक्स, आनंद नगर

पोस्ट ऑफिस के सामने, भट्ठा, पालडी, अहमदावाद-7.

* प्राप्ति स्थल *

नरेश भाई
373, मिंट स्ट्रीट, राजेन्द्र काम्पलेक्स
(महाशक्ति होटल के पास)
चेन्नई-79 फोन: 9841067888

सुरेश भाई
401, मिंट स्ट्रीट,पंकु कुंज
दुसरा माला, साहुकारपेट
चेन्नई-79 फोन: 9840318499

विनित जैन
1, पल्लीयप्पन स्ट्रीट,
(अन्नापिलै स्ट्रीट के पास) चौथा माला
चेन्नई-79 फोन: 9566292931

* मुद्रक *

DESIGN & PRINTED BY

Firsst Look
IMPRESSION GUARANTEED....
9597511135

प्रस्तावना

वि.स. 2072-73 का चातुर्मास साहुकारपेट जैन आराधना भवन-चन्द्रप्रभ जैन नया मंदिर ट्रस्ट चैन्नई में हुआ। मेरे लिए बहुत सारे अच्छे और नये-नये अनुभवों से भरा हुआ यह चातुर्मास था। सेंकडो गुणवानों के दर्शन मुझे यहाँ हुये। चातुर्मास दरम्यान ही अनेक प्रंसग लिख लेने की भावना थी, परंतु बिल्कुल समय ही नहीं मिला। आज साहुकारपेट छोड़कर हम एम.सी. रोड के स्थानक में आए है, मेरी दीक्षा के 21 वर्ष आज पुरे हुए हैं। छत पर बैठकर शाम के समय यह लिखने का प्रारंभ किया हैं।

चार महिने बीत जाने के कारण कितने ही प्रसंग मैं भूल ही गया होऊँगा, फिर भी मुझे याद करके भी एक-एक प्रसंग लिखना है, 'प्रभु मेरी याददास्त बढा दें' इतनी ही इस प्रसंग पर प्रार्थना करता हुँ।

''तथा संघमांहे गुणवंततणी अनुपबृंहणा कीधी....'' ये शब्द अतिचार में बोलते है, उसका अर्थ यही है कि संघ में रहे गुणवान लोगों की यदि अनुमोदना नहीं करे तो सम्यक् दर्शन का अतिचार लगता हैं।

पू. गुरूदेवश्री ने मेरा जो नाम रखा है, वो सार्थक करना मेरा फर्ज है, इसलिए भी यह छोटी सी पुस्तक लिख रहा हुँ।

इस पुस्तक में दो विभागों में गुणानुवाद हैः-

1. सामूहिक रूप में जो अच्छी चीजें बनी है, उसका गुणानुवाद

2. व्यक्तिगत रूप में जो अच्छी चीजें बनी है, उसका गुणानुवाद

विस्मरणादि से कुछ भी गलत लिखा हो, तो क्षमा चाहता हुँ।

युगप्रधानाचार्यसम पू. गुरूदेवश्री चन्द्रशेखर वि.म.साहेब के शिष्य
गुणहंस विजय
श्री जैन स्थानक
एम.सी. रोड़,चैन्नई
मागसर सुद छट्ठ
वि.सं. 2073 तारीख 5.12.2016

पात्रता में विशेषता

92 वर्ष के **त्रिलोकचंदजी** ने जिनधर्म को अपने जीवन में किस तरह उतारा उसकी एक झलक....

1. कंदमूल संपूर्ण त्याग

2. बाहर का पानी भी नहीं पीते केवल अपने घर में या साधर्मिक के घर ही पानी पीते है, सफर 36घंटो का हो या उससे कम ज्यादा का। पानी घर से ही ले जाते है, होटल में, स्टेशन पर, भोजलशाला में भी पानी नहीं पीते।

3. पिछले 80 वर्षो में परमात्मा की पूजा किये बिना पानी पीया नहीं और एक भी दिन पूजा बिना का गया नहीं।

4. गत 80 वर्षो से कम से कम नवकारसी और शाम को चौविहार से कम का पच्च.करवाने नहीं किया।

फलस्वरूप एक भी दिन हॉस्पिटल में भर्ती नहीं होना पड़ा।

5. 80 वर्षो से हर पर्युषण में उपवास+छट्ठ+अट्ठम करते हैं।

6. हर आठम-चौदस को आज भी नियम से आयंबिल करते हैं।

7. अभी हाल ही में उनकी पोती की शादी थी, पर त्रिलोकजी का एकासणा था।

8. एकासणे में 7 या 8वस्तुओं से ज्यादा वस्तुएँ नहीं वापरते।

9. 12 वर्ष की उम्र से 77 वर्ष तक की उम्र (यानी लगभग 65 वर्ष) तक आपने कपड़े भी खुद ही धोए, चाहे नौकरानी हो या पत्नी किसी को धोने नहीं दिए, अहा! कितनी स्वाधीनता। उसके बाद अपनी उम्र के कारण उन्होंने खुद कपड़े धोना छोड़ दिया।

10. पिछले 80 वर्षो से उनके पास परिग्रह रूप मात्र दो ही कपड़ों की जोड़ी है, आज एक जोड़ी पहनी और दूसरी जोड़ी धोने में, यही क्रम दुसरे दिन भी, एक धोती, कुर्ता फट जाए तभी दूसरा निकालते है, कपड़ों में इतना कम परिग्रह क्या किसी के पास होगा?

11. दो टाईम प्रतिक्रमण+ 1 सामायिक इतनी आराधना कम से कम पिछले 80 वर्षो से कर रहे है,

12. वर्धमान तप की कुल 50 ओलीजी पूर्ण की हैं।

13. 8वर्ष की उम्र में ही राजस्थान में व्यवसाय से जुड़ गए थे, 20 वर्ष की उम्र में पिता का साया सर से चला गया था, त्रिलोकजी ने खुद के भाई-बहन, बेटा-बेटी.... भाई-बंधु आदि कुल 42 जितनी शादियाँ करवाई, ये बात अनुमोदना के लिए नहीं है, पर इन सब

शादियों में गाँव के 36 कोम 1100 घर में मिठाई बटँवाई, अभी हाल ही हुई शादी में गाँव के हर एक घर में लगभग 300 रू. की मिठाई बाँटी।

14. इनके बेटे सुरेश भाई कहते है की हम 7 भाई+4 बहने कुल 11 संतान है, पर पिताजी ने हमें ना तो कभी मारा और ना ही कभी डाँट भी लगाई।

15. चाहे कोई भी प्रसंग हो खाना घर पर ही खाते हैं। पंडाल बाँध कर जो बड़े रसोड़े में रसोई होती है वह भी नहीं खाते, हाल ही उनकी पौत्री की शादी हुई उसमें भी उन्होंने घर पर ही रसोइये के हाथ से ही खाया।

16. अगर बाहर गाँव में से कोई आया है तो उनको भोजन करवाना ही है.... पर उनसे पहले उनके गाड़ी के डाईवर-नौकर आदि की भी भोजन व्यवस्था का ध्यान रखते हैं।

17. पिछले 60 वर्षो से एक ही कांसे की थाली का उपयोग कर रहे है, कहीं बाहर भी जाते है तो अधिकतर अपनी थाली साथ ही रखते हैं।

त्रिलोक जी का मानना है की बाहर के बर्तनों में किसने क्या खाया इसका पता कैसे लगे? अपने आहार की शुद्धता बनी रहे इसलिए ऐसा करते हैं।

18. भंगी कोम कभी भी हमारे घर पर या अपने प्रसंगो में नहीं खाती, जो बच जाता है उसे अपने घर ले जाकर ही खाती हैं।

परंतु हाल ही में हुए लग्न प्रसंग पर सारी भंगी कोम को विनंती की और उनकी अलग से सुंदर व्यवस्था कर के उत्तम भोजन करवाया और कपड़े वगैरह भेंट स्वरूप प्रदान किए इसमें उनको 2 लाख के करीब खर्च आया।

19. गाँव में स्नात्र पुजा का संपूर्ण लाभ त्रिलोकजी ने ही लिया हुआ है.... (कोई दुसरा जुड़ता है तो ना नहीं बोलते।)

20. पुरी जिंदगी गाँव में ही व्यतीत की है मात्र पिछले 12 वर्षो से ही चैन्नई में हैं।

21. त्रिलोकजी के घर पर गाय होने के कारण उसी गाय के दूध का उपयोग देहरासरजी में वर्षो से हो रहा हैं। पर अब उनके घर पर गाय नहीं है, पर फिर भी जिस गाय का दूध मंदिरजी में पक्षाल के लिए काम में लिया जाता है उसका संपूर्ण लाभ त्रिलोक जी हीलेते हैं।

ऐसे तो कितनेही सुकृत लाभ त्रिलोकजी ही लेते हैं। त्रिलोकचंदजी आज भी मस्ती से चैन्नई की धरती को पावन कर रहे है, ना तो उन्हें किसी मान-सम्मान की पड़ी है और ना ही किसी हार-जीत की....

जाने कब ये पंछी अपनी मंजील की ओर उड़ जाएगा पता भी नहीं चलेगा....

दर्शन करने हो तो जरूर कर लीजिएगा।

छोड़ो प्रभावना का लालच

''म.सा. ! नीचे से न्याय म.सा. ने मुझे ऊपर भेजा है और कहाँ है की ये सारी बातें बड़े म.सा. से कहो। वे बहुत खुश होंगे।''

एक बहन अपनी बेटी के साथ ऊपर आए ।

ता. 20.12.2016का दिन

कोण्डितोप का उपाश्रय, दूसरी मंजिल!

'बोलो क्या हैं ?'

'सुरेश भाई(अंबालालजी) मेरे कल्याण मित्र है आप यहाँ आने वाले हो ये बात उन्हीं से मालुम हुई, पर साथ ही साथ ये भी पता चला आप माईक का उपयोग नहीं करते।'

इस बात से चिढ़ हुई, पहले दिन व्याख्यान में मजा नहीं आया, पर धीरे-धीरे रूचि बढ़ने लगी, और देखते ही देखते मस्ती भरे 50 दिन बीत गये, पर पहली बार मुझे भावों की कीमत जानने को मिली, समझने को मिली....

'पर इसमें मैं खुश होऊ ऐसी क्या खास बात हैं ?'

'आपने अभी आनंदघनजी महाराजा के स्तवन पर विवेचन किया था, उसमें आपने निरूपाधिक प्रीत-सगाई के बारे में समझाया था कि भगवान के साथ की प्रीत में किसी भी भौतिक सुख की अपेक्षा(इच्छा) ये उपाधि(आवरण) है उसे जड़ मूल से निकाल देना चाहिए....'

म.सा. ! ये पदार्थ मुझे बहुत ही पसंद आया लालच से ही व्याख्यान आदि में आते है, ऐसा नहीं पर अगर पता चले की नीचे 10-20 रू. की प्रभावना है तो 1-2 चैत्यवंदनादि निपटा कर नीचे प्रभावना के लिए भागते हैं। क्योंकि हमें डर लगा रहता है कहीं हम रह गए अथवा प्रभावना खत्म हो गई तो ? बस इसी डर से नीचे भागते हैं।

म.सा. ! कभी-कभी तो 2-3 जगहों पर प्रभावना होने की खबर मिले तो, भाग-भाग कर सारी जगह से प्रभावना ले आते हैं।

साहेबजी! आपके प्रवचन सुनने के बाद हमें खुद पर शरम आती हैं। कि हम प्रभावना के पीछे ऐसे पागल कैसे बन गए? हम भिखारी है क्या ? ऐसी लालच हमारे अंदर कैसे ?

म.सा. ! मैं आज आपके पास नियम लेने आई हुँ, की 10 रू. तक की प्रभावना मैं

मेरे लिए या में परिवार के लिए नहीं वापरूंगी.... बल्कि धर्म क्षेत्र में उसका उपयोग करूँगी।

'शाबाश! मैंने आज ही व्याख्यान में इसकी प्रेरणा की है कि प्रभावना जरूर लेनी उसका तिरस्कार नहीं करना का, पर उसका उपयोग धर्म क्षेत्र में ही करने का' यह सुनकर बहुत से लोंगो ने 100 रू. तक की प्रभावना का धर्मक्षेत्र में उपयोग करने का निर्णय लिया।

म.सा. ! मुझे भी 50 रू. तक का नियम दिजिए, 'उल्लास के साथ उन्होंने नियम लिया, मुझे खुश करने के लिए उन्होंने 100 रू. का नियम नहीं स्वीकारा पर खुद के छलकते भावों के आधार पर उन्होंने यह नियम लिया और बिना दबाव के मैंने यह नियम उनको दिया।'

'साहेबजी! आपने इस वक्त 5 रू. की प्रभावना रखकर बहुत ही अच्छा काम किया इससे हमारा लालच अपने आप खत्म हो गया, हमें शुद्ध धर्म स्वीकारने का मौका मिला, इतना बोल कर वह बहन चलते बने पर मुझे विचारो की दुनिया में छोड़ गए।'

जैनों में अज्ञान है इसी कारण से तरह-तरह के पापों का भोग बनते हैं।

जैनों में पात्रता है इसी कारण से थोड़ा भी निमित्त मिला तो सही समझ के साथ खुद की आत्मा को पवित्र, पवित्र और पवित्र बना देते हैं।

संयमी आत्माओं को इस पात्रता का सद्उपयोग कर लेना चाहिए।

चीकु

साहेबजी आपने कल प्रवचन में कहा था की बड़े-बड़े तप ना भी कर सको तो छोटा त्याग तो करो, पुरे दिन में कम से कम दो ही द्रव्यों का उपयोग करो.... वगैरह-वगैरह तो साहेबजी आज पुरे दिन में मैंने दूध+खाखरा दो ही चीजों का उपयोग किया है, नौ साल का शरारती, नटखट लड़का चीकु दोपहर के चार बजे मुझे यह बात कह गया।

'वाह रे वाह! तुमने तो जोरदार त्याग किया' व्याख्यान में छोटे बच्चों को कुछ समझ नहीं आता ऐसी धारणा रखने वाले मुझे वाकई आश्चर्य हुआ, क्योंकि इस बच्चे ने समझा ही नहीं, सीधा अमल ही कर दिया था।

म.सा. ! अभी मम्मी जिद कर रही थी की शाम को दुसरा कुछ खा लेना पर मैं नहीं खाने वाला! बोलकर वह चीकु घर गया, शाम को खाना खा कर वापस आया, और कहने लगा, 'म.सा. ! मम्मी ने मुझे दुसरा कुछ खाने के लिए बहुत कहा पर मैं तो अभी भी

दुध+खाखरा ही खा कर आया हुँ।'

मैं उस बच्चे की मासूमियत और दृढ़ता को एक साथ देख रहा था और सोच रहा था की, अईमुत्ता मुनि भी क्या ऐसे ही होंगे?

दुसरे दिन व्याख्यान के अंत में मैंने उसकी भरपूर अनुमोदना की और विकासभाई द्धारा, चीकु और उसके मम्मी, पप्पा का 100-100 रू. से बहुमान करवाया....

तीसरे दिन चीकु के पापा ने मुझे आनंददायक समाचार दिए....

म.सा.! चीकु ने मेरे और उसकी मम्मी के 100-100 रू. ले लिए, और कुल 300 रू. लेकर शांति स्वीट्स में गया, वहाँ से छोटे-छोटे पेडे खरीदे 300 रू. के और मंदिर के बाहर बैठने वाले तमाम गरीबों को बाँट दिए।

म.सा.:- हाँ तो आपने सिखाया होगा।

चीकु के पिताजी :-ना ना म.सा. ! आज के समय में बच्चों की बुद्धि सचमुच बहुत आगे दौड़ती है इसलिए उसे यह सब सिखाने की जरूरत ही नहीं पड़ती।

बाद में तो यह लड़का रोज उपाश्रय में आता, खुब धमा-चौकड़ी करता, कमरे के अंदर मुमुक्षुओं को बंद कर देता....ऐसा तो बहुत कुछ चलता ही रहा।

भयंकर शरारती लड़के की भी त्याग+उदारता के गुण को देखने की दृष्टि जो हम में नहीं है तो हम लोकोत्तर शासन में प्रज्ञा चक्षु ही कहे जाएंगे।

हा! पर्युषण बाद की एक चौदस को यह बालक प्रतिक्रमण करने आया था, दादा, पापा या किसी भी दोस्त के साथ नहीं बल्कि अकेला ही आया था और हमारी बाजु में ही बैठा था विशेष कोई समझ न होने के कारण प्रतिक्रमण में दो-चार बार सब को आड, मात्रु करने भागा था, पहले तो उस पर बहुत गुस्सा आया, फिर बहुत ही प्यार आया कि, "इतना छोटा लड़का एक तो अकेले प्रतिक्रमण करने आया दो घंटे बैठा, जैसा कहाँ वैसा किया ये क्या कम बड़ी बात हैं?"

प्रतिक्रमण के बाद मैंने उसे उपर मिल कर जाने को कहाँ।

म.सा.! मुझे वंदितु बोलना था पर मैं आया उससे पहले तो आदेश दे दिए गये थे और ऐसे भी ये बड़े लोग मुझे वंदितु बोलने नहीं देते.... उसकी नटखट मीठी शिकायत में बहुत गंभीर बात छुपी हुई थी धर्म में नये जुड़ने वालों की भूलों को नहीं सहन करके बड़ों की भूमिका ने कितने ही नये लोंगो को धर्म विमुख कर दिया हैं।

ये तत्व चीकु के शब्दों में बराबर ध्वनित हो रहे थे।

20 रूपये से 20,000 रूपये तक

'अनुमोदना.... अनुमोदना.... 'हॉल में बैठे हुए लगभग 200 शिबिरार्थी बोल रहे थे, ऐरपोर्ट टी.जी.यू. (तत्व-ज्ञान-उपधान) 2 का अंतिम दिन था। और शिविर के लाभार्थीयों का बहुमान चल रहा था,

मैं हॉल के स्टेज पर बैठा था, हॉल के बाये ओर में मंदिरजी और दांयी ओर में भोजनशाला है.... शिविरार्थीयों ने अपने तीनों समय का भोजन वहीं पर किया था...

अचानक मेरी नजर हॉल के बराबर पीछे के भाग पर गई, वहाँ खिड़की के बाहर नौकर लोग खड़े थे और इस बहुमान कार्यक्रम को देख रहे थे।

उन्होंने ही पाँच दिन तक परोसने का काम किया था हा! पैसो से!

उन्होंने पाँच दिन तक रसोई बनाने का काम किया था, हा! पैसो से!

आज वे कुछ गजब के कुतुहल के साथ बाहर खड़े होकर खिड़की से देख रहे थे।

वे अंदर आने का विचार भी नहीं कर सकते थे, क्योंकि वे गरीब थे? ना, नौकर थे? ना, अजैन थे? ना....

वीर प्रभु ने घर के नौकरों के लिए ''कौटुंबिक पुरूष'' जैसे उत्तम शब्दों का प्रयोग किया है पर यह तो मात्र पर्युषण में कल्पसुत्र के व्याख्यान में सुनने के लिए है ना? ये कोई जीवन में उतारने के लिए थोड़े ही हैं।

'जो बाहर खड़े है वे अंदर आ जाए'- मैंने जोर से आवाज लगाई, वे सामने बाहर खड़े थे, उन्हें सुनाई दे इसलिए जोर से आवाज लगानी जरूरी थी।

पर उन लोगों पर मेरी आवाज का गलत असर हुआ वे मेरे शब्दों को नहीं समझ सके, उन्हें लगा वे कुछ गलत कर रहे है और मैं उन्हें डाँट लगा रहा हुँ, इस कारण डरकर वे वहाँ से हट गए और रसोई घर में चले गए।

उनके व्यवहार से मुझे ख्याल आ गया कि, ''मैं अचानक ही बोला इससे वे गलत समझ बैठे, मेरे शब्द पकड़ ही नहीं पाए....''

'कांतिभाई! उन सब को अंदर बुलाओ, उन्होंने हमारे सारे शिविरार्थीओं की भक्ति की है, क्या उन्हें बहुमान करवाने का हक नहीं हैं?'

साधुओं के प्रति अत्यंत आदरवाले, विवेकी आराधक गंभीर, कांतिभाई ने तुरंत ही बड़े उल्लास के साथ उन सब को बुलाया।

'आपने पाँच दिन तक बहुत ही अच्छा काम किया है, ये शिविरार्थी मुझे कहे गये है

के इन सब ने हमारी खुब भक्ति की है, आग्रह कर-कर के हमको खिलाया है, केवल नौकर बन कर नहीं स्वजन बनकर भोजन परोसा है, इसी कारण से तुम्हारा भी सम्मान करना हैं।'

और फिर एक के बाद एक नौकर(!) मेरे पास आते गए, मेरे पैरों पर स्पर्श करते गए, ट्रस्टीगण उनका सम्मान करते गए और शिबिरार्थी 'अनुमोदना-अनुमोदना' ये शब्द बोलते रहे।

इसमें एक छोटा सा प्रसंग बना

एक नौकर मेरे नजदीक आया, मेरे चरणों में स्पर्श करने के बदले उसने अपने शर्ट की जेब में हाथ डाला, और 20 रू. की नोट बाहर निकाली, वह नोट उसने स्थापनाजी के पास रखी और फिर मेरे चरण स्पर्श किए एक अजैन नौकर ने ये सब कहाँ से सीखा ? उसे ऐसी बुद्धि कहाँ से आई ? ऐसे भाव किस तरह जगे ? यह मेरे लिए एक बहुत बड़ा प्रश्न था।

मैंने उसी वक्त इस प्रसंग को जाहेर में कहा और अनुमोदना की, जिन गरीबों के लिए 1-1 रू. की कीमत होती है वैसे गरीब 20 रू. भी बड़ी आसानी से रख सकते है, गुरू के पास आने वाले कितने ही सक्षम जैनी भी जैब में हाथ डालकर चार-पाँच नोट निकालते है उसमे से 500-100-50-20 की नोट वापिस जेब में रखकर 10 रू. की नोट रखकर संतोष मानते हुए भी देखे है, इस कारण उस गरीब के 20 रू. का नोट मुझे तो ज्यादा किमती लगा।

कार्यक्रम पुरा होने के बाद एक शिबिरार्थी बहन को बुलाकर मैंने कहा की 'देखो बहनजी आप नौकरी करते है ना ! ये 20 रू. की नोट लीजिए इसे शकुन समझ कर अपने पास रखना और इसके बदले 40 रू. वैयावच्च्य खाते में दे देना, पर यह नोट आपके पास ही रखनु।'

मात्र 15 दिन में उस बहन ने समाचार दिए कि 'ऑफिस में मेरे काम से खुश होकर मेरे जैन मालिक ने 20,000 रू. मुझे ऐकस्ट्रा दिए, आपके 20 रू. के शकुन के कारण मात्र 15 दिनों में मुझे 20,000 रू. मिले, ये चमत्कार नहीं तो क्या हैं।'

(घर की परिस्थिति के कारण बहुत ही सुरक्षित स्थान पर ये बहन नौकरी कर रहे थे।)

मुछाला महावीर

एरपोर्ट की शिबिर में शिबिरार्थीओं को सबसे ज्यादा परेशान करने वाले एक लंबी,

मोटी, मुंछवाले भाई थे, उनका काम हररोज सुबह हर एक रूम पर जाकर डंके बजा-बजा कर सबको उठाने का था, इतनी सुबह पाँच बजे उठना नयी पीढी केलिए कितना मुश्किल होता है, ये तो सब जानते ही है ना ?

और कोई ना उठे तो उस रूम के बाहर तब तक जोर-जोर से थाली-डंका, कान में बजाते थे जब तक वह शिबिरार्थी उठ ना जाए।

'सब जातने थे ये तो उनका काम है' पर फीर भी सबके मन में उनके लिए गुस्सा प्रकट हो ही जाता था।

मुझे लगा ये कोई नौकर रखा होगा.... पर अंतिम दिन यह मेरी गलतफहमी साबित हुई।

ये भाई तो श्री चंन्द्रप्रभुजी मंडल के एक सदस्य थे। ये भाई तो एस.पी.आर. टावरों में 12टीएच फ्लोर पर रहने वाले एक करोड़पति इन्सान थे।

वीरप्पन(चंदन चोरः तमिलनाडु का बड़ा डकैत) को खत्म करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाले डी.जी.पी. इनके पक्के दोस्त हैं।

ये भाई अभी चंद्रप्रभ जैन नया मंदिर ट्रस्ट के ट्रस्टी है

पाँच दिन तक एकदम सादे कपड़ों में शिबिरार्थीओं को उठाने के लिए थाली-डंका बजाने का काम उन्होंने रूम-रूम जाकर किया ये देखकर मुझे आश्चर्य नहीं हुआ, बल्कि इसलिए की बड़े ही बड़ी आसानी से छोटे बन सकते है, केरीयाँ ही झुक सकती है....

शिबिरार्थीओं ने भी अंतिम दिन उनसे मॉफी माँगी और कबुल भी किया की आप नहीं होते तो हमारी सुबह की भक्ति की क्लास में हम उपस्थित नहीं हो पाते और भगवान के साथ बात करने की कला नहीं सीख पाते।

उनकी दोनों कानों तक लंबी मुंछे और उनका सत्व देखकर सहज ही राजस्थान के 'मुछाला-महावीर' याद आ जाते हैं।

मार्गानुसारी भी जैन है

म.सा.! राष्ट्रीय स्वयं सेवक (आर.एस.एस.) के सबसे बड़े कार्यकर्ता चैन्नई में पधारे हुए है तो मेरी भावना है की उनकी और आपकी मिटिंग करवाने की, आपकी अनुकुलता हो तो साहेबजी ?

लंबे और पतले, पर सात्विक जैन भाई पार्श्वकुमार ने मेरे पास समय माँगा।

ये भाई ऐसे तो जैन है, फिर भी प्रवचन आदि में कम जुड़ते है, फिर भी उनकी गुणवत्ता उत्तम कोटि की, ये खुद आर.एस.एस. के एक सदस्य हैं।

मैंने हा कहाँ और कार्यक्रम के साथ मेरी मीटींग हुई।

–कितने सदस्य हैं ?

'लगभग 15 लाख ! इस वर्ष ही सब के ड्रेस बदले है, चड्डी के बदले पेन्ट तय हुआ है, सबने खुद के खर्चे से ही अपना ड्रेस तैयार किया हैं !'

–'आपका क्या काम हैं ?'

हम प्रचार करते है, आपने जैसे दीक्षा ली है, वैसे ही हमने प्रचार दीक्षा ली हैं।

हमारे सदस्य भले ही 15 लाख, पर सतत् प्रचार करने का काम तो लगभग 3000 सदस्यों के आसपास !

उन 3000 सदस्यों को हम प्रचारक की तरह पहचानते है, हम पुरे भारत में घुमते है और संस्कृति का प्रचार करते है,

– 'पर इन 3000 सदस्यों का खर्च कैसे निकलता हैं ? आप सब पुरे भारत में घुमते हो तो यात्रा का खाने–पीने का, रहने का, कपड़ों आदि का खर्च तो होता ही होगा ना ?'

होता ही है ना ! पर उसके लिए हम कहीं दान मांगने नहीं जाते, कोई सामने से दे तो ठीक नहीं तो हमने एक योजना सोची हुई हैं।

–'क्या' ?

'पुरे भारते में हमारे हजारों सेन्टर है, गुरूपुर्णिमा के दिन हर एक सेन्टर में एक पेटी रखते है आर.एस.एस के सभी सदस्य उसमें अपनी शक्ति और भावना के आधार पर उसमें रूपये डालते हैं।'

पर हमारी पद्धति इस प्रकार है :–

1. हर एक सदस्य को पेटी में रूपये डालने ही पड़े ऐसा बिल्कुल नहीं है, अनुकुलता ना हो तो एक रूपया भी ना डाले तो चलता हैं।

2. जिसे जितने पैसे देने है, वो एक कवर में पैसे डालकर उस कवर को पेटी में डालने का।

3. कवर के ऊपर किसी को कुछ लिखने का नहीं, अपना नाम भी नहीं।

4. किसने कितने रू. दिये इसकी किसी को कुछ खबर नहीं लगती इसलिए

5. इस प्रकार करोड़ों रू. इकट्ठे हो जाते है, और इन रू. के द्धारा संघ की अनेक प्रकार की

गतिविधियाँ चलती हैं।

6. जहाँ हम प्रचार करने जाते है वहाँ हमारे स्थनीय स्वयंसेवक तो होते ही है तो ज्यादातर हम उनके घर पर ही रूकते है इससे होटल का खर्च नहीं होता उनके घर ही खाना खाते है इससे खाने का खर्च भी बच जाता हैं।

7. हो सके वहाँ तक हम प्रचारक ट्रेन अथवा बस से सफर करते है, प्लेन में नहीं करते, हमारी इस सादगी के कारण हमारा यात्रा का खर्च भी बहुत कम हैं।

मुझे बाद में पता चला की आर.एस.एस. के 15 लाख कार्यकर्ताओं में से जो 3000 के आसपास प्रचारक है उसमें सबसे आगे होकर काम करने वाले भाई मुझे मिले थे, वे भाई राजस्थान के एक जैन स्थानकवासी भाई हैं।

एक बार आराधना भवन मे आर एस एस के सदस्यों का एक कार्यक्रम रखा गया था उसमें लगभग 150 आसपास कार्यकर्ता आये थे।

उन लोंगो का अनुशासन देखकर मैं तो स्तब्ध ही रह गया मुझे बाद में अपने जैन भाइओं ने कहा की म.सा. ! हम जब ऊपर आ रहे थे तब हमने देखा की हर एक ने अपने जुते चप्पल एक समान लाईन में लगाए है.... किसी ने भी आड़े-टेडे नहीं उतारे....

संस्कृत में श्लोक बोलना, संतो का मान-सम्मान करना, प्राणायाम-योग, हितशिक्षाएँ, ध्वजवंदन.... इत्यादि-इत्यादि एकदम व्यवस्थित व समय से हुआ।

सबसे बड़ी बात तो यह हुई कि मैं 3 फ्लोर पर था और प्रोग्राम 4 फ्लोर पर रखा गया था, समय हो चुका था पर बिल्कुल भी आवाज नहीं सुनाई , ऊपर चढ़ने वालो की आवाज भी सुनाई नहीं दी....इससे मुझे तो यही लगा कोई आया ही नहीं होगा। (अपने व्याख्यानों में तो भाग्य से ही समय पर आने वाले श्रोता मिल जाते हैं।) बाद में धीरे-धीरे आएंगे।

पर जब एकदम तय समय पर मुझे बुलाने आए, और मैं ऊपर गया तभी मालुम हुआ की हॉल तो खचाखच भरा हुआ है, वे कब ऊपर चढ़े, बैठ गए.... कुछ पता ही नहीं चला (मार्गानुसारिता मोक्षमार्ग ही है.... ये न भूलना।)

हाँ पहले स्थानकवासी प्रचारक ने कहा हुआ एक प्रसंग मैं यहाँ कहे बिना नहीं रह सकता।

आर एस एस एक सदस्य की मृत्यु हुई.... वे एक सरकारी कर्मचारी थे इस कारण सरकार की तरफ से उनको पेन्शन मिलती थी, वे अपनी वसीयत में लिख के गए थे की मेरी.... पेन्शन में से अधिकांश रकम आरएसएस में जमा करवाई जाए....

गुरूपुर्णिमा के दिन उनकी विधवा पत्नी अपने बच्चों के साथ आरएसएस के सेन्टर के बाहर आई और आवाज लगाकर एक व्यक्ति को बाहर बुलाया और पुरी मर्यादा के साथ उनके साथ बात की और कहा 'ये लीजिए कवर, पेटी में डाल दिजिए....'

'पर आप कौन ? कार्यकर्ता ने प्रश्न किया।'

मैं फलाने भाई की पत्नी ! भाई का तो देवलोक हुआ है, ये अपनी वसीयत में लिख के गए थे उसके मुताबिक मैं हर महिने पेन्शन की आधि रकम अलग रख लेती हुं, आप पुरे साल की इकट्ठी करके देने आई हुँ, हर साल इसी तरह दे जाऊँगी।

कार्यकर्ता भाई गदगद हो गए, 'बहन ! पति के ना रहने पर घर खर्च के लिए पैसे की जरूरत ज्यादा पड़ती है, आज नहीं तो कल जरूरत पड़ सकती है पैसे इकट्ठे करोगी तो इन बच्चों की पढ़ाई के लिए भी काम आएंगे।'

'नहीं भाई ! ये जो कह गए है वो नहीं पालुंगी तो मैं पत्नी किस बात की। उनकी अंतिम इच्छा पूरी करनी ही मेरा फर्ज है। बोल कर विधवा(!) बहन निकल गई।'

(हमारे पास से अजैनीओं को रत्नत्रयी मिलने जैसी है और अजैनीओं के पास से मार्गानुसारीता जैसी गुणवत्ता प्राप्त करने जैसी है ना ? अभी हमारे मुमुक्षुओं ने एक जगह बैठकर वर्षीदान किया, जैनो का और अजैनों का अलग-अलग किया, समाचार मिले की 'अजैन लोग धक्का-मुक्की नहीं कर रहे थे, पर जैनों में धक्का-मुक्की और अव्यवस्था देखने को मिली।'

भोजन समारोह में, प्रभावना लेने में, हमें शिष्टाचार लाने की जरूरत है ना ?)

आत्मा की उमर नहीं होती

'अरे भाई ! आपकी लकड़ी की आवाज व्याख्यान में अंतराय कर रही है, चलो वहीं बैठ जाओ।'!

चालु व्याख्यान में लकड़ी का सहारा लेकर आते और इसी लकड़ी के आवाज के कारण मैं अशांत हो गया और चालु व्याख्यान में सुचना देनी पड़ी।

पर वो भाई चलते ही रहे। मुझे थोड़ा गुस्सा आया.... मैंने देखा वे बड़ी उम्र के है इसलिए फिर उनके बैठने की राह देखी।

'साहेबजी ! ये मेरे पापा है ! संघ के ट्रस्टी सुरेशभाई ने मुझे बताया और खड़े होकर उन्हें उचित स्थान पर बैठाया।'

कुर्सी पर नहीं बैठते ?

'ज्यादातर नहीं, नीचे ही बैठते है, व्याख्यान में, मंदिरजी में, गुरू भंगवतों के पास तो खासकर नीचे ही बैठते है....'

उसके बाद सुरेश भाई ने सारी बात मुझसे कही....

'म.सा. ! पप्पा की उमर 92 वर्ष की है पर आज की तारीख में भी मंदिर आते है, मस्ती से पुजा करते है, व्याख्यान में बैठते है.... उनका पच्चक्खान भी नक्की नहीं होता। ज्यादातर व्याख्यान के बाद ही वापरते है तो पोरसी आदि ही होते हैं। खुद में मस्त रहते है, दुसरी कुछ पंचायत नहीं.....'

लकड़ी के सहारे भी मुश्किल से बहुत धीरे-धीरे चलते हुए 92 वर्ष के अति वृद्ध ओटमलजी ने जब पर्युषण में अंतिम दिनों में अट्ठम का पच्चक्खान माँगा, तब मुझसे रहा नहीं गया, 'इस उम्र में अट्ठम करोंगे?'

साहेबजी! ये तो अट्ठाई करने वाले थे, हमने इन्हें समझा-बुझा के रोका हैं। 'सुरेशभाई ने जवाब दिया।'

संवत्सरी के दिन यानी की तीसरे उपवास के दिन प्रतिक्रमण में मेरे सामने नजदीक में ही बैठे थे। मैंने देखा की उन्होंने पुरा प्रतिक्रमण खड़े-खड़े किया।

उनके बेटे सुरेशभाई वर्ष में 300 दिन रात्रिभोजन का त्याग करते है और पर्युषण में 50 दिन एकासणा करते हैं।

('तप नहीं होता.... थकान है इसलिए बैठे-बैठे किया.... वगैरह अपने बहाने तो नहीं है ना? ये देखना की उम्र शरीर को रोकती है, आत्मा की शक्ति तो अंचित्य हैं। हम तो 92 वर्ष की उम्र के होंगे भी या नहीं? ये भी एक बड़ा प्रश्न हैं।')

तेनाली के साध्वीजी

'बहने!' आपको पता तो है ना की आप किस ग्रुप में दीक्षा ले रहे हो आपको पता तो है ना। उस ग्रुप में लगभग सब 50 वर्ष की उपर की उम्र वाले है, और बीमार साध्वीजी भी बहुत है, आपकी उम्र 20-22 की है, और इन सात साध्वीजीओं के ग्रुप में आपकी उम्र के एक भी नहीं हैं।

आप पढ़ाई भी नहीं कर सकोंगे, इन सब की सेवा ही करनी पड़ेगी।

इससे अच्छा आप एक ऐसा ग्रुप पसंद करो की जिसमें 'भले ही वृद्ध साध्वीजी हो पर आपकी उम्र के साध्वीजी भी हो, पढ़े-लिखे साध्वीजी होंगे तो आपका सुंदर अभ्यास भी होगा, और आपके ऊपर काम का बोझा भी नहीं रहेगा, आपको अपनी उम्र वाली

साध्वीजीओं के साथ ज्यादा जमेगा....'

चैन्नई के प्रखर वक्ता सुरेशभाई अंबालालजी जब एक मुमुक्षु का विदाई समारोह करने के लिए तेनाली गए थे तब विदाय समारोह से पहले ही मुमुक्षु को व्यक्तिगत रूप से ऐसा सवाल पूछ लिया।

ये बहन कॉलेज में पढ़े हुए, होशियार और सुखी परिवार के थे।

उन्होंने एक ही पल में जवाब दिया 'सुरेशभाई !'

जो सब लोग इस तरह मात्र अपने स्वार्थ का ही विचार करेंगे तो पुरे संघ में जो सैंकड़ो वृद्ध साध्वीजी भगवंत है उनकी सार-संभाल कौन करेगा ?

मैंने निर्णय कर लिया है की पुरी जिंदगी इन वडीलों की सेवा करूँगी, उसमें जितनी पढाई होगी उतनी कर लुंगी, बाकी स्वाध्याय जैसे मोक्ष का मार्ग है वैसे ही वैयावच्च भी मोक्ष का मार्ग है.... मुझे तो केवल मोक्ष के साथ लेना-देना हैं।

और उस बहन ने पू. धर्मसुरिजी म.सा. के साध्वीजी भंगवतों के पास दीक्षा अंगीकार की।

वे ही साध्वीजी भगवंत जुना मंदिर में चातुर्मास में थे। एक वर्ष के दीक्षा पर्याय के बाद आज वे नूतन साध्वीजी हमें बताते है की 'ग्रुप में सब वृद्ध साध्वीजी है, पर सब अपना-अपना काम खुद ही करते हैं। मुझे कुछ भी काम करने ही नहीं देते, मैं काम करने की कोशिश भी करूं तो मुझे रोक देते है और कहते हैं तुम्हारी पढ़ने की उम्र है तुम पढाई करो.... मैंने इन सब की सेवा करने के लिए दीक्षा ली है पर अभी तो ये सब मेरी सेवा कर रहे हैं।'

उस वक्त उनके साथ खड़े उनके गुरूजी ने कहाँ, 'म.सा. ! हम तो ज्यादा पढ़ाई नहीं कर पाए हमारे वडीलों की सेवा में हमें पढ़ने का समय ही नहीं मिला, इस बात का हमें कोई दु:ख नहीं पर अभी हम हमारा काम कर सकते है तो इनको तो बराबर पढ़ाई करा सकते हैं ना ! एक सगी माँ के वात्सल्य के साथ गुरूजी बोल उठे।'

हम सारे साध्वीजी परस्पर गुरू बहेन है फिर भी सब साथ ही रहते है, ये एक मेरी शिष्या है.... पर हमने कभी अलग होने का विचार भी नहीं किया, हमारे गुरूजी के जाने के बाद भी हम कभी अलग नहीं हुए।

मुझे इस ग्रुप की भावनाएँ अच्छी लगी....

जिंदगी इसी तरह से ही मीठी बनती है....

बाकि तो कडवी जहर, तीखी, तेज ही हैं।

गोल्ड इज ओल्ड

'म.सा. ! मेरी ननद आपसे मिलना चाहती है तो वे कब आए ?

शाम को चार बजे तक हमारा पाठ होता है, उसके बाद कभी भी आ सकती हैं ।'

कोंडीतोप उपाश्रय में 20.12.2016को प्रवचन के बाद एक बहन के साथ इतना वार्तालाप हुआ और बराबर शाम को सवाा चार बजे वे बहन आ पहुँचे ।

'साहेबजी ! एक बहन मुझे सोने का नेकलेस और चाँदी की झांझर दे गए है । ऐसा कहकर उस बहन ने जो मध्यम वर्गीय परिवार से थी सोने के नेकलेस का बॉक्स और चाँदी के झांझर का प्लास्टीक का डब्बा बाहर निकालकर मुझे बताया ।'

'पर इसमें मैं क्या करूं ? और कौन बहन दे कर गये ? किसलिए दे गए ?

मेरा वर्षीतप है इसलिए मेरा बहुमान करने के लिए दे गए हैं ।

उन बहन को आप जानते हो ?'

'सरोज बहन नाहर' एक कागज पर लिखकर उन्होंने उनका नाम बताया ।

60 वर्ष के आसपास की उम्र वाले ये बहन अत्यंत धार्मिक रूचिवाले और स्वाध्याय में रूचि रखने वाले है यह मुझे पहले से पता था ।

तो इसमें मैं क्या करूं ?

मैनें उन बहन को काफी ना बोला । उन्हें बताया की मेरे पास पुराना हार है ही । आप इसे किसी और को दे दे, जिन्हें जरूरत है उन्हें दे दे, मेरे तो पत्ति और बेटा दोनों कमाते है तो मैं क्या करूं नेकलेस रखकर ? पर वो तो जबरदस्ती रखकर चले गए ।

आप उन्हें बुलाकर समझाओं की मुझे ये नहीं चाहिए आप वापस ले लो ।

'कितने तोले का हैं ?'

'दो तोले का....(नेकलेस और झांझर दोनों मिलकर लगभग एक लाख रू. होते थे ।) ' 'सामने से मिल रहा था, तो भी.... ?'

'म.सा. ! अभी ये सब पहन के मुझे क्या करना है ? अभी मुझे सोना नहीं शोभता ।'

मैंने उन्हें भरोसा दिलाया की मैं उन बहेन को समझाऊँगा, और उन बहन ने विदा ली ।

(पुरानी वस्तु शोभती नहीं, पर सोना कभी पुराना नहीं होता, ऐसा लोग मानते है, परंतु इन बहेन ने तो गोल्ड को ही ओल्ड मान लिया ।)

मैं सही अर्थ में माँ नहीं बन पाई

'म.सा. ! ये एक छोटी सी रकम है जो मुझे दीक्षा के लिए खर्च के लिए देनी हैं।' एक काले कलर की प्लास्टिक की कवर हाथ में पकड़े हुए बहन बोले।

'म.सा. ! पुरे चातुर्मास में आपके मुँह से बहुत बार दीक्षार्थी परिवार के बारे में सुना, तभी मुझे बहुत दु:ख होता था, हर बार घर पर आकर बहुत रोती थी और मेरे पति को कहती थी की 'क्या हम कुछ भी नहीं कर सकते ?'

मेरे पति भी बहुत ही अच्छे स्वभाव के है वे मुझसे हमेशा कहते है की मेरी शक्ति के अनुसर तेरी इच्छा से जितना लाभ लेना हो उतना ले लिया कर।

पहले हमारी स्थिति ठीक नहीं थी मेरे पति नौकरी करते थे, अभी भी घर के हालात ठीक नहीं है पर पहले से काफी बेहतर हैं।'

कितनी बार विचार किया की 'आपके पास आकर सारी बात करूं, छोटा भी लाभ लुँ.... पर शर्म आ रही थी इतना छोटा लाभ लेने में....'

'कितनी रकम हैं ?'

'5000 रू.'

'5000 रू. ये तो बहुत बड़ी रकम है, ये कोई छोटी रकम थोड़ी ही कही जाती है, कितने वर्ष की इकट्ठी की हुई हैं ?'

5 वर्ष से इकट्ठे किए हुए ये मेरे पास कुछ पैसे पड़े हुए है इसमें से जब-जब इच्छा होती है तब अच्छे कामों में इन में से कुछ रकम खर्च करती हुँ।

'शाबाश ! 5 वर्ष की मेहनत तो सब खर्च हो गई ना ?'

'इसमें क्या ? ये तो बीज की बुआई ही हुई ना।'

'साहबजी ! महत्त्व की बात तो ये है की मेरी बेटी अभी 12 वी में है, उसमें कोई बुरे संस्कार नहीं है, काफी अच्छी है, पर मेरी इच्छा तो ये है की वो एक साध्वी बने, दीक्षा ग्रहण करे, मैं उसका भव बिगाड़ना नहीं चाहती, आपकी शिविर में मैं उसे लेकर आने वाली हुँ, आप शिविर में ऐसा जोरदार समझाना की उसे दीक्षा के भाव हो जाए, पर अगर दीक्षा के भाव ना भी हो तो उत्तम श्राविका तो बने ही।'

एक माँ की भावना, शब्द ह्रदय स्पर्शी और आखों को छलका दे, ऐसे थे।

'म.सा. ! दूसरी बात, आप सबको प्रवचन सुनने की प्रेरणा खास करते ही रहो, क्योंकि मेरे जीवन मैं भी जो परिवर्तन आए है वे केवल प्रवचन के कारण ही आए हैं।'

जो बात हर एक जैनीओं को समझने की जरूरत है, जो बात मेरे मन में तो सदा के लिए स्थिर हो चुकी है, जो बात गृहस्थों के मुँह से तो एक बार भी सुनने को नहीं मिली, वो बात मेरी जिंदगी में पहली बार आँसुओं की धारा के साथ एक श्राविका अपने मुँह से बोल रहे थे, मुझे आज बहुत ज्यादा आनंद हुआ।

'म.सा. ! मैंने जो बचपन से ही उसे संस्कार दिए होते ना तो वो जरूर दीक्षा ही लेती, पर मेरी ही यह एक गंभीर भूल हैं। मुझे इसका प्रायश्चित दिजिए।'

'आप उसे शिविर में भेजते है ना ये ही आपका प्रायश्चित हैं।'

(उस वक्त उन बहेन के भावों की जो मुझे स्पर्शना हुई उसका 5 प्रतिशत ही यहाँ में बता पाया हुँ, और जो नहीं बता पाया हुँ उसकी यहाँ क्षमा माँगता हुँ।)

जननी की जोड़ सखी नहीं जड़े रे लोल

'कैलाश भाई ! इसे आगे आपकी गोद में ले लो, रिद्धि को मुझे दे दो। उषा बहेन ने आगे बैठे हुए कैलाश भाई से कहा। रिद्धि मम्मी के पास बैठने की जिद कर रही थी।

सेन्ट्रों कार रूकी, दो बच्चो की अदला-बदली हुई और पवन भाई बेंगानी ने फिर से कार ड्राईव करी।'

ई. स. 2007 का वो साल ! जब चैन्नई में सुनामी का तुफान आया था। तब बेंगानी परिवार और कैलाश भाई का परिवार.... दोनों परिवार के कुछ सदस्यों को छोड़कर दोनों परिवार के कुल 11 सदस्य उस सेन्ट्रों कार में बैठकर सुनामी पीड़ीतों को सहायता करने गए थे, वहाँ से वापस चैन्नई की तरफ आ रहे थे।

पाँचेक साल की छोटी सी रिद्धि के भाग्य में जो लिखा था उसी प्रकार कुदरती तौर पर सारी प्रक्रिया चल रही थी।

सामने से ट्रक आ रही थी। हाई-वे बहुत बड़ा था ट्राफिक भी नहीं था। पर ट्रकवाले के हाथ से मोबाईल ट्रक में ही नीचे गिर गया और ड्राइवर उसे लेने के लिए नीचे झुका और ट्रक पर से अपना कन्ट्रोल खो बैठा और ट्रक सेन्ट्रों के ऊपर चढ़ गया।

पवन भाइ ने पूरी तरह कार को अंदर की ओर दबा दिया था पर नियति की विचित्रता ! मात्र दो मिनिट पहले ही रिद्धि आगे की सीट छोड़कर मम्मी की गोद में आ बैठी थी। और मम्मी का हाथ खिड़की से बाहर था। और उनके हाथ के ऊपर ही रिद्धि का हाथ था। उसी हाथ को जोरदार टक्कर मारकर ट्रक आगे चला गया7

11 में से 9 सदस्यों को तो खरोच भी नहीं आई। परंतु उषा बहेन का हाथ तो बुरी

तरह घायल हुआ था। खुन की धार बहने लगी। और पाँच वर्ष की रिद्धि का हाथ भी बुरी तरह घायल हुआ।

पवन भाई के छोटे भाई संजय भाई तो वहीं बैठकर रोने लगे, बहुत ही कोमल हृदय के है वे पर अभी क्या करना ? इसका होश ही ना रहा उन्हें।

पवन भाई ने हिम्मत रखी। एक स्कुटर वाले को रोका। और रिद्धि को उठा के उसके पिछे बैठे। इस वक्त उनकी पत्नी उषा बहेन की जिम्मेदारी किसी और को सोंपकर वे निकल पड़े।

लहुलुहान हाथ के साथ भी उषा बहेन ने हिम्मत नहीं हारी, ऐसी हालत में ही रिक्षा रोका, उसमें दादीके साथ बैठकर हॉस्पीटल पहुँचे, वहाँ तक तो होश संभाले रहे पर हॉस्पीटल पहुँचने के बाद बेहोश हो गए।

सेन्ट्रो में कुल 5 बच्चे होने के कारण उन्हें संभालने के लिए कुछ लोगों को वहीं रूकना पड़ा।

उषा बहन के हाथ को बचाने के लिए एक के बाद एक सात आपरेशन किये गए। पर सातवाँ अंतिम आपरेशन करने से पहले जहर फैलने लगा अब जहर और ज्यादा ना फैले और ज्यादा नुकसान न हो इस कारण कोहनी तक का उनका हाथ डाक्टरों को काटना पड़ा और उषा बहन को पुरी जिंदगी के लिए अपना एक हाथ गंवाना पड़ा।

रिद्धि तीन दिन तक बेहोश रहकर मौत के मुहँ में से वापिस आई थी पर पुरी जिंदगी के लिए उसके एक हाथ में थोड़ी कुरूपता रह गई।

ये हुई एक दुर्घटना की बात !

उषा बहन के कुल तीन बेटीयाँ है। उस वक्त उनकी उम्र 13-7-5 थी.... अलबत्ता, संयुक्त परिवार और खानदानी परिवार होने के कारण सबका सहयोग तो मिलता ही रहता था, फिर भी माँ के सिर पर तो तीनो बेटियों की जिम्मेदारी तो थी ही ना !

उषा बहेन को शादी के पहले उपधान के कारण दीक्षा के भाव हुए थे, परंतु परिवार के एवं खुद की भी दृढ़ता कम होने के कारण और उसी वक्त पवनभाई बेंगानी का रिश्ता आने के कारण उन्होंने विचार किया की। ये परिवार बहुत धार्मिक है, जो अब हाँ नहीं बोलु तो और दीक्षा भी ना ले पाऊँ तो तो दोनों तरफ से हाथ धोना पड़ेगा। यहाँ पर मुझे पुरी जिंदगी धर्म करने को तो मिलेगा ना !

और उन्होंने शादी की। पर उनके मन में एक विचार हमेशा के लिए था कि मैं भले ही संसार के कीचड़ में गिर रही हुँ पर मेरे परिवार को कीचड़ में गिरने नहीं दुंगी।

तीनों बेटीयों को दीक्षा के लिए ही प्रेरणा की, और तीनों बेटियों को पढ़ने के लिए परमपद संस्था में भी भेजा, वहाँ पंडितजी द्धारा उनका बहुत सुंदर पढ़ाई व गठन भी हुआ। अभी वे चैन्नई में हैं।

बड़े नेहा बहन (23), दूसरे निधि बहन (18), इतनी छोटी उम्र और ग्रहस्थ अवस्था में जो अभ्यास चल रहा है वो आनंददायक हैं।

दोनों बहेनों का अभ्यास क्रम

1. संस्कृत की दो बुक 2. काव्य पद्धति से कुल 500 श्लोंको का अभ्यास 3. पाटण में व्याकरण के कुछ भाग।(चैन्नई आने के बाद)4. न्याय भूमिका 5. तर्क संग्रह 6. उपदेश रत्नाकार 7. धर्म बिंदु 8. पंचाशक 9. प्रवचन सारोद्धार

बड़े ही मुश्किल और बड़े-बड़े ग्रन्थों का बहुत ही सुंदर अभ्यास वे कर रही हैं। इसके उपरांत जीव-विचार, संस्कृत आदि पढ़ाने का काम भी वे कर रहीं हैं।

रोज का कम से कम 8से 10 घंटे का स्वाध्याय....

उन बहन के कुछ शब्द :- मम्मी हमारे लिए बहुत ही चिंता करती हैं। हम एक मिनिट भी बिगाड़ते है तो मम्मी से बिल्कुल भी सहन नहीं होता, घर पर तो पानी का गिलास भी उठाने या रखने नहीं देती। बस एक ही बात, मैं पढ़ नहीं सकी, अभी पढ़ाई कर नहीं सकती पर अभी तुम तो पढ़ सकती हो ना।

हम तो थोड़ी देर के लिए भी टी.वी. देखते है तो उन्हें अत्यंत वेदना होने लगती हैं। हम उनके चेहरे से ही समझ जाते है की वे अंदर से कितनी दु:खी हैं।

पर दुसरी तरफ से खुद भी समझती है की 'मेरे बच्चों को जोर-जबरदस्ती से मुझे धर्म कराने का नहीं हैं। उन्हें टी.वी. देखने का शौक है तो भले ही वे थोड़ी देर देखे ना। क्या हर्ज हैं।'

इसलिए अंतराय आदि के वक्त हमको सामने से टी.वी. देखने को कहती है, हमें खाने-पीने का भी बहुत शोक है तो उसे पुरा करने के लिए भी रोज नयी-नयी वस्तुएं भी घर पर बना कर खिलाती हैं।

घर पर चाची भी है पर मम्मी का स्वभाव ही ऐसा है कि किसी पर पराधीन नहीं रहती। इसलिए एक हाथ होने के बावजुद रोटी खुद ही बँटती है, उतारती है.... वगैरह-वगैरह सब काम कर लेती हैं। कोई भी काम करने के लिए कोई ना कोई रास्ता निकाल ही लेती हैं। सिर्फ एक ही हाथ से काम करना है फिर भी उन्होंने हमें कभी ऐसा एहसास होने नहीं दिया की उनका दूसरा हाथ नहीं हैं। हमने अनेकों कामों में ये देखा है अनुभव

किया हैं। आज हम जो कुछ भी है और भविष्य में जो कुछ भी बनेंगे उस का एक मात्र श्रेय किसी को जाता है वो है मेरी मम्मी। हमारा पुरा परिवार बहुत ही पोजिटीव हैं। पर मम्मी का उपकार तो हम कभी नहीं भूलेंगे।

(गुजराती में कहावत है 'जननी जोड़ सखी.... ' इसमें तो हर माँ के लिए यह बात कहीं गई है पर जैनशासन में तो ऐसी माँओ के लिए ही कही गई हैं।)

हा! पछतावा विपुल झरणा

'म.सा. ! एक मिनिट.... ' बोल के निधि बहेन खड़े हुए और धुप में रखा हुआ पानी का बर्तन उठा के छाया वाली जगह पर रख दिया, उनका यह विनय-विवेक देख कर मुझे बहुत ही आनंद हुआ।

नेहा बेन और निधि बहन.... बेंगानी परिवार के दो मुमुक्षु बहन मेरे पास धर्म बिंदु ग्रंथ पढ़ने आते थे। स्वाध्याय की रूचि जबरदस्त कोटि की है। प्रवचन सारोद्धार, पंचाशक, विशेषावश्यक भाष्य, उपदेश रत्नाकार.... ऐसे बड़े-बड़े पांच ग्रंथों के अभ्यास वे कर रहे थे। पाठ का समय साढ़े दस से साढ़े ग्यारह बजे का था।

मुनि हेमगुण वि. रोज मेरे लिए पानी रख जाते थे। घड़े का पानी मुझे सुट नहीं होने से और विशेष गरमी भी नहीं होने से कांसे से बने थरमस जैसे एक बर्तन में पानी रखा था पर सुरज तो घुमता ही रहता है ना ? इसीलिए कुछ देर बाद उस जगह पर जहाँ बर्तन रखा था वहाँ धूप आने लगी, इससे वह पानी गरम हो जाएगा वह स्वभाविक ही था। इस बात का ख्याल मुनि हेमगुण वि. को न आए ये भी सही ही था।

पर चालु पाठ में भी निधि बहन का उपयोग तुरंत ही वहाँ गया और उन्होंने पाँच ही सैकेंड में पानी को धुप से छाया में रख दिया और फिर से पाठ शुरू करने बैठ गए।

मैंने तब भी उनकी अनुमोदना करी और दुसरे दिन भी उनकी अनुमोदना जाहेर में की।

दिन बीतते गए और चातुर्मास पुर्ण हुआ। 18जनवरी को पालीताना में जिनकी दीक्षा नक्की हुई थी। ऐस चैन्नई के मुमुक्षु तरूणा बहेन का कार्यक्रम रखा गया था। उसमें एक दिन मेरी निश्रा में श्रमणधर्म पूजन रखा गया था। क्षमा वगैरह दस धर्मो पर एक-एक गाथा लेकर उसके ऊपर विवेचन किया गया था। लगभग दो घंटे तक ये प्रोग्राम चला। उसमें सरलता गुण पर मैंने बराबर भाग दिया था कि 'मन में दोषों को छुपा कर न रखो, गुरू के समक्ष प्रगट कर दो.... वगैरह-वगैरह'

व्याख्यान के बाद मैं तो मेरे कमरे में बैठा हुआ था। दो बहने किसी काम से वंदन करने आए हुए थे। रविवार होने से और व्याख्यान में ही साढ़े ग्यारह बज गये थे। उस कारण से आज धर्मबिंदु का पाठ भी नहीं था। फिर भी अचानक उस वक्त निधि बहेन अंदर आए और वंदन किए बिना ही उन दो बहनों के बीच में आकर बैठ गए और सिसकिया ले लेकर रोने लगे। उन्हें रोते वक्त पास में बैठे हुए उन दो बहनों की शरम भी नहीं आई कि उन्हें कैसा लगेगा ? वे क्या सोचेंगी ? मेरी जिंदगी में मैंने ऐसा दृश्य भाग्य से ही देखा होगा। 18साल की अतिसुखी परिवार की मुमुक्षु को ऐसा क्या दुःख आया होगा ? की वो इस तरह रो रही हैं ?

क्या हुआ ? मैंने पुछा पर वो तो बोले उस हालत में ही नहीं थे। बस रोए ही जा रहे थे जैसे रोने के लिए यहाँ आए थे। मैंने फिर पुछा, क्या हुआ ? कुछ बोलोगे तो पता चलेगा। जैसे-तैसे थोड़ा रोना बंद किया और कठिनाई से बोलने लगे।

'म.सा. ! उस दिन जो पानी मैंने धूप में उठाकर छाया में रखा था ना....'

'हा ! पर उसका अभी क्या हैं ?' मुझे वो बात दो महिने बाद भी बराबर याद थी।

'वो पानी धुप में रखा हुआ था, इसका मुझे आपके आने के पहले ही मालुम था....'

जैसे-तैसे कर वो इतना ही बोल पाए और फिर से उनके सीमातीत पश्चात्ताप और आंसुओं ने उन्हें रोक लिया। उनका रोना उनसे कन्ट्रोल ही नहीं हो रहा था। इस कारण वे रूम में से भाग खड़े हुए।

दुसरी ओर दोनों बहने होशियार थे फिर भी कुछ समझ नहीं पाए उन्हें यहीं लगा 'इसमें इतना रोने जैसा क्या हैं ? पर शास्त्रों की समझ के कारण मैं उनके कहने का मलतब समझ चुका था। फिर भी उनसे पक्का करना जरूरी था और उन्हें आश्वासन देना भी जरूरी था। इसलिए उन दोनों बहनों से मैंने कहाँ 'जल्दी से उनके पीछे जाओ और कहो म.सा. उन्हें बुला रहे हैं। वो इस तरह चले जाते तो मेरी चिंता बढ़ जाती।'

वो दोनों बहने उन्हें बुलाने गए और मैं पच्च पारने के लिए हॉल में आ गया, पच्च पार ही रहा था की मैंने देखा की वो दो पोलिस(!) गुनहगार(!) को पकड़ कर ला रहे थे।

पच्च पारने के बाद मैंने उनके साथ बात की। अभी वो लगभग शांत थे पर आंसु तो अभी भी रूके नहीं थे।

'देखो, बहन!' मैंने बात शुरू की 'मैंने आपकी आधी-अधुरी बात से मुझे जो समझ आया है मैं वो तुम्हें बताता हुँ।'

उस दिन मेरे आने से पहले ही आप पाठ के लिए आ गए थे, उस समय आपने पानी को धूप में पड़ा हुआ देखा। इससे आपको विचार आया की पानी छाया में रख दुँ, फिर भी आपने नहीं रखा। फिर आपने ऐसा विचारा की विद्यागुरू आ जाए फिर उनकी नजर के सामने ऐसा विनयाचार का पालन करूं तो उनके मन में मेरे लिए बहुत अच्छी छाप पड़े कि 'ये मुमुक्षु विनयी है' बराबर! इसीलिए तुमने मेरे आने के बाद पाठ चालु होने के बाद वो पानी धुप में से छाया की ओर लिया!

इसमें तुम्हारी भूल ये है कि

– मैं अच्छी हुं, विनयी हुं ऐसा गुरू को दिखाऊँ ये तुम्हारा अहंकार भाव....

– इस कारण कुछ समय तक पानी गरम होता रहा तो होने दिया.... भले धुप सामान्य ही थी। फिर भी गुरू को सामान्य अशाता तो होगी ही ना, अपने आप को अच्छा दिखाने के चक्कर में गुरू को होनेवाली सामान्य अशाता का भी ख्याल नहीं रखा इस तरह से गुरू की भी आशातना की....

– तुमने तुम्हारे विचार अब तक गुरू से छुपाए.... ये माया....

ये तीनों दोषों से तुम दुषित हुए।

इसी का घोर पश्चात्ताप तुम्हें हो रहा है, बोलो बराबर?

एक भी अक्षर बोले बिना उन्होंने सिर्फ सिर हिलाया....

'पर बहेन! ये कोई बड़ा दोष नहीं है, अपनी जात को अच्छा दिखाने के लिए लोग कैसे भयंकर नाटक करते हैं। क्या इसका तुम्हें पता नहीं हैं?'

लोग तो बुरे ही नहीं बहुत बुरे होने पर भी अपने आप को बहुत अच्छा दिखाने की कोशिश में ही लगे रहते है.... जबकी तुम तो अच्छे ही हो, सिर्फ मुझे उस बात का पता नहीं था और तुम्हें लगा की मुझे पता लगना चाहिए इसीलिए तुमने यह एक छोटी सी भूल की, पर इसमें इस तरह से रोने का नहीं होता।

तुम्हारे ये एक-एक आंसु तुम्हारी आत्मा की उत्तमता के साक्षी हैं। मैंने प्रवचन में जो कहा था की निधि बहेन चैन्नई के रत्न हैं। ये मेरी बात आज भी मेरा मन यही कह रहा हैं। तुम भविष्य के पाँच-दस साल में जिनशासन के अति उत्तम कोटि के आराधिका-प्रभाविका बनोगी!

'जाओ, अभी रोना का बंद करो और घर पहुँचों। मैंने उन्हें विदा किया। पर उन दो बहनों ने मुझे पीछे से बात की 'म.सा.! व्याखान हॉल में आप जब दस धर्मो के उपर समझा रहे थे। तब हम भी उसी हॉल में थे और निधिबहेन बाल्कनी में बैठे हुए थे। हमारी

नजर बार-बार उनकी ओर जा रही थी। क्योंकि प्रवचन में वे लगातार रो ही रहे थे। हमें तो तभी ही लगा था की ये इतना क्यों रो रहे हैं ? पर अभी ख्याल आया की इतनी सामान्य बात पर किसी को इतना घोर पश्चाताप भी हो सकता हैं.... कमाल हैं।'

अलौकिक सद्भाव धारण करके दोनों बहनों ने विदा ली।

बातचीत के दरम्यान निधि बहन ने मुझे कहा था कि 'म.सा. ! जिस दिन मुझसे ये भूल हुई थी उसी दिन से विचार कर रही हुँ की आपसे इस भूल के बारे में बात करूं और इसमें मुझे कोई संकोच भी नहीं था। पर बात करने का मौका ही नहीं मिला, प्रमाद का दोष भी लगा ही। और इस बात को महिने बीत गए। पर मैं ये बात भूली नहीं थी। आज ये सब सुनते-सुनते पश्चात्ताप हद से बाहर होने लगा और मेरा ये पाप धूल गया।'

(जीरावला पार्श्वनाथ प्रतिष्ठा के दिन 'जीरावला भेटीए, पातीक मेटीए' सी डी लांच हुई थी। जिसमें 20 प्राचीन स्तवन है जिसे श्वेता बहन, आशा बहन, दीपीका बहन, ने गाया है और निधि बहन ने संक्षेप में इसका सुंदर विवेचन किया हैं।)

एस पी आर ओशियन हाईट्स में दीक्षा प्रंसग में विदाई समारोह के दिन उन्होंने दस मिनिट की स्पीच दी थी वो सुनकर अमेरिका न्युयोर्क से आए हुए सुश्रावक ने मेरे पास आकर विनंती की के 'म.सा. ! हमारे शहर में बड़े-बड़े वक्ता आ चुके है मैंने उन सब को सुना है और आज इन बहन को सुना। इतनी छोटी उम्र में ये बहन इतनी खुमारी और निर्भयता से बोल रहे है वो मुझे आश्चर्य में डाल रहा हैं।'

म.सा. ! मेरी इच्छा यह है की उन्हें अमेरिका-न्यूयोर्क ले जाऊं और इनके अनुरूप वहाँ बच्चों की युवाओं की और वडीलों की शिविर करवाऊं।

इसके ऊपर से ही आप समझ सकते होंगे की 'निधि बहेन का सामर्थ्य और पुण्य कितना जबरदस्त होगा ?'

यदि छः या बारह महीने वे अमेरिका जाकर प्रवचन देने लगे तो कोई आश्चर्य नहीं होगा।

भगवान उन्हें जिनशासन की प्रभावना करने की अप्रतिम शक्ति दे....

○○○○

'म.सा. ! यह है दक्षिण भारत.... किताब का दूसरा भाग पढ़ा उसमें आपसे मिलने आए आपके संसारी मित्र स्नेहल की दर्दनाक घटना पढ़ी, बहेन म.सा. को मिलने जाने का उनका प्लान उन्हें रदद् करना पड़ा, कारण की उन्हें मिलने जाने के लिए जो 4000/-

रूपये बचाए थे, वे खुद की बीमारी में खर्च हो गए....'

साहेबजी ! ये पढ़कर मुझे बहुत दुःख हुआ, मुझे इच्छा हुई की मैं कुछ भी लाभ लुं ! पचीस साल की उम्र की एक बहेन ने हृदय की वेदना के साथ मुझे ये शब्द कहे।

'म.सा. !इस कवर में 3000/- है ये उन्हें पहुंचाने हैं। नरेशभाई को दे देती हुँ।'

'वाह ! आपकी भावना की खुब-खुब अनुमोदना....'

'नहीं, नहीं ! म.सा. ! मेरी अनुमोदना मत करो आपको सच्ची बात बताऊँ ? मैं ट्यूशन क्लास लेती हुँ उससे जो इन्कम होती है उसमें से 10000/- रू. बचा कर रखे थे, उसमें से मैं तो मात्र 3000/- रू. ही दे रही हुँ। बाकी के पैसे से तो मेरे लिए कपड़े आदि खरीदने के लिए रखे हुए है, मैंने कोई होशियारी नहीं दिखाई हैं ! उन बहेन ने सरलभाव से अपनी दोष की दुनिया भी खुल्ली कर दी।'

''म.सा. ! वैसे तो ये 3000 रू. नहीं देती क्योंकि अभी ही मेरा मोबाईल खराब हो गया हैं। नया मोबाईल लाने के लिए इन पैसो का उपयोग करने वाली थी। पर आपकी पुस्तक पढ़ने के बाद मुझे लगा कि मैं तो पुराना मोबाईल 200-300 रू. में रिपेयर करवाकर चला लुँगी। नये मोबाईल के बिना मुझे कुछ भी फरक नहीं पड़ने वाला। पर मात्र चार हजार रू. के लिए बहन म. को नहीं मिल पाने वाले वो भाई के पास में जो यह रूपये पहूँचेंगे तो, तो वो भाई-बहन म. को वंदन करने तो जा पाएँगे।''

बोलते-बोलते उन बहन की आंखों की आंखों में से आंसु आ गये। ''म.सा. ! मुझे कभी-कभी दीक्षा लेने के भाव होते है पर वापस गिर जाते हैं। मेरा भविष्य तो क्या होगा ? उसका मुझे पता नहीं। ऐसा छोटा सा सुकृत किया है जिससे शायद मेरे चरित्र का अंतराय टुट जाए....''

और प्रशंसा की अपेक्षा रखे बिना उन बहन ने आंखों में आंसु के साथ विदा ली।

(उन बहन की शादि नहीं हुई थी, शायद सुखी परिवार के हो, प्रायः मध्यमवर्ग के थे। ट्यूशन क्लास शायद शौक के लिए भी करते हो फिर भी 10,000रू. की बचत की उसमें से 3000 रू. दे दिये, इस कारण से नया मोबाईल भी नहीं खरीदा। इन सबसे पता चलता है कि उनकेपास बहुत ज्यादा पैसे तो नहीं है फिर भी भावना.... तो देखो।)

एसपीआर ओशियन हाईट्स सोसायटी में हुई तीन दीक्षाएँ

साहुकार पेट का आराधना भवन का उपाश्रय पूरे दक्षिणभारत का नाक है पर उसके हॉल में 1000 लोग ही बैठ सकते है, इसलिए तीन मुमुक्षुओं की दीक्षा के लिए अलग जगह लेनी हमारे लिए जरूरी हो गया। पहले केसरवाड़ी जैन तीर्थ का निर्णय कर लिया था परंतु एस.पी.आर. की विनंती आयी, वो सोसायटी साहुकारपेट से एकदम पास में ही थी, इसलिए बहुत सारे विचार करने के बाद वहाँ तीन दीक्षा करने का निर्णय किया।

ओशियन हाईट्स सोसायटी यानी 18माले की तीन टावर की यह सोसायटी। कुल 150 फ्लेट्स! ज्यादात्तर जैन घर! ये बनाने वाले बिल्डर हितेशभाई कवाड 35 वर्ष के आसपास की उम्र का एक युवान! पर प्रभु भक्ति अजब-गजब की। उसी सोसायटी में खुद भी रहते और अपने खर्चे से ही सोसायटी में देवविमान जैसा उत्कृष्ट कोटी का जिनालय बनाया। पूरी सोसायटी की शोभा वो जिनालय था। जिनालय का सपूंर्ण खर्च वो हितेशभाई ही देते है, दूसरों के पास एक रूपया भी नहीं लेते। पर्यूषण में मात्र आठ ही दिनों में प्रभु की अंगरचना, मंदीर सजावट, शाम की प्रभुभक्ति.... इन सब के पीछे लगभग 40 लाख जितना खर्च वो पुण्यशाली हर वर्ष करते हैं।

ऐसी एक भव्य सोसायटी में श्रीपाल, भव्य और कलश (उम्र 22,14,13) की दीक्षा नक्की हुई।

उसमें जो-जो ध्यान में लेने जैसी, अनुमोदनीय और अनुकरणीय बाते है वो यहाँ बताता हुँ।

1. दीक्षा की पत्रिकाएँ संघ ने लिखी:- आजकल लगभग सबको ख्याल है कि कोई भी व्यक्ति लगभग पूरी पत्रिका नही पढ़ता प्राय: कौनसा प्रोग्राम कब हैं? वो ही सब देखते है और उसमें अपने संबंध अनुसार उस-उस प्रोग्राम में हाजरी देते हैं। पर पत्रिका छपाने वाले पत्रिका में बहुत सारे नाम छपवाते है और दुसरा भी बहुत कुछ छपवाते हैं। प्राय: जिसका नाम छपता है वो ही खुद का नाम पढ़ता हैं।

और पत्रिकाओं का खर्चा भी बहुत ज्यादा.... पचास रूपये की पत्रिका तो स्वभाविक हो ही जाती हैं। 500 पत्रिका छपाये तो 25000 का खर्च तो ऐसे ही हो जाय। महंगी पत्रिका की तो बात ही जाने दो।

और इस पत्रिका का भविष्य क्या? पुस्तक हो, तो वर्षो तक पढ़ने के काम भी

आये। पत्रिकाए तो एक ही दिन में रद्दी बन जाती हैं। लोगों को चिंता होती है कि "इन धार्मिक पत्रिकाओं का क्या करना?"

ऐसे बहुत से कारणों के कारण पत्रिका नहीं छपवाने का विचार किया पर दुसरा उपाय सोचा।

1. पत्रिका के लिए जरूरी मेटर शोर्ट में तैयार किया। समुदाय+गुरू+मुमुक्षु+माँ-बाप का नाम, कार्यक्रमों का स्थान और समय.... बस! सिर्फ इतना ही....कारण की एक ही पेपर पर पुरी पत्रिका आ जाए।

2. एक शुभ दिन में पुरे संघ को इकट्ठा किया। हर एक को एक मोटा कागज और बॉलपेन दिया गया और सबने एक साथ मिलकर उत्कृष्ट भावों के साथ पत्रिका खुद ही लिखी।

पीछे से पत्रिकाएँ कम पड़ी तो लोगों ने घर ले जाकर भी लिख कर लाया। भले सबके अक्षर अच्छे ना हो तो भी हाथों से लिखी हुई और सब पढ़ सके वैसी होने से पत्रिका सबको अच्छी लगी।

3. सोचो कि ये पत्रिका भी छपाई होती तो भी पांच रूपये तक की एक पत्रिका हो जाती।

पर लिखी हुई पत्रिका से तो संघ के लोगों के भाव बढ़े।

हा! जो एकदम ही खराब अक्षरोवाली थी ऐसी पत्रिकाएँ रद्द करनी पड़ी।

बाकी तो आज के जमाने में लोग वाटसएप वगैरह के द्धारा ही सब समाचार भेज देते है और लोगों को इस तरह सब समाचार मिल भी जाते हैं।

भोजन समारोह में सादगी-जयणाः- आजकल हर एक भोजन समारोह में 25-50 वस्तु बनाना तो सामान्य हो गया हैं। उसमें अजयणा-भोजन व्यर्थ जाना वगैरह-वगैरह बहुत नुकसान है ये सब जानते ही हैं। साधर्मिक भक्ति के भाव से ज्यादा दिखावा करना, इज्जत बताने का भाव ज्यादा हैं।

इन दीक्षाओं में निर्णय लेने में आया कि

- नवकारसी में कोई भी 6ही चीजें बनेंगी -(चाय-दूध भी उसमें आ गये।)
- दोपहर के भोजन में कोई भी 8ही चीजें बनेगी।
- शाम के भोजन में कोई भी 4 ही चीजें बनेंगी।
- कोई भी समय एक चीज बढानी हो तो दुसरे साथ में कम बनाना। जैसे :- कभी सुबह पांच चीजे बनाकर शाम को पांच बनानी।

– सुर्योदय के बाद ही रसोई चालु करनी। दीक्षा के दिन में सुबह साढ़े आठ बजे 2000 लोगों का नास्ता था पर रसोई तो सुर्योदय के बाद ही चालु की।

किसी शाम की रसोई में थोड़ी तकलीफ हुई, पर 99 प्रतिशत लोगों ने एक ही बात कही कि "चीजे कम होने से हम शांति से पेट भरकर खा सके, और इस जमाने में अब ऐसी सादगी की – जयणा की सचमुच में जरूरत हैं।"

लगभग कभी भी रसोई व्यर्थ नहीं हुई जिस दिन बढ़ी तब गरीबों को दे दी। वैसे भी कम चीजे होने से ज्यादा बिगड़ने का प्रश्न ही नहीं था।

हा! सबको बिठाकर खाना खिलाने की इच्छा होते हुए भी उसमें सफलता नहीं मिली।

– एक दाना भी झुठा नहीं डालने देते। थाली रखने की जगह पर कार्यकर्ता खड़े रहकर प्रेम से समझाकर सब खिलाते। थाली साफ करने वाले को हर बार अलग–अलग स्पेशल प्रभावना दी गई।

– इन लोगों को ये नयी पद्धती अच्छी लगी, बाकी लोगों की प्रशंसा या निंदा के आधार पर चलना नहीं था। जयणा वगैरह का पालन आवश्यक था ही। उसमें लोगों को अच्छा लगे या ना लगे ये देखने का कोई मतलब नहीं था।

– पुरस्कारी करने वाले हर बार अपने ही श्रावक–श्राविकाए! कोई भी वेटर या भाड़े के लोग नहीं थे।

3. **गांव सांझी में प्रभावना मात्र पांच रूपये :**– सबको स्वभाविक ही प्रश्न होता है कि प्रभावना तो अच्छी से अच्छी देनी ही चाहिए ना.... और एस.पी.आर. सोसायटी की छाप ऐसी है कि यदि वहाँ गाँव सांझी हो तो लोग ऐसा समझ ही लेते है कि "कम से कम 100 रू. की प्रभावना तो होगी ही।"

पहले एकबार बहुत ही भीड़भाड़ हुई.... उन सबका खराब वर्णन यहा करना उचित नहीं लगने से इतना ही कहुँगा कि शासन हिलना आदि रोकने के लिए दीक्षा के बैनरों में ही जाहेरात कर दी थी कि सांझी में मात्र पांच ही रूपये की प्रभावना है ताकि लोग प्रभावना के लालच में नहीं रहे। आने वाले सच्चे भाव से ही आये।

बैनर पर जाहेरात पढ़ने के बाद दीक्षा की सच्ची अनुमोदना करने की इच्छा वाली 500 से 700 बहने गांव सांझी में हाजिर रही।

4. **चढावों में जोरदार फेरफार:**– सामान्य से मुमुक्षु के हर एक उपकरण का चढ़ावा बोला जाता है, यदि एक ही मुमुक्षु हो तो कोई बात नहीं परंतु यहाँ तीन मुमुक्षु थे, इसलिए

दो बातो की संभावना थी।

- सोचों कि तीनों की कामली का एक ही चढ़ावा बोले, तीनों अलग-अलग नहीं बुलवाए तो जिस मुमुक्षु के परिवार वाले ज्यादा पैसे वाले होंगे वो ही यह चढ़ावा लेंगे, बाकी के परिवार वाले नहीं ले पाएगे। उस कारण से दो चीजे होगी उस परिवार को चढ़ावा नहीं ले पाने का बहुत दुख भी होगा, और उनको ऐसा लगेगा कि ''हमारे पास ज्यादा शक्ति नहीं, ऐसा लोग मानेगे, हमारा नीचा दिखेगा इज्जत घटेगी।''

अरे, इससे तो दीक्षा के आनंद के बदले, दीक्षा नक्की हो उस दिन से ही दीक्षा की चिंता में ही वो दिन गुजारेंगे।

-सोचों कि तीनों की कामली का चढ़ावा अलग-अलग बोले यानी कि तीन चढ़ावे बोले तो श्रीपाल की कामली, भव्य की कामली, कलश की कामली.... इस तरह चढावा बोला जाएगा। (उसमें भी जिसके जिसका चढ़ावा सबसे ज्यादा जाएगा वो परिवार वाले सुखी, जिसका कम में जाए वो परिवार वाले कमजोर। ये सब सीधे या पीछे से दुसरे सबके मन में तो आएगा ही पर उसके साथ-साथ मुमुक्षु के मन में भी आने की संभावना होगी।)

इसलिए ऐसा निर्णय किया गया कि

- तीनों कामली के अलग-अलग तीन चढ़ावे बोले जाएंगे।

-पर श्रीपाल की कामली, भव्य की कामली.... इस तरह नहीं बोला जाएगा सिर्फ पहली कामली, दूसरी कामली, तीसरी कामली.... ऐसे ही बोलना।

- उसमें भी स्पष्ट घोषणा करनी कि ''पहली कामली यानी बड़े मुमुक्षु की....ऐसा नहीं। कोई भी कामली किसी को भी दी जाएगी। यानि की पहली कामली का चढ़ावा सोचों कि श्रीपाल के परिवार वाले ले, तो भी वो कामली कलश को दे दे, ऐसा भी हो सकता हैं।''

- इसलिए परिवार वाले भी ''मेरे सगे वालों की कामली का चढ़ावा लुँ।'' ऐसा स्नेहवाद नहीं रख सकते। उनको तो कोई भी मुमुक्षु का लाभ मिलेगा। वो मुमुक्षु उनका सगा नहीं हो वो भी संभव है।

जनरल लोग तो जानते ही नहीं होंगे कि कौन किसका सगा है, इसलिए नाम बिना के चढ़ावे बोलने के कारण ''इस मुमुक्षु का चढ़ावा ज्यादा गया, इनका कम'' उसका विभाग कोई भी नहीं कर सकेगा।

इस तरह चढ़ावे की नयी दुनिया ही खड़ी करने में आयी।

5. यदि दीक्षा के पहले दिन जो विदाई समारोह रखे, तो मुमुक्षु एक बजे तक तो सो भी

नहीं सकते। दुसरे दिन सुबह जल्दी उठने का होने से आराम बराबर नहीं होता, इसलिए दीक्षा की मुख्य विधि में ही उनका उल्लास कम रहता हैं। नींद के झोंके आते है ऐसा होता हैं।

इसलिए तीन तारीख की दीक्षा थी तो दूसरी के बदले पहली तारीख की रात को ही विदाई समारोह रखा गया।

दूसरी तारीख को 9:30 बजे मुमुक्षुओं को सुला दिया गया, ताकि वो बहुत ही अच्छी तरह दीक्षा की विधि कर सके।

6. दीक्षा के स्टेज पर बहुत सारे लोग किसी ना किसी बहाने से बीच में घुमते रहते हैं।

– मुमुक्षुओं के खास मित्रों में से एकाद मित्र मुमुक्षु का ध्यान रखने के लिए स्टेज पर नजदीक में बैठते हैं। पसीना पोछते है, चावल साफ करते है.... वगैरह (जैसे शादी में दुल्हे के साथ मित्र होता है.... वैसे)

– मुमुक्षुओं के माँ-बाप, भाई-बहन .... और फिर तो दुसरे बहुत सारे स्टेज पर बैठ जाते हैं।

– साधुओं के नजदीक में गिने जाते भक्त-श्रावक भी कहीं ना कहीं घुस कर बैठ जाते हैं। साधु भी उनको मना नहीं कर सकते।

– क्रिया के वक्त प्रभु के उपर वस्त्र ढ़कने, लेने के बहाने से भी एकाद पूजा के कपड़े वाला श्रावक उपर होता हैं।

– गीत गाने वाले संगीतकार, जाहेरात करने वाले वक्ता, वाजिंत्र बजाने वाले आदि पांच-सात लोगों की टीम स्टेज पर तैयार ही होती हैं।

– साधुओं को मिलने के बहाने, वंदन के बहाने, कोई छोटे-मोटे काम के बहाने से कोई ना कोई श्रावक स्टैज उपर चढ़ जाते है जैसे की गंभीर काम हो.... ऐसा देखने में लगता हैं।

– जब रजोहण दिया जाता है तब "मुमुक्षु नाचते-नाचते गिर न जाय" इसलिए उनको पकड़ने के बहाने ऐसे ही दो-चार लोग उपर चढ़कर जैसे कि मुमुक्षु को गिरने से बचाने के लिए उसके साथ-साथ रहते हैं।

– कभी-कभी तो ऐसा कोई साधु को भी हो जाता हैं। स्टैज उपर बहुत सारों के सामने "वो भी कुछ करते है, समझते है" ऐसा दिखाने के भाव उसकी प्रवृत्ति भी दिखाते हैं। यानि कि मुमुक्षु के पास में रहना और उनकी कुछ ना कुछ सहायता करनी (जिसकी सचमुच जरूरत नहीं होती....)

ऐसे तो कितने ही प्रसंग दीक्षा के स्टेज उपर देखने को मिलते हैं।

इसका सबसे बड़ा नुकसान ये होता हैं। कि सामने बैठे हुए हजारों लोगो को मुमुक्षुओं के शांति से दर्शन भी करने को नहीं मिलते। दीक्षा की विधि बराबर देखने को नहीं मिलती। बीच-बीच में कोई भाग्यशाली विघ्नभूत बनते ही रहते हैं। दीक्षा देखने वाले उनका विरोध भी नहीं करते, वो ऐसा ही समझते है कि "कुछ जरूरी काम होगा, इसलिए ही म.सा. ने हाँ की होगी ना!...."

इस कारण से वो सच्ची दीक्षा नहीं मान सकते

ओधा लेकर जब मुमुक्षु को लेकर जाते है, तब भी मुमुक्षु लगभग घिरे हुए ही होते है, जिससे उनके अकेले के स्पष्ट दर्शन लोगों को देखने को नहीं मिलते।

ये तो हीरो बिना का पिक्चर....

लोगों को दीक्षा कार्यक्रम में सबसे ज्यादा रूची इस मुमुक्षु को देखने में होती है, साधु या भगवान को देखने में भी कम....

और हा! एक मुख्य बात तो भूल ही गया। फोटो खिंचने वाले, विडियो वाले तो बीच-बीच में घुमते ही रहते हैं। उसमें भी ओघा देने की मुख्य क्रिया के वक्त सबको देखने का बहुत उल्लास होता है पर ये फोटो वाले, विडियो वाले भविष्य काल के लिए सबका वर्तमान काल बिगाड़ते हैं। (भविष्य में भी विडियो कितने देखेंगे? और उसे देखते वक्त कितनों को मजा आएगा? ये तो भगवान जाने....)

इन सब अनुभवो के बाद एक दृढ़ विचार कर लिया।

"दीक्षा की विधि के समय पुरा स्टेज खाली होना चाहिए। केवल साधु और मुमुक्षु....

माँ-बाप भी नहीं, वक्ता-संगीतकार भी नहीं.... कोई भी नहीं।"

सबकी व्यवस्था स्टैज के नीचे ही कर दी गई।

कितने ही लोगों को ऐसा लगा कि "हम तो म.सा. के पहचान वाले है हमको मना नहीं करेंगे" इसलिए किसी ना किसी बहाने से वो उपर चढ़ गये पर उन्होंने देखा कि म.सा. ने तो सगेभाई वगैरह सबको नीचे उतारा, किसी की शरम नहीं रखी, कोई पैर स्टैज के नीचे रखकर स्टेज पर पीछे की तरफ बैठे तो उनको भी म.सा. ने नीचे उतारा.... इसलिए अपने आप समझ कर वो भी नीचे उतर गये।

हा! ये प्रथम बार होने से छः व्यक्तियों को स्टेज पर बिठाना पड़ा - दो संगीतकार, एक तबला वाला, दो अेंकर, हितेश भाई कवाड़.... पर इन छः को स्टेज पर ऐसी जगह

एक तरफ बिठाया कि सामने बैठे हुए लोगों को मुश्किल से ही दिखे। दोनों वक्ताओं को कह दिया था कि "मेरी सुचना के बिना खड़ा नहीं होना...."

और पुरी दीक्षा विधि लोगों ने बहुत ही शांति से देखी। ओघा दिया गया, मुमुक्षु नाचे....तब भी एक भी व्यक्ति स्टैज पर नहीं। केमरामेन, विडियोमेन भी नहीं। सभा में बैठे-बैठे जिसने खिंचे....वो ठिक। पर एक भी व्यक्ति को बीच में नहीं आना।

मुमुक्षुओं को स्नान के लिए ले जाने के बाद उपकरण वहोराने वाले स्टैज पर आए, पर उसकी अब चिंता नहीं थी7

सब चढ़ावो के आदेश दीक्षा के पहले दिन रात को ही दे दिये गये थे। इसलिए चढ़ावे बोलना बाकी नहीं था। मात्र बीस-पच्चीस मिनिट में सब उपकरण वहोरा दिये गये। उसके बाद समय बचा तो लगभग बीस मिनिट के लिए दीक्षा पर प्रवचन भी दिया गया। लोगों को पता चला कि नाम दीक्षा, स्थापना दीक्षा, द्रव्य दीक्षा, भाव दीक्षा क्या हैं ?

लगभग स्नान के समय में चढ़ावे होते हैं। चढ़ावा लेने की भावना वाले बैठते है दुसरे सब खड़े होकर चले जाते है पर यहा तो प्रवचन होने के कारण सबने बहुत ही शांति से पूरा प्रवचन सुना, खड़े होकर चले नहीं गये।

मुमुक्षु जब वेष परिवर्तन करके वापस आये, तब भी बीच के पाटिये पर उनके साथ एक भी गृहस्थ को नहीं आने दिया, सिर्फ और सिर्फ नूतन दिक्षीत ही चले....

इन सबके लिए मुझे सख्ताई बरतनी पड़ी पर मुझे पक्का विश्वास है कि पांच-दस लोगों के सामने हजारों को सच्ची दीक्षा जानने-देखने का लाभ मिले, ये जरूरी हैं।

यहाँ इतना विस्तार से लिखने का कारण भी ये ही है कि संयमी जो संकल्प करे तो इन सब दुषणों को दुर कर सकते हैं।

भविष्य में वापस कोई दीक्षा होगी तो इससे ज्यादा अच्छी तरह से ध्यान रखने की इच्छा है क्योंकि अब अनुभव भी हो गया हैं।

7. तीनो नुतन दीक्षित का नया नाम उनके भूआओं ने ही रखे ये चढ़ावा उनको ही दिया गया परंतु जो जिनकी भूआ थे उन्होंने उनका नाम नहीं रखा। कलश की भूआ ने भव्य का , भव्य की भूआ ने श्रीपाल का, और श्रीपाल की भूआ ने कलश का नया नाम रखा। इस तरह "मैंने मेरे भतीज का नाम रखा" ये स्नेहराग थोड़ा कम हुआ "मैं एक मुमुक्षु का नाम रख रहीं हूँ" ऐसे भाव की वृद्धि हुई।

8. तीनों मुमुक्षु के परिवार वाले नीतीनभाई, शांतिभाई और सांमतभाई.... इन तीनों के घरों में ही पांच दिन के लिए रूके थे। इस तरह इन तीन स्थानिक परिवारों को तो लाभ

मिल गया। दूसरे भी परिवार को लाभ मिले, इस लिए घोषणा की गई कि "एस पी आर में रहने वाले जैनो में से जिस किसी को भी भावना हो कि मेरे घर में मुमुक्षु का अंतिम स्नान हो.... वो अपना नाम लिखा दे। इन सब नामों की चिट्ठी बनाकर तीन चिट्ठी निकाली जाएगी, और उन तीनों के घर में एक-एक मुमुक्षु को स्नान के लिए भेजा जाएगा।

डेढ़ सो घरों में से तीस नाम आए, उसमें से छट्ठे, नवमें और सौलहवे फ्लोर के परिवार को अंतिमस्नान का लाभ मिला।"

ओघा लेने के बाद मुमुक्षु अंतिम स्नान करने के लिए उन घरों में गये.... उसमें से एक परिवार वाले ने हर्ष के आंसुओं के साथ कहा "मुझे एक भी लड़का नहीं है, मैंने भगवान के पास बहुत बार लड़के की प्रार्थना की और भगवान ने मेरे उपर कैसा उपकार किया कि मैंने तो सबसे अंत में मेरा नाम दिया था, फिर भी मुझे लाभ मिल गया। भगवान ने मुझे रातोरात एक लड़का दे दिया और सुबह ही उसका दीक्षा भी करा दी...."

9. दीक्षार्थिओं के लिए सब उपकरण स्टेज पर चढ़ावा वालो से वहोर लिये और उसके बाद वहाँ ही उसकी तीन छाब तैयार कर दी गई। और छाब स्नानवाले तीन घरों में सिर पर उठाकर लेकर जाने का लाभ भी एस पी आर के तीन परिवारो को चिट्ठी द्धारा दिया गया। वैसे तो एक के बाद एक चढ़ावे बोलते जाते है और वो उपकरण नूतन हेतु भेजते जाते है ऐसा होता है, पर यहाँ तो एक भी चढ़ावा बोलना था ही नहीं, इसलिए सब उपकरण वहोरने के बाद पुरी छाब तैयार करके भेजने का काम एकदम सरल ही था।

इस तरह तीन नये परिवारों को छाब उठाने का लाभ मिला।

ये स्नान, और छाब के चढ़ावे बोले नहीं जाते पर। संघ चाहे तो ये चढ़ावे भी बोल सकते है और इसके द्धारा साधारण द्रव्य में भी अच्छी बढ़ोतरी हो सकती हैं।

10.सिर्फ जैन बैंडः- सिर्फ दो ही महिनों में एसपीआर के बालकों ने नया बेंड तैयार कर लिया और शोभायात्रा में बजाया। उसी तरह कुरूक्कपेट के जैन संघ के युवाओं ने एक ही महिने में मेहनत करके एक जोरदार बैंड तैयार कर लिया।

मूनि भुवनभूषण म. की प्रेरणा से 40 युवानों का शंख बैंड तैयार हुआ। शंख बजाने वोल युवाओं ने पुरी शोभायात्रा में विशिष्ट वेषभूषा और शंख वादन के द्धारा लोगों को आनंदित कर दिया।

लोकेशभाई वगैरह की टीम ने शोभायात्रा में भक्तिगीत गाए।

विराट शोभायात्रा में जैनेतर बैंड यानि कि मांसाहारी आदि बैंड नहीं बुलाए गये।

कुछ दिनों पहले ही चैन्नई के प्रसिद्ध मेजर बैंड के मुस्लिम युवा ने जैन लड़की के साथ में शादी की। उसके बाद जैनों में सच्ची समझ आयी, देखते है कब तक ये समझ टिकेगी ? ये बड़ा प्रश्न हैं। पर हमने तो पहले से ही बैंड का विरोध किया था और दीक्षा में उसका पालन भी किया।

11.चढ़ावे के उपज की व्यवस्थाः- चढ़ावे में जो ज्ञानखाता की, वैयावच्च की, साधारण की उपज हुई उसकी संपूर्ण सत्ता-जिम्मेदारी ओशियन हाईट्स सोसायटी को सौंपी गई। "हम कहे, वहा उनको रकम खर्च करना" ये बात ही मोड़ दी परंतु उन्होंने इतनी तैयारी बताई कि "वो जल्दी से जल्दी ये पुरी रकम खर्च कर देंगे...."

वो मार्गदर्शन मांगेगे तो दूंगा पर उसका इंतजाम तो वो ही करेंगे, दुसरे किसी को भी पूछना हो तो वो खुशी से पुछ सकते हैं।

पैसो की बात में माथा नहीं मारने के कारण, लालच नहीं रखने के कारण हमको परम शांति का अनुभव हुआ।

12. मुमुक्षुओं ने सोसायटी के 150 घरों में पगलिये किये सबके घरों में सुरत की घारी(मिठाई) के बोक्स देकर साधर्मिक भक्ति का लाभ लिया। ये घारी भी बराबर भक्ष्य ही बनवाकर लाई थी।

13. हितेशभाई कवाड़ ने प्रभुभक्ति के लिए अति-उत्तम कोटि के संगीतकार बुलाए। निकेशभाई संघवी, प्रशम-संप्रति, जयदीपभाई स्वाडीया, सचीन लिमये, महावीर भाई शाह, पीयुष भाई.... शास्त्रीय संगीत, सच्चा संगीत गाने वाले इन गायकों ने पुरा माहोल प्रभु भक्तिमय बना दिया। उसमें भी प्रभुजी की अंग-रचना, दीपक की रोशनी.... ये सब तो जैसे कोई अलोकिक दुनिया में ही व्यक्ति को ले जाये वैसा था।

15.सोसायटी के 90 जितने बालकों ने अलग-अलग कार्यक्रमों में भाग लिया था। किसी ने ग्रीटिंग कार्ड्स बनाये, किसी ने नृत्य किया, किसी ने स्पीच बोली, किसी ने गंहुली बनाई, किसी ने गीत गाये.... उन सब बालको को प्रोत्साहन रूप 500 रू. की प्रभावना दी गई।

15. ता. 30-1 को शाम को छः बजे, ता. 30-1 को रात को 12 बजे, ता. 31-1 को सुबह 9 बजे.... इस प्रकार तीनों मुमुक्षु मुम्बई से अलग-अलग समय में आने वाले थे। एक भी मुमुक्षु का सोसायटी में सामान्य तरीके से प्रवेश नहीं होना चाहिए ऐसा उनका दृढ़ भाव था।

"म.सा. ! तीनों मुमुक्षुओं को एयरपोर्ट से यहाँ लाने का लाभ सोसायटी ने मुझे दिया

हैं। मैं आपकी अनुमति लेने आया हुँ कि मैं मेरी कार सजा-धजा (डेकोरेट) सकता हुँ?'' गोल्ड के बड़े व्यापारी 40 के आसपास की उम्र वाले नितीन भाई ने मुझे पुछा।

''कौनसी कार हैं?'' मैंने ऐसे ही जानने के लिए पूछा।

''बी.एम.डब्ल्यु.''

''कितने की हैं?''

''75 लाख की''

''इतनी मंहगी कार चलाते हो?''

''म.सा.! ये तो शौक था, इसलिए ली। बाकी इसका उपयोग तो बहुत कम होता हैं।''

''देखो, मुमुक्षुओं को लेने जाने के लिए तुम्हारे बहुत भाव है उसके लिए तुम्हें जो योग्य लगे वो आप कर सकते हो, मेरी इजाजत लेने की जरूरत नहीं हैं।''

मैंने जवाब दिया और जैसे दुल्हेराजा की कार सजाई जाती हैं। उसी तरह से नीतीन भाई ने कार सजाई।

सोसायटी से लगभग 25 किमी दूर रहे हुए ऐयरपोर्ट पर तीनों वक्त मुमुक्षुओं को लेने जाने का लाभ भरपूर उत्साह वाले नीतीनभाई ने लिया।

छः बजे प्रथम मुमुक्षु भव्य का प्रवेश हुआ तब बालकों का बैंड, शंख, भाई-बहनें.... वगैरह सब मिलकर कुल 200 लोगों की हाजरी.... ये सब सिर्फ सोसायटी के ही लोग। आधे घंटे तक नाचते कूदते उन्होने भव्य को सामंत भाई के वहाँ उतार दिया।

मुमुक्षु श्रीपाल रात को 12 बजे आने वाले थे। मुझे और बाकी सबको ऐसा लगा कि रात को तो कोई नहीं आयेगा, परंतु श्रीपाल जिनके घर पर उतरने वाला था वो शांतिभाई तो साफा पहन कर तैयार होकर आ गये ''मेरा लड़का आ रहा हैं। वैसा आनंद मुझे हो रहा हैं।'' और जब श्रीपाल ने रात के बाहर बजे प्रवेश किया तब हमको आश्चर्य हुआ कि 150 से 175 लोग उस वक्त भी हाजिर थे। तब भी आधे घंटे तक नाचते- कुदते श्रीपाल को प्रवेश कराया।

सुबह 9:30 बजे तीनों मुमुक्षुओं का वापस तीसरी बार एक साथ में प्रवेश कराया। संख्या और उल्लास लिखने की अब जरूरत नहीं लगती।

नीतीन भाई ने दीक्षा के बाद जो भावना व्यक्त की वो सचमुच आनंदित करे ऐसी हैं। उनके घर पर कलश को उतारा था इसलिए उस कलश को (क्षमाश्रमण वि.) को

अपने लड़के कि तरह मानते हैं। दीक्षा के बाद में उन्होंने श्रमाश्रमण वि. के मम्मी-पप्पा को कहा कि "मुझे इतना उत्तम लाभ मिला हैं। उस निमित्त से में एक फ्लेट संघ को उपाश्रय तरीके दुगाँ और उस उपाश्रय का नाम रखुगा "श्रमाश्रमण।" और अब तक तो मैंने धंधा बढ़ाने का ही काम किसा है पर अब मुझे धंधा कम करना हैं। धीरे-धीरे इस धर्म के अच्छे रास्ते पर ही आगे बढ़ना हैं....

(फ्लेट उपाश्रय तरीके शायद ना भी दे सके, देरी से भी दे.... पर महत्व की बात उनके शुभ अध्यवसायों की (भावों की) हैं।)

उन भाग्यशाली को शायद नवकार ही आता होगा।

मुमुक्षु भव्य ने प्रवेश करने के बाद 6:30 बजे मेरे पास आकर सबसे प्रथम हर्षाश्रु की बारिश करके प्रथम मगंल किया। ये आंसु कोई फोटो में या विडियों में नहीं, पर मेरे हृदय में तो बराबर रह गये हैं।

रात को बारह बजे आए श्रीपाल भाई ने भी सबसे पहले ये ही भावना प्रगट की कि, "अभी गुरूजी जाग रहे होंगे ना? तो पहले मुझे उनके पास जाना है.... आशिष लेना हैं।"

और रात को बारह बजे भी गुरूजी के आशिष लेने के बाद ही श्रीपाल भाई ने अपने (!) फ्लेट में प्रवेश किया ये ही बात दुसरे दिन कलश की भी।

16. एक वर्ष पहले हमारा चातुर्मास बारडोली में था। वहाँ रामजीभाई पटेल नाम के एक अजैन भाई हमारे साथ अच्छी तरह जुड़े। साल में दो महिने अमेरिका रहते। 10 महिने बारडोली रहते। सुखी-सम्पन व्यक्ति, पर 71 वर्ष की उम्र हो जाने से अब शरीर से थक गये थे।

मुझे आश्चर्य हुआ कि दीक्षा के चार दिन पहले ही अजैन भाई दीक्षा देखने के लिए आ गये। अलग-अलग धर्मशालाओं में 600 मेहमानों को उतारना था इसलिए नजदीक के सगे-सम्बंधिओं को पास की धर्मशाला में और दुसरों को दूर की धर्मशाला में उतारा था। ये सीधी ही बात थी।

पर स्पष्ट भाषा में कहुँ तो नजदीक के सगे-संबंधि मात्र अंतिम दो या तीन दिन के लिए ही आये थे कुछ तो व्यवहार रखने के लिए आये। मैंने जब पुछा कि "धर्मशाला दो कि.मी. दूर है तो कुछ तकलीफ नहीं होती?"

"म.सा.! आने जाने के लिए कार की व्यवस्था कर दी हैं। तीनों टाईम खाने की व्यवस्था है, बाकी इतने बड़े शहर में उतरने की व्यवस्था के लिए थोड़ी तो तकलीफ होने

वाली ही है, पर मुझे तो बहुत ही मजा आ रहा हैं।'' 71 वर्ष के रामजी भाई बोले। उनके शांत स्वभाव में कहीं पर भी रत्ती भर भी शिकायत नहीं थी।

मुझे एक वर्ष पहले का प्रसंग याद आ गया। उनके बहुत आग्रह के कारण मैंने उनके घर पर एक दिन पगलिये करने जाने का निर्णय किया। मर्सीडीज में उपाश्रय मुझे लाने आये, घर नजदीक होने पर भी श्वास की समस्या होने के कारण ज्यादा नहीं चल सकते थे। पर उनके घर पर जाते वक्त तो मेरे साथ में चलते-चलते ही आये। मैंने मना किया पर फिर भी हाँफते-हाँफते भी वो अजैनभाई चल कर आये। उनके बिल्डिंग में पहुँचे, बाद में मुझे ख्याल आया कि उनका घर तीसरे फ्लोर पर था। मुझे लगा कि, ''वो लिफ्ट में उपर आयेंगे....'' पर वो तो मेरे साथ ही उपर चढ़ने लगे।

''रामजी भाई! इतने चले, उसमें भी हांफने लगे हो, तो अब तीन फ्लोर कैसे चढ़ोगे?'' मैंने पूछा।

''म.सा.! मेरे घर में भगवान पधारे और मैं लिफ्ट का उपयोग करू? भगवान चढ़े और में? ना, ना! मैं चढ़कर ही उपर आऊँगा।'' नम आंखों के साथ उन्होंने जवाब दिया। मुझे लगा कि अपने लाखों जैनों को रामजीभाई के पास में विनय सीखने की जरूरत हैं।

मैं तो फटाफट उपर पहुँच गया पर वो पांच मिनिट बाद तीसरे फ्लोर पर पहुँचे, उस वक्त वो जिस तरह हाफ रहे थे, वो देख कर मुझे लगा कि, ''उनको कहीं अटैक ना आ जाए....''

पर उनके आनंद की कोई सीमा नहीं थी। हांफते-हांफते भी ''पधारो'' कहकर आंसु के अक्षतों से उन्होंने मुझे बधाया। घर में जाने के बाद मेरी सुचना से वो जमीन पर ही बैठ गये। पांच मिनिट उनको आराम करना पड़ा। उसके बाद श्वास शांत हुआ। और तुरन्त ही उन्होंने अष्टांग दंडवत प्रणाम किया।

वो रामजी भाई पटेल एक वर्ष के बाद दीक्षा देखने-मानने के लिए चैन्नई आये। मैंने उनको आमंत्रण भेजा नहीं था। क्योंकि मैंने तो किसी को भी पत्रिका भेजी नहीं थी। पर संसारी स्वजनों ने उनको आंमत्रण भेजा होगा.... ऐसा लगता हैं। और शायद आमंत्रण नहीं भी भेजा होगा तो भी उनको उसकी पड़ी नहीं थी। वो ऐसे स्नेही थे, जिनको मात्र समाचार या जानकारी की ही जरूरत थी, आमंत्रण-सन्मान-सत्कार की नहीं।

''म.सा.! मुझे आपकी सिर्फ पांच मिनिट दोगे?'' दुसरे ही दिन उन्होंने विनती करके मेरे पास पांच मिनिट मांगी और 2 तारीख को शोभायात्रा के बाद जैसे ही फ्लेट जैसे उपाश्रय में पहुँचा तब वो वहा ही मेरी रूम में कुर्सी पर बैठे हुए थे। बहुत सारे लोगों को

रोककर मैं रूम में गया और कहाँ, ''तुम्हारी पांच मिनिट के लिए सबको रोककर रखा हैं।''

मैं आसन पर बैठा तब वो कुर्सी छोड़कर मेरे सामने नीचे बैठ गये। उस वक्त वो 71 वर्ष की उम्र वाले वयोवृद्ध रामजीभाई पटेल के मुख पर के भावों का वर्णन करने की मेरे पास कोई शक्ति ही नहीं हैं।

कुर्ता-पायजामा और कंधे पर नैपकिन....ये उनका हमेशा का पहनावा उन्होंने दो हाथ जोड़े, मस्तक नमाया, भीने-भीने शब्द उनके मुँह से निकल गये....

''म.सा. ! मेरी उम्र 71 वर्ष की हो गई है, जिन्दगी का कोई भरोसा नहीं। बारडोली जाने के बाद वापस आपको मिल पाऊँगा या नहीं ? उसका मुझे पता नहीं। शायद मेरी जिंदगी में आपके साथ मेरा अंतिम मिलन हो....'' उनका गला भर गया। जीवन की वास्तविकता को वो अपनी नजरों के सामने निहाल रहे थे और पचा चुके थे।

''मेरा आपको ये अंतिम प्रणाम है, उसको स्वीकार करोगे ना ?'' वो बोले। मैं मात्र आंसु द्धारा ही उत्तर दे रहा था।

''मेरे पास दुसरा कुछ भी नहीं, अजैन हुँ इसलिए जैनधर्म की विधि अनुसार वन्दन करना भी मुझे नहीं आता, सिर्फ हाथ जोड़ने आते हैं।''

अपने परिचय के इतने वक्त दौरान मेरी कोई भी भूल हो गई हो तो बालक समझ कर माफ कर देना....

पांच मिनिट की मुलाकात में उन्होंने अपने दुखों की कोई भी बात नहीं की, सिर्फ शबरी जैसा भक्तिभाव दिखाया।

बारडोली का दुसरा एक पटेल परिवार भी दीक्षा में आया था। गिरीश भाई और उनकी पत्नी ! 30 के आस-पास की उम्रवाला ये परिवार वर्षो तक कनाडा में रहने के बाद बारडोली में स्थिर रहने के कारण वैसे तो न्यू जनरेशन का ही गिना जा सकता हैं। उनके रहन-सहन से ही ख्याल आ ही जाता है कि वो फेशनेबल है पर बारडोली के 28जैन दीक्षा में देर से आये, ये दो अजैन दीक्षा में उन सबसे एक दिन पहले ही आ गये। ''शशीकान्त भाई बरफी वाले'' नाम से जाने जाते ये गिरीशभाई अपनी मिठाई की दुकान होने से और मंदिर के एकदम सामने ही होने से बारडोली में बिराजमान सयंमीओं को गोचरी वहोराने का बहुत ही लाभ लेते हैं।

उनकी पत्नी के पहनावे को देखकर ऐसा कहने का मन होता है कि ''उनको म.सा. से दूर ही रहना चाहिए।''

पर उनके निर्मल भावों को देखकर मेरे जैसों को ऐसा कहने का मन होता है कि "भगवान को उनके पास सामने से जाना चाहिए।"

17. मुमुक्षु भव्य के वहाँ पांच वर्षो से दुर्गाभाई नाम का एक नेपाली व्यक्ति काम करता हैं। भव्य की दीक्षा नक्की होने के बाद वो बहुत ही बेचैन हो गया। गोवालिया टेंक में सुरेशभाई ने विदाई समारोह करवाया, उसके बाद भव्य के पप्पा ने दुर्गाभाई को पूछा कि "कार्यक्रम कैसा लगा?" "अच्छा नहीं लगा" दुर्गा ने जवाब दिया।

"क्यु?" भव्य के पापा प्रतिकभाई ने पूछा। कार्यक्रम तो बहुत ही अच्छा हुआ था इसलिए उसके जवाब से प्रतिकभाई चौंक गये।

"सुरेशभाई ने हमको बहुत रूलाया।" दुर्गाभाई बोले तब प्रतिकभाई को ख्याल आया कि भोले दुर्गाभाई ने क्यो कार्यक्रम को खराब कहा था।

प्रतीकभाई ने एसपीआर में दुर्गाभाई को अपने साथ अपने परिवार के ही एक सदस्य तरीके रखा।

शोभायात्रा के बाद दो पुस्तको का विमोचन था। एक का विमोचन करने के बाद दुसरी पुस्तक का विमोचन किसके हाथो से करवाना? मैं यह विचार कर रहा था। पहले से कुछ नक्की भी नहीं था।

"म.सा.! उचित लगे तो दुर्गाभाई के हाथ से करवाना भव्य की दीक्षा के निमित्त इस नेपाली भाई ने पुरी जिन्दगी के लिए मांस का त्याग किया हैं।" 1000 व्यक्तिओं की सभा में से भव्य की मम्मी ने मुझे समाचार भेजा। अपने घर के सामान्य नौकर के हाथ से ये सीमा बहन पुस्तक का विमोचन कराना चाहते थे।

मुझे ये बात बहुत ही अच्छी लगी। रात्री भोजन करने वालों के लिए जैसे उसका त्याग कठिन है वैसे ही मांसाहारी के लिए मासांहार का त्याग भी कठिन ही है, और उस नेपाली नौकर ने वो कर दिया था। जबकि भव्य की दीक्षा के निमित्त जैनों में से रात्रिभोजन का संपूर्ण त्याग करने वाला मुझे तो एक भी मिला नहीं था।

मैंने दुर्गाभाई को स्टेज उपर बुलाया, लोगों को उनका परिचय दिया और उनके हाथ से पुस्तक का विमोचन करवाने का कारण बताया। लोगों ने तालियों के गड़गडाहट के साथ में उस बात को सुना और करोड़पतियों की हाजरी के बीच दुर्गाभाई ने "चैन्नई के चमकते सितारे" पुस्तक का विमोचन किया।

30 वर्ष के आसपास की उम्रवाले दुर्गाभाई दीक्षा के दिन मेरे पास बॉलपेन लेकर आये और कहाँ "मुझे नूतन दीक्षीत को वहोराना हैं।"

अत्यन्त आकर्षक बॉलपैन देखकर मैंने पूछा, "कितने की हैं ?"

"300 रू. की...."

मैं उनकी भावना देखकर खुश हुआ। बॉलपैन पर "पार्कर" कम्पनी का नाम पढ़कर ही लगा कि उसकी बात झुठी नहीं होगी।

पहले तो मैंने मना किया कि "देखो मैं खुद आठ-दस रू. की सादी बोलपैन ही वापरता हु तो नूतन 300 रू. की पैन वापरे वो योग्य नहीं ही हैं।" पर उनके मुँह पर से लगा कि उस नेपाली नौकर को मेरी ये विवेक की बातें दिमाग में नहीं उतर रही थी, वो सिर्फ अपने भक्तिभाव को सफल करना चाहता था। इसलिए मैंने उसको हाँ भी कर दी। अपने 7000 के आसपास की पगार में से 300 रू. की मंहगी वस्तु को वहोरा की स्वयं भावना भाने वाले और प्रवृत्ति करने वाले उस दुर्गाभाई की अंतर से अनुमोदना करनी ही चाहिए ना ?

18. "म.सा. ! पुत्र की दीक्षा के निमित्त हम संपूर्ण ब्रह्मचर्य का स्वीकार करना चाहते है और दुसरा भी एक नियम लेना है.... कलश के पिता नीरवभाई ने मुझे विनती की। "क्या नियम लेना है ?" पहले नियम का हाँ करके मैंने दुसरे नियम के लिए प्रश्न किया।

"आज के बाद संथारे पर सोना या अभी लोच करवाना...."

"लोच ?" मैं चौंका। कलश ने भी अभी तो उस्तरे से ही मुंडन कराया था।

"हा, म.सा. ! मेरे लड़के के बाल जाये, तो मुझे भी अब उसका मोह रखके क्या करना ? दीक्षा हो जाए फिर मैं लोच करवा दुंगा।"

"देखो, नीरवभाई ! लड़के का लोच हो, उसके बाद नहीं.... उसके पहले ही तुम्हारे बाल का त्याग कर दो। लोगों के लिए तो एक आलंबन बनेगा ही, साथ-साथ में आपके लिए भी सुंदर सुकृत गिना जाएगा।"

उन्होंने एक सैंकेन्ड में बात स्वीकार कर ली और 1 तारीख को सुबह 6बजे वो लोच करवाने बैठ गये। शीलगुण वि. ने लोच शुरू किया, कुल पांच घंटे तक लोच चला। बहुत दर्द हुआ, मुश्किल भी हुई पर वो पिता ने पुत्र को नजर के सामने रखकर सहन कर लिया।

पुत्र का लोच हो, उसके पहले ही दिन पिता का लोच हो, ऐसा किस्सा मैंने तो पहली बार ही देखा।

19."म.सा. ! दीक्षा का सब खर्च एसपीआर वालों ने ही किया है पर हमें इसकी हमेशा इच्छा रहेगी कि हमारे लड़के की दीक्षा में लाभ मिलना ही चाहिए। कम से कम इतना

नक्की करो कि "कुल तीन दीक्षा हुई है, एक-एक दीक्षार्थी परिवार को दीक्षा खर्च में से 10प्रतिशत का लाभ मिले तो तीनों परिवार को कुल 30 प्रतिशत लाभ मिलना चाहिए।" एसपीआर वाले हमारी बात नहीं सुनते वो ऐसा ही कहते है कि "गुरूदेव के साथ बात करने के बाद वो जैसे कहेंगे वैसा करेंगे" इसलिए वो आपकी बात तो मानेंगे ही" राजेन्द्रभाई, प्रतिकभाई और नीरवभाई इन तीनों पिताओं ने मेरे पास शिकायत की और उसी वक्त एसपीआर के प्रमुख घेवरचन्दजी, शांतिभाई, महेन्द्रभाई, मुकेशभाई, कमलभाई वगैरह पांच श्रावक आए।

"बोले भाई ! ये फरियाद आयी है, अब क्या करना ?"

"साहेबजी ! हम एक बार आपके साथ चर्चा कर लेते है फिर आप जो कहोंगे वो हमको मंजुर होगा.... " उन सब ने कहा।

दुसरे दिन वो दुसरे किसी काम के लिए आये थे। और मैंने वो ही बात छेड़ी, "पहले आप मुझे ये बताओ कि दीक्षा का खर्च कितना हुआ ?"

"म.सा. ! अभी तक हिसाब करना बाकी हैं।"

"फिर भी अंदाज से कितना ?"

"28-29 लाख तक हुआ होगा.... "

"आपने कितनी रकम इकट्ठी की थी....."

"30 लाख.... इसलिए ही यदि बचेगी तो वापस ही देनी है.... "

"तीनों दीक्षार्थी परिवारों को लाभ चाहिए। 30 प्रतिशत यदि दे तो आठ लाख रू. जितने का लाभ उनको दे दो ना ?"

और ये शब्द सुनते ही वे सब मौन हो गये। प्रमुख ने बाजी हाथ में ली। आँखे नम हो गई और वो गद्‌गद्‌ होकर बोले।

"म.सा. ! महिनो पहले एक रात हम नीचे ग्राउन्ड में तीन चार व्यक्ति बैठे थे। उस वक्त शांतिभाई ने आकर कहा कि म.सा. के पास में तीन दीक्षा होने वाली है वो हम अपनी सोसायटी में ही करवाए तो ? हम म.सा. को विनंति करेंगे.... "

उस वक्त मैंने एक ही सैकंड में जवाब दे दिया कि "हा ! हम यहाँ ही दीक्षा करवाएँगे और पूरा खर्चा हम अपनी जवाबदारी लेकर ही करेंगे।"

"तब तो कुछ भी विचार नहीं किया था पर म.सा. ! हमारे लड़के की दीक्षा हो तो हम कोई कसर बाकी भी रख दे पर जब दुसरे के दीक्षा की हम सामने से विनती करके

हमारे घर आंगन में कराए तब हम सवाया–ढेढ गुणा ज्यादा खर्चा करने की तैयारी रखते ही हैं।''

हमने उस वक्त 50 लाख के आसपास का अंदाज रखा। और हमने ये कार्य अपने सिर पर लिया। पर बाद में तो खाने–पीने आदि बहुत सारी बातों में जो आपने सख्ताई के साथ प्रतिबंध रखा उस कारण से हमको लगा कि ये तो 30 लाख से ज्यादा खर्चा नहीं होगा।

फिर हमने सोचा कि सोसायटी के दुसरे घर वाले भी बहुत भावूक है यदि उनको पता चलेगा कि सोसायटी के तरफ से दीक्षा होने वाली है और वो भी सोसायटी में ही.... तो वो भी लाभ लेने की इच्छा रखेंगे ही।

दुसरी बात ये भी कि यदि अलग–अलग परिवार छोटा–बड़ा लाभ लेंगे तो वो लाभ लेने वाले हर एक परिवार को एक ममता बंध जाती है कि ''ये दीक्षा हमारे तरफ से है'' और इससे वो सब दीक्षा के हर एक प्रोग्राम में बहुत ही उल्लास से जुड़ेगे, इसलिए हमने निर्णय किया कि इसमें सबको लाभ लेने देंगे।

वो प्रमुख एक के बाद एक बात एकदम पद्धति से बता रहे थे और मैं उनकी दीर्घदृष्टि को देखते हुए उनकी बात सुन रहा था।

बाद में हमने सोसायटी की मीटिंग में घोषणा की कि दीक्षा में जिसको लाभ लेना हो हमें बताये। सबके लिए 50 हजार की रकम नक्की! उससे ज्यादा नहीं। कोई दो–पांच–दस लाख रूपये देना चाहे, तो भी नहीं....

म.सा.! एक भाई ने तो कपट किया, उन्होंने यहाँ तीन फ्लेट खरीदे है तो हर एक फ्लेट के नाम पर अलग–अलग लाभ लेकर ढ़ेढ लाख का लाभ लिया।

इस स्कीम से 30 लाख तक इकट्ठे हो गये।

म.सा.! सोसायटी की मीटिंगों में बहुत ही कम लोग आते है ये तो आप भी जानते ही हो, इसलिए बहुत सारो को तो इस बात की खबर भी नहीं होगी। शायद सबको पता चला भी होगा तो भी मीटिंग में सुनने वालों को इसकी जो महिमा पता चली होगी, वो महिमा दुसरों से पता चली भी नहीं होगी फिर भी 60 परिवारों ने तो लाभ लिया ही।

और अंदाजित खर्च इकट्ठा हो गया था और हम चार व्यक्ति तो तैयार ही थे इसलिये हमने ज्यादा मेहनत–प्रचार किया ही नहीं।

म.सा.! हमने 50 हजार का आंकडा रखा उसका कारण ये नहीं था कि लोगों की शक्ति या भाव कम है पर उसका कारण ये था कि खर्चा ही कम है तो ज्यादा इकट्ठा करके

क्या मतलब ? बाकी जो 50 लाख का खर्च सोचा होता तो हम लाख–दो लाखकका भी आंकडा रखते और वो सब परिवार बहुत ही भावों से उसमें लाभ भी ले लेते।

ये हमारा इतिहास हैं।

''म.सा. ! हम अपनी जिंदगी के इस अनमोल सुकृत को बेचना नहीं चाहते....'' भीगे स्वर से प्रमुख बोले, ''तीनों परिवारो को दुसरा जहा लाभ लेना हो वहाँ भले ले पर हमारे दीक्षा सुकृत में उनका भाग नहीं हो इतनी नम्र विनंति हैं।बाकी तो आप जो कहो वो हमको मान्य हैं।''

प्रमुख श्री ने वक्तव्य पूर्ण किया। बाकी सबने इसमें हाँ में हाँ मिलाई और मैं ? मैंने उनको वचन दे दिया कि ''तुम्हारे इस सुकृत में कोई एक रूपये जितना भी भाग नहीं लेंगे, जाओ, शांति से जाओ।''

और पूरी प्रसन्नता के साथ में एसपीआर सोसायटी के वडीलों ने विदा ली।

20.''इन तीन दीक्षा के समाचार घर–घर में पहुँचे और लंबे समय तक सबको इसका स्मरण रहे उसके लिए क्या कर सकते हैं ? ये प्रश्न मैंने पूछा, एक श्रावक ने सुना और उन्होंने एक योजना बतायी ''म.सा. ! यहाँ शनिवार–रविवार को जुना मंदिर, चन्द्रप्रभ नया मंदिर, राजेन्द्र भवन.... इन सब जगहों में पूजा करने आने वाले बालको को प्रभावना दी जाती हैं। हजार के आसपास तो बालक आते ही हैं। हम उनको ही ऐसी कोई प्रभावना दे जो कि लंबेकाल तक स्मरण में रहे, तो वो 900–1000 घरों में पहुँच जाएगी। हम सबके घर–घर में देने जा सके वो मुश्किल है पर ये उपाय सरल होगा।''

''उपाय तो अच्छा है'' मैंने कहाँ ''पर क्या दे सकते हैं ?''

उन भाग्यशाली ने अपने व्यापार में वो जो चीज बेचते थे उसमें से कुछ चीजे बतायी। उसमें से एक.... लकड़े की बनी हुई एक वेंत जितनी लंबी और एक अंगुली जितनी मोटी पट्टी, उस पट्टी के कुल दो भाग, वो दोनों भाग स्क्रु से फिट किये हुए और बीच के भाग से पट्टी खोल–बंद कर सकते है, पट्टी खोले तब ये ऐसेआकार में खड़ी रह सकती हैं। उसमें उपर एक छेद था और उस छेद में पेन रह सकती हैं। सीधी भाषा में कहे तो घर में टेबल पर स्टैन्ड वाली इस बॉलपेन को रख सकते हैं। चाहे तब लिखने में काम आये और लोगों को अच्छी भी लगी।

इन पेन स्टेन्ड में आगे की तरफ गौतमस्वामीजी का और तीनों मुमुक्षुओं का फोटो फिट किया गया। पीछे की तरफ छपवा दिया कि, ''ओशियन हाईटस – एसपीआर, दीक्षा तारीख 3.2.2017'' ने तैयार करवाई। 900 पैन बालकों को प्रभावना में दी गई,

बाकी की 600 पैन भी अलग-अलग जगह में दी गई।

एसपीआर के ढ़ेढ सो घरो में ये पेन दी गई, पर उसमें छोटी सी घड़ी भी फीट करके दी गई।

बाद में पता चला कि "वो एक पेन की कीमत बाजार में 50 रू. के आसपास थी...."

ये योजना बताने वाले श्रावक ने मुझे बता दिया "म.सा.! दीक्षा में तो विशेष कोई लाभ नहीं ले सका, परंतु ये लाभ मुझे ही मिलना चाहिए इसके पैसे लेने की बात मेरे सामने मत करना" और जुड़वा बालकों के पिता जीतुभाई ने दीक्षा के प्रति अद्भुत सद्भाव के साथ में संपूर्ण लाभ ले लिया।

नाम की कामना से लाख योजन दूर ऐसे श्रावक जैनशासन की प्रभावना में बहुत ही बड़ा भाग देते हैं।

oooo

म.सा.! उपकरणों के चढ़ावे हुए, उसमें 30 के आसपास रकम वैयावच्च की, चार के आसपास की रकम ज्ञानखाता की और पांच के आसपास साधारण की रकम की उपज हुई हैं। हमको एक भी रूपया रखना नहीं हैं। पुरा योग्य स्थान पर दे देना है, आप मार्गदर्शन दो। "एसपीआर के मुख्य श्रावकों ने दीक्षा के थोड़े ही दिनों बाद मुझे बताया।"

मुझे आनंद हुआ। सामान्य से श्रावक धर्मद्रव्य के पैसे भी संग्रह करके रखने का विचार करते है, अपने पैसे तिजोरी में संग्रह करके रखने के संस्कार उनको धर्मक्षेत्र में भी परेशान करते ही है और इसलिए ही भारत भर के संघो में अरबों रूपये की रकम बैकों में ऐसे ही पड़ी हैं। हिसंक उद्योंगो वगैरह में वापरने में काम आ रही हैं।

और ऐसा भी नहीं है कि धर्मक्षेत्र में उन-उन कार्यो के लिए पैसे की जरूरत नहीं हैं। यदि धर्मक्षेत्र के पुरे पैसे खर्च करने का निर्णय कर लिया जाए तो भी एक रूपया भी नहीं बचेगा इतनी जरूरत हैं।

"कुछ भी नहीं रखना?"

"नहीं साहेबजी!"

"भविष्य में जरूरत पड़ेगी तो?"

"जब जरूरत होगी, तब हम देख लेंगे।"

“तो एक काम करो, दीक्षा में दो तिथि पक्ष के दो ग्रुप आये थे। उन दोनों ग्रुप के साध्वीजीओं को पूछ लो, उनको विहार करके जहाँ पहुँचना है वहाँ तक के साथ रहे व्यक्ति वगैरह के पूरे खर्चे का संपूर्ण लाभ ले लो।”

देखना, वो सब संकोच के कारण नहीं बोले, तो भी आपको तो सब लाभ ले ही लेना हैं। सामान्य से कोइ भी संघ दो-पांच दिन के विहार के खर्च का लाभ लेते है और इसलिए ही साध्वीजी भी आपको शायद उससे ज्यादा कहने में संकोच करे पर उनको रास्ते में दुसरे को कहना पड़े, ऐसा काम क्यों करना ? इसलिए उनका 25-30....जितने भी दिन का विहार हो वो पुरा लाभ ले लेना।

उसी प्रकार हमारे साथ चातुर्मास में विराजमान सा. विश्वपूर्णाश्रीजी भी अभी विहार में है, उनका ग्रुप बड़ा है, बड़ी उम्र वाले साध्वीजी होने से व्हीलचेयर भी साथ में है, उनकी भी भक्ति का लाभ इसमें से ले सकते हैं।

इसके अलावा सुरत गोपीपुरा में रमेशभाई और अहमदाबाद में हमारे पूज्य आचार्य देव श्री जयसुंदर सुरिजी म. द्धारा सतीशभाई वगैरह भी वैयावच्च का काम संभाल रहे है, गच्छ का भेद बिल्कुल भी देखे बिना ये पुरी रकम इन सब जगह वैयावच्च के लिए उपयोग कर लो....

मैंने पुरा रास्ता बता दिया।

ता. 14-2 को दोपहर 3:30 बजे ये बात हुई और ता. 15-2 को सुबह 6बजे ही श्रावक आ गये। मुझे मंदिर के बाहर मिल गये और “म.सा. ! आपके बताये सब जगह पर बात हो गई है, हम सब जगह व्यवस्थित तरीके से रकम पहुँचा देंगे।

म.सा. ! अहमदाबाद वाले सतीशभाई तो जोरदार काम करते है ऐसा लगता हैं।”

मैंने हँसते हुए उनकी बात का समर्थन करते हुए कहा

“हा ! उनके लड़के-लड़की दोनों ने दीक्षा ली है, स्पष्ट वक्ता है, मेरे जैसे को भी मुँह पर सुना दे, इसलिए ही हमको वो अच्छे लगते है, संयमीओं के लिए मर-मिटे ऐसे है....”

“हा, साहेबजी ! एसपीआर में ही एक श्रावक रहते है, उनके परिवार में भी दीक्षा हुई हैं। उनके ग्रुप में भी वैयावच्च के लिए पूछ सकते हैं ?”

“हा ! कोई भी संयमी हो, आप लाभ लेते जाओ, संभव हो तब एक भी रूपया बाकी मत रखना, पूरी रकम खर्च कर दो।”

म.सा. ! ज्ञानखाता की रकम का क्या करे ? आपकी कोई पुस्तक छपने वाली हैं ?

''मेरी तो बहुत किताबे छपती है परंतु ज्ञान खाते की रकम साधु-साध्वीजीओं के लिए भी चलती हैं। मेरी उनके लिए भी पुस्तक छपती ही है, विरतीदूत वगैरह में रकम खर्च कर सकते हो, पर आपको कोई व्यवस्थित शास्त्र छपवाने का लाभ मिले ऐसा करना हो तो वो हम बाद में विचार कर लेंगे।''

''और साधारण की रकम ?''

''वो भी खर्च कर दो ?''

''ठीक हैं ! हमको वो रकम रख के भी क्या करना हैं ?''

''अरे, भाई ! साधारण की रकम तो कच्चे सोने जैसी गिनी जाती हैं। कोई भी संघ अपनी ये रकम दुसरों को दे, ऐसा पुरे भारत में लगभग तो कहीं नहीं होता। नाकोड़ा में भैरवजी की, नरोड़ा में पद्मावतीजी की, महुड़ी में घंटाकर्णजी की साधारण की उपज करोड़ों रू. की होने से ये ट्रस्ट अपनी रकम दुसरो को देते है ये सुना है, बाकी ऐसा कभी नहीं होता मैंने आश्चर्य के साथ ये बात की।''

''साहेबजी ! हमको तो खर्च कर देनी है, भविष्य में जब हमको जरूरत पड़ेगी तब हमको मिल ही जाएगी। हमको संग्रह नहीं करना हैं।''

''शाबाश ! पर मेरी ऐसी इच्छा है कि एसपीआर में ही ये रकम संघ के उत्थान के लिए वापरे।''

''ऐसा क्या कर सकते हैं ?''

''वो मुझे सोचना पड़ेगा।''

''देखो म.सा. ! हमको तो एसपीआर में ही वापरना ऐसा बिल्कुल आग्रह नहीं हैं। आपको जो योग्य स्थान लगे, वहाँ हम खर्च कर देंगे....''

और भावकों को सोच कर जवाब दुंगा कहकर उनको विदा किया।

(प्रत्येक संघ के श्रावक यदि पैसे खर्च करने के विषय में इतने उदार बन जाय तो पुरे भारत में जैन संघ शासन के कितने सारे प्रश्नों का निराकरण हो जाएगा ना ?

दीक्षा को अभी तो 12 दिन ही हुए है और 60 प्रतिशत से ज्यादा रकम तो जमा भी हो गई।

सबको चढ़ावें के पहले ही बता दिया गया कि ''चैत्रसुद तेरस तक पैसे भर देने यानि कि दो महिनों के अंदर-अंदर.... उसके बाद ब्याज भी भरना पड़ेगा।''

उपज कम होगी तो चलेगा पर चढ़ावे ज्यादा जाए और पैसे वर्षो तक भरे ही नहीं....

ये नहीं चलेगा।)

ऋषभ बालिका मंडल

"रमीला बहन! संसारी माताजी वगैरह चौमासे में 50 दिन चैन्नई में रहने की भावना है, वैसे तो चन्द्रपुरी की धर्मशाला है पर वो आराधनाभवन से बहुत दुर है और ये वडिल इतने दुर से रोज दो बार व्याख्यान वाचना में आने जाने का कम सेट होगा।"

मैंने सुश्राविका रमीलाबहन से बात की। चैन्नई में बहनों का सबसे कार्यदक्ष मंडल आरबीएम(ऋषभ बालिका मंडल) के संस्थापक रमीला बहन की ताकत झांसी की रानी जैसे कह सकते हैं। उनका भूतकाल खुद एक आदर्श है सघंर्षो के सामने मस्ती से जीते हुए उन्होंने लड़कियों-बहनों को खुमारी के साथ में जीना सिखा दिया हैं। उस मंडल में से अभी तक 13-14 के आसपास दीक्षाएँ हुई हैं।

आराधना भवन से 100 कदम दूरी पर ही आरबीएम का अपना कला मंदिर नाम का मकान था, दो बड़े हॉल, दो रूम वगैरह सारी व्यवस्था थी।

न्यायरत्न म. के संसारी माता-पिताजी मेरे संसारी माताजी....वगैरह को 50 दिन रहने की भावना थी पर रहने की जगह और तीन टाईम का भोजन.... इतनी व्यवस्था जरूरी थी। संघ ने जो व्यवस्था की थी वो दुर होने से उनके लिए मुश्किल थी क्योंकि तीनों वडिलों को पैरो की तकलीफ थी।

अंत में विचार आया की जो कला मंदिर की जगह मिल जाय तो उनको आराधना करने में अनुकुलता रहेगी।

मेरा रमीलाबहन के साथ विशेष परिचय नहीं था परंतु उनकी बहुत बाते सुनी थी इसलिए मैंने ही उनको सामने से बात की।

"म.सा.! साधु भंगवत के माता-पिता की ऐसी भक्ति का लाभ हमको कब मिलेगा? हमारे मंडल की प्रवृत्ति वहा चलती है पर वो तो रोज एक-दो घंटे.... उससे उनको कोई तकलीफ नहीं होगी। मैं उनको एकबार ये जगह बता दुंगी जो उनको सेट हो जाए तो बाकी की सब व्यवस्था मैं कर दुंगी...."

मुख पर भरपूर उत्साह के साथ में उन्होंने जवाब दिया और वडिलों को कलामंदिर दिखाने ले गये।

शाम को वडिलों ने मुझे बताया "म.सा.! इन राजस्थानीओं को भगवान ने किस मिट्टी से बनाया है ये पता ही नहीं चलता। रमीला बहन स्वयं करोड़पति है उनके

कलामंदिर की कीमत करोड़ो रू. की होगी, खुद अकेले पुरा संचालन करते है और हमारे लिए वहाँ जो जो व्यवस्थाएँ जरूरी थी हम बतानेसे हिचकिचा रहे थे, पर उन्होंने तो 15-20 हजार का खर्चा हो जाए तो भी परवाह किये बिना सब करने की तैयारी दिखाई।''

उसके बाद तो वो तीन वडिल, अहमदाबाद के मेघल बहन वगैरह तीनों मुमुक्षु बहने भी वहा रूकी। वो तीनों बहने पन्द्रह दिन के बाद अहमदाबाद लौट गये पर जाते-जाते कह गये....''रमीलाबहन ने एक माँ बनकर हमें वात्सल्य दिया। एकबार उनके मंडल की कोई लड़की नजर गई होगी कि'' हमारे गादी के उपर की चादर बराबर नहीं तो दुसरे ही दिन घर से नयी चादर लाकर बिछा दी। सुबह-सुबह नास्ता-चाय की व्यवस्थाा उन्होंने एकदम बराबर की।

(उन बहनों ने अहमदाबाद से उनकी अनुमोदना में एक पत्र भी लिखा, वो अगर मिल गया, तो इसमें छपा ही दुंगा।)

जूना मंदिर में बिमार साध्वीजी को रोज सुबह उकाला देने जाने का भक्ति कार्य रमीलाबहन ने ही संभाला।

आप जो उनको मिलोगे, तो उनके परिचय के बाद ऐसा लगेगा कि झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ऐसी ही होगी।''

मेरे लिए तो गुरू भगवान से भी महान हैं।

''म.सा.! आप 9 साधु हो, उसमें से आपका या आपके साधुओं का दीक्षा दिन इन एक-दो महिनों में आ रहा हैं?'' दोपहर को दो बजे आए तमिल के. गोपाल ने मुझे प्रश्न किया।

रोज दोपहर हमको वंदन करने के बाद ही भोजन करने के नियमवाले और ''चैन्नई के चमकते सितारे'' पुस्तक में जिनका सुंदर मजेदार प्रसंग मैंने छापा है ऐसे ये के. गोपाल ने आराधना भवन में 17.2.2017 के दिन मुझे अचानक ही ये प्रश्न पूछा।

''क्यु? आपको क्या काम है?''

''मुझे उस दिन उपवास करना हैं।''

''उपवास? पर आप तो आपके सेठ की बहन मुक्ति प्रभाश्री जी म.सा. के दीक्षा के दिन उपवास करते ही हो ना....''

''हा! पर इस बार नहीं हुआ।'' और 50 के आसपास की उम्र वाले गोपाल भाई बच्चे के जैसे रोने लगे।

"क्या हुआ?"

"म.सा.! उनका दीक्षा दिन लगभग फरवरी में आता हैं। इसलिए मैंने सेठजी से जनवरी में पूछा था कि "दीक्षा दिवस कब आ रहा हैं?" पर उन्होंने दुसरे काम में व्यस्त होने के कारण मुझे बराबर जवाब नहीं दिया। उसके बाद तो मैंने बारबार पूछा पर मुझे जवाब नहीं मिला।

वैसे तो हर साल साध्वी भ. के पास से समाचार आ जाते है पर इस बार समाचार भी नहीं आए थे। कल मैंने जिद्द करके पुछा तो सेठ ने पंचांग देखकर जवाब दिया कि "वो तो 9 तारीख को गया।"

मुझे बहुत आघात लगा, गुस्सा भी आ गया। उन्होंने मुझे पहले क्युं नहीं बताया? म.सा.! इस बार उनके निमित्तसे उपवास नहीं हुआ, तो आपके दीक्षा के दिन उपवास करूंगा।" नम आंखों के साथ गोपाल भाई ने कहां।

"गोपाल भाई! मेरा दीक्षा दिन तो दस महिने बाद मागसर सुर-6को आएगा, इसके बदले आप एक काम करो, दो महिने बाद प्रभुवीर का जन्मदिन आ ही रहा है उस दिन उपवास कर लो।"

मैंने कहा, पर उनको मेरी बात का संतोष हुआ, ऐसा नहीं लगा।

"गरूजी! मेरे लिए तो भगवान से भी गुरू ज्यादा महान हैं। आप मुझे किसी भी साधु का दीक्षा दिवस बताओ...."

"हा!" मुझे अचानक याद आया "फागण सुद-8और 9 ये दोनों दिन मेरे शिष्यों की दीक्षा के दिन है इन दोनों से आपकोईभीएक दिन उपवास कर सकते हो।"

यह सुनकर उनके मुह के हाव-भाव बदल गये, हर्ष उमरा आंखो से मधुर आंसू बहने लगे.... "बस म.सा.! अब मुझे संतोष हुआ। मुझे तिथी का पता नहीं चलेगा पर आप मुझे तारीख बता दो जिससे मैं उपवास कर सकुं।"

"चैन्नई के चमकते सितारे पुस्तक में तुम्हारा प्रसंग छापा है, वो पुस्तक लेकर जाना" मैंने बात बदली।

"म.सा.! मेरे कितने मित्र मुझे कहते है कि तुं जैन साधुओं के पास जाता है पर उससे तुझे क्या मिलता है?" पर अब ये पुस्तक ले जाकर उन सबको दिखाऊगा कि देखो, मेरे जैसे सामान्य व्यक्ति को भी म.सा. ने पुस्तक में स्थान दे दिया। हजारो लोगो बीच मुझे प्रसिद्ध कर दिया" ऐसा कहकर एक पुस्तक लेकर के. गोपाल ने विदा ली।

(जो चीज बहुत मेहनत करने के बाद मिले उस चीज की कीमल बहुत होती हैं।

अजैनों को जैन धर्म की सब वस्तुएँ मुश्किल से ही मिलती है इसलिए वो उनकी कीमत कर सकते हैं। जैनो को उसकी किमत शायद कम हैं।

जन्म सेश्रीमंत को लाख-रूपये की भी कीमत नहीं होती

गरीब के लिए 1-1रू. भी मंहगा होता है....

आमंत्रण- पत्रिका

'म.सा. मुमुक्षुओं के परिवार के लिए दीक्षाखर्च के लिए आपने जो प्रेरणा की है वह मुझे बहुत पसंद आई है। मैं इसमें पैसे देकर लाभ नहीं लेना चाहता पर दूसरे तरीके से लाभ लेने की मेरी भाावना हैं।

चैन्नई के सुश्रावक अमितभाई ने एक दिन ये बात मुझसे कहीं।

तो कौनसे तरीके से लाभ लेना चाहते हो ?

मैं प्रिन्टीग का काम करता हुँ, मेरी कंपनी का नाम फर्स्ट लुक है। आपसे मेरी विनती है के पुरे भारत में चाहे जहाँ दीक्षा हो, उनकी पत्रिका छापने का लाभ मुझे चाहिए, ऐसा लाभ मुझे दिलवाइए।'

'तुम छपाई की प्रोफिट नहीं लोगे पर लागत कीमत पर छाप कर दोगे आमंत्रण पत्रिका, ऐसा ही ना ?'

'नहीं म.सा. ऐसा नहीं संपूर्ण पत्रिका का लाभ मेरा ही होगा, दीक्षार्थी परिवार को एक भी रूपया देने की जरूरत नहीं हैं।'

'पर इसमें तो काफी खर्चा होगा....'

'भले ही हो खर्चा, मेरी तैयारी है....'

'पत्रिका कितने पन्नों की छपवा सकते हैं ? पत्रिका छपवाना बंद ही हो जाए तो बहुत अच्छा ऐसा मैं मानता हुं, पर सब लोग ऐसा नहीं मानते ये भी मुझे ख्याल हैं।'

और मुझे ऐसा भी लगता है की अगर 'पत्रिका छपवानी भी पड़े तो सिर्फ एक पन्ने की जिस में प्रोग्राम की इन्फोरमेशन हो और इसके सिवाय कुछ नहीं, बिल्कुल सादी पत्रिका छपवानी चाहिए पर इसमें भी मुझे पता है कोई मानने वाला नहीं हैं। इसलिए उन सब को नजर के सामने रखकर में प्रश्न पूछ रहा था।'

म.सा. ! 30 से 40 पन्नों की पत्रिका भी छपवानी हो अच्छे से अच्छा कागज लेना हो। बेस्ट से बेस्ट डिजाईन लेनी हो.... वहाँ तक मेरी पूरी तैयारी है एक रूपए का खर्च भी दीक्षार्थी परिवार को नहीं करना पड़ेगा। अमित भाई ने पूरी दृढ़ता से बात की।

मुझे अब भी विश्वास नहीं हो रहा था। २७ आसपास की उम्र वाला ये लड़का इतने आत्मविश्वास के साथ जो बात कर रहा है क्या वो सचमुच सच होगी ?

म.सा. ! अमित भाई पर आप पूरा विश्वास रख सकते हो, वो इतना खर्च उठाने की ताकत रखता है, और ताकत से ज्यादा उसके भाव भी ज्यादा अच्छे है, आप किसी बात की चिंता मत करो....

हाल ही 17-01-17 को अमित भाई की शादी हुई है। और उनकी ऐसी उत्तम भावना को देखते हुए मैं विरतिदूत में जाहेरात दूँगा की 'पूरे भारत में किसी भी दीक्षार्थी परिवार को पत्रिका छपवानी हो तो इसका लाभ अमित भाई को दे !'

कल शायद ऐसा भी हो की वे सब का संपूर्ण लाभ लेने में सक्षम ना रहे पर फिर भी इतना तो कहुँगा ही तब भी ये भाई 1 रूपए की प्रोफिट लिए बिना लागत मूल्य पर पत्रिका छाप कर देंगे, ऐसा मुझे पुरा विश्वास हैं।

गरीबों की अमीरी

"म.सा. ! दीक्षा खर्च के लिए पैसा देना है" व्याख्यान के बाद मैं ऊपर चढ़ रहा था और सीढ़ी पर ही एक 22 वर्ष के आसपास की उम्र वाले बहन ने मुझे विनंती करते हुए कहा, उनके हाथों में नोट पकड़े हुए स्पष्ट नजर आ रहे थे।

उन बहन का मुझे सामान्य परिचय था, मध्यम या तो मध्यम से थोड़े कम परिवार के वो बहन थे। शादी नहीं हुई थी, उम्र भी छोटी थी। मंहगाई के कारण छोटे-छोटे ट्यूशन लेते थे, इस तरह घर में माता-पिता को सहायता करते थे। ऐसे व्यक्तियों के लिए अपने 200-500 रू. की बचत भी कितनी कीमती होती है ये तो वो ही जानते हैं।

"अचानक भाव हो गया ?" मैंने प्रश्न किया।

"ना जी चैन्नई के चमकते सितारे पहला भाग पढ़ा उसमें दीक्षा खर्च के अनेकानेक प्रसंग पढ़कर मुझे भी इच्छा हुई...." वो बहन बोले।

"आप ऊपर आ सकते हो ?" सीढ़ी पर खड़े रहकर ज्यादा देर बात करना मुझे उचित नहीं लगने के कारण मैंने कहा और "हा" जवाब कहने पर मैं तुरन्त उपर चला गया। वो बहन उपर आये "इन भाई को दे सकते हो...." मैंने कहा और सहज रूप से पूछा कि, "कितना लाभ लिया हैं ?" "इलेवन हनडरेड" वो बोले

"11 हजार ? इतना बड़ा लाभ ?" अग्रेंजी भाषा का कम जानकार मुझे से बहुत बार ये भूल हुई है कि मैं हनडरेड शब्द को "हजार" अर्थ में समझ लेता हुँ।

"ना, ना म.सा. ! इतनी मेरी शक्ति नहीं ग्यारह सौ रू. है" इंग्लीश पढ़े हुए वो बहन सीधे हिन्दी भाषी बन गये।

"तो भी बहुत भावना से लाभ लिया है इसलिए उत्तम लाभ ही हैं।"

"पर म.सा. ! एक विनंति , ये बात किसी को भी मत कहना मेरे घर पर भी मैंने किसी को नहीं बताया, वो तो मैं ट्यूशन पढ़ाती हुँ, उसमें से कुछ रकम बचाई थी। कभी-कभी मम्मी भी पैसे देती है वो भी बचे हुए थे, उसमें से दिये है पर घर पर बात करू और उनको शायद अच्छा नहीं लगे तो ?"

"पर इन पैसों की आपको जरूरत पड़ेगी ?"

"म.सा. ! मुझे ऐसा लगता है कि मुझे से ज्यादा उन परिवारों को ज्यादा जरूरत है, और मैं तो दीक्षा नहीं लेने वाली हुँ तो फिर मुझे किसी दीक्षा में ये छोटा सा लाभ तो मिलेगा...." और प्रंशसा की अपेक्षा रखे बिना उस बहन ने वहां से विदा ली।

दुसरे दिन व्याख्यान के बाद वापस वो ही बहन 1100 रू. देकर गये और कहा, "मैंने दुसरे एक व्यक्ति को बात की, उनको भी भावना हुई इसलिए उन्होंने भी लाभ लिया हैं।"

शबरी के बोर झुठे भले हो पर सच्चे भाव से भरे हुए थे इसलिए ही भगवान राम को वो अच्छे लगे, वैसे उन बहन की दी हुई रकम छोटी भले हो पर सच्चे भाव से भरी हुई थी इसलिए ही यह जिनशासन को बहुत ही अच्छी लगती हैं।

ऐसी पवित्र रकम जिसकी दीक्षा में उपयोग करेंगे तो उत्तम संयमी बनेगा, ऐसी मुझे दृढ़ श्रद्धा हैं।

"रोना"

"अरे भाई ! इतनी दोपहर में वंदन करने आए हो ? वो भी श्राविका को लेकर ? कुछ काम है क्या ? दोपहर को लगभग ढ़ेढ बजे के आसपास आराधना भवन के चौथे फ्लोर से गोचरी वापरकर में नीचे उतरा तभी तीसरे फ्लोर पर एक भाई-बहन को खड़े देखकर मैंने सहज ही प्रश्न किया। समय थोड़ा विचित्र था। उसमें भी इस समय भाई तो धंधे में या नौकरी में ही होते है लेकिन ये भाई तो 40-45 आसपास की उम्र के और व्यवस्थित लगते होने पर भी इस समय उपाश्रय आये थे, इससे ये अंदाज तो आ ही गया था कि किसी काम से आए थे।

तीसरे फ्लोर के हॉल में आसन बिछाकर मैं बैठा और इन दोनों ने वंदन किया। बहन

के सुत्रोच्चार से स्पष्ट लग रहा था कि "धार्मिक अभ्यास व्यवस्थित किया हुआ हैं।"

"कहाँ से आए हो ? साहुकारपेट से हो ?"

"ना जी ! दादावाड़ी आईनावरम से आए हैं ?"

"बोलो, वहाँ से आए ? वो भी इस समय ?"

और श्राविका की आंखों से आंसु बहने लगे।

चैन्नई में वैसे तो बारिश कम होती है पर आंखों रूपी बादलों में से आंसु रूपी पवित्र बारिश ना हुई हो ऐसा दिन प्राय: मैंने तो अभी तक नहीं देखा।

"म.सा. !" वो श्राविका बोले "हम दो वर्ष से वहा रह रहे है, लगभग बीस दिन पहले हमारे रूम में से फर्नीचर निकालने का निर्णय किया। उसके लिए व्यक्ति बुलाए पर उदाई के बारे में हमकों अनुभव नहीं होने से इस उदई की किस तरह जयणा करनी ? ये मुझे पता नहीं था और उन व्यक्तिओं ने उदई पर दवा छिड़क दी। सफेद रंग के हजारों जीवों रूप वो उदई मर गई। उस फर्नीचर को घर से बाहर ले जा रहे थे तब भी उदई नीचे गिर रही थी। पड़ोसियों ने तो वो फर्नीचर नीचे जमीन पर भी नहीं रखने दिया इसलिए उन व्यक्तियों ने फिर बाहर कहीं जाकर उस उदई को फेंका(पर म.सा. ! हमारे निमित्त से घोर हिंसा हो गई।)"

वापस उनके आंखों से आंसुओं की झरमर-झरमर बारिश होने लगी।

"उस दिन से प्रायश्चित लेने की भावना थी, पर दो लड़कों की, घर की जिम्मेदारी मुझे अकेले संभालनी पड़ती है और श्रावक को धंधे में से समय नहीं मिला, अकेली आ नहीं सकती थी, चार कि.मी. जितना दुर भी था.... इसलिए 20 दिन निकल गये....

पर म.सा. ! मन में नक्की किया कि जब तक इस पाप की आलोचना नहीं करूंगी तब तक मैं रोज 100 रू. जीवदया में डालुंगी.... और इस प्रकार ही किया हैं।"

आज भी श्रावक ऑफिस चले गये थे मैंने फोन किया। उनकी अनुकुलता कम थी इसलिए कल ही आने वाले थे लेकिन फिर श्रावक ने ही कहा कि, "आज ही जाकर आते है, दिन खिंचते जाए वो अच्छा नहीं, इसलिए इस समय आए हैं।"

बहन ने बात पूरी की।

मुझे उनको प्रायश्चित देना था।

"बहन ! एक विकलेन्द्रिय मरे तो उपवास का प्रायश्चित आता है, यहाँ तो सेंकड़ो-हजारों जीव मरे है, तो बोलो कितना प्रायश्चित दूँ ?"

वो बहन डर गये, "म.सा. ! प्रायश्चित तो करना ही है, पर मुझे तो एक उपवास भी भारी पड़ता है, तो क्या करू ? साहेबजी ! दुसरा कोई प्रायश्चित...." वो संकोच के साथ बोले।

" 'बहन ! आपका पश्चात्ताप अपूर्व है और दुसरी बात यह कि व्यक्ति की शक्ति देखकर ही प्रायश्चित दिया जाता है, तीसरी बात यह कि एक साथ बहुत सारे विकलेन्द्रिय प्रमाद आदि से मरे तो सामान्य से 10 उपवास का ही प्रायश्चित दिया जाता है, पर आपको पूरी जिंदगी काम आए, वैसा प्रायश्चित देता हुं। आपको जीवविचार के अर्थ पढ़कर उसकी परीक्षा देना.... इसके द्धारा भविष्य में आपकी जिंदगी में जीवदया का पालन बहुत बढ़ेगा' मैंने उनको धीरज बंधाया, उन्होंने तुरन्त ही वो प्रायश्चित स्वीकारा।

फिर तो बात-बात में पता चला कि वो बहन तो बहुत अच्छे गायक है लोग उनको लता मंगेशकर जैसे मानते हैं।

"भाग्यशाली ! आपको तो प्रचंड भाग्योदय है, रोज सुनने को मिलता होगा।" मैंने उनके श्रावक को पूछा।

"म.सा. ! मैं सुनता तो हुँ, पर गीत नहीं.... घर में ये मुझे गीत नहीं, दुसरा सब कुछ सुनाते हैं।" वो भाई कटाक्ष में बोले, मैं समझ गया हर एक घर में पतिदेव और पत्नीदेवीओं की छोटी-मोटी नोक-झोंक भी सुननी ही पड़ती हैं।

"समाथिमरण" के लिए गीत गाने के लिए सुरेश भाई को एक गायिका की जरूरत थी वो इस तरह पुरी हो गई।

छोटे दोषों का पश्चात्ताप भी व्यक्ति की जिन्दगी में बड़ा परिवर्तन ला सकता हैं।

डॉ. बेताला

चातुर्मास में मुझे मलेरिया हुआ था। शुरूआत में दो डाक्टरों द्धारा रिपोर्ट निकलवाकर दवाई ली पर कुछ असर नहीं हुआ अंत में एक भी रिपोर्ट निकाले बिना सिर्फ अनुभव के आधार पर लगभग 70 वर्ष के उम्र वाले डॉ. बेताला ने मुझे मलेरिया की दवा द्धारा ठीक कर दिया। पहले के डॉक्टर ने रिपोर्ट में वायरल बुखार जानकर मुझे उसकी दवाई दी, पर वो रिपोर्ट गलत थी वो वापस नयीं रिपोर्ट कराने से पता चला पर डा. बेताला ने तो मात्र अनुभव से ही मुझे मलेरिया की दवाई दी।

उस कारण से मेरा उसके उपर विश्वास बढ़ गया। उस डाक्टर ने एक भी रूपया

नहीं लिया था।

ता. 3.2.17 को हमारे पास तीन दीक्षा हुई, उसमें से क्षमाश्रमण विजयजी को बान्दोला में खाने-पीने की बहुत गड़बड़ हो जाने से चमड़ी का रोग फंगस हो गया उस कारण से उनको बहुत खुजली आती और शरीर मोटा होने के कारण चलते वक्त दोनों चमड़ी आपस में घिसती थी और वहाँ पसीना भी ज्यादा होता है, मैल भी लगता है जिससे वहाँ ज्यादा तकलीफ होती हैं। उनके माता-पिता दीक्षा के बाद मुझे ये बात बताकर गये थे और कहां था कि दवा तो चालु कर दी थी पर अभी तक खुजली गई नहीं थी....

मैंने वो दवा बंद करायी और एक दिन महात्मा को लेकर डा. बेताला के वहां पहुँचा। सुरेशभाई अंबालालजी और नरेश-भाई सेठ दोनों साथ में थे।

दवाखाने में उनकी रूम में जाने के दो रास्ते थे। एक था होल में से.... जहाँ सब रोगी बैठते, बारी-बार से उनकी रूम में जाते। दुसरा रास्ता था उनके घर में जाने की सीढ़ी के पास से.... साधु-साध्वीजी के लिए हमेशा वो सीढ़ी का रस्ता खुला था।

जैसे ही हम अन्दर पहुँचे कि तुरन्त ही अवृद्ध उन डाक्टर ने खड़े होकर दोनों चप्पल उतार दिये, पैर छू कर उन्होंने दोनों को बैठने के लिए टेबल दिया। छोटे म.सा. के साथ बहुत ही मिठास से बात की। बराबर सामने ही शत्रुंजय का बड़ा फोटो देखकर मुझे खुशी हुई। उनके, शब्दों में ही इतनी ताकत थी कि 50 प्रतिशत राहत तो ऐसे ही हो जाए।

अंत में जब हम निकल रहे थे, हम दोनों साधु दरवाजे के बाहर पहुँच गये थे अन्दर सुरेशभाई ने पैसे निकालकर डाक्टर को देने का प्रयत्न किया और उसी वक्त डाक्टर मिठासपूर्वक उन पर जो भड़के, वो दृश्य अपूर्व था।

वो बोले, ''आप पागल हो गये हो क्या? भान नहीं है आपको? संतो की सेवा के पैसे नहीं लिये जाते हैं? दूसरी बार एसी गंभीर भूल मत करना....''

उन शब्दों में मिठास के साथ भी ऐसी सख्ती, ऐसी स्पष्टता थी कि सुरेशभाई जैसे वक्ता भी एक अक्षर भी बोलने की हिम्मत नहीं कर सके, जैसे कि शरमा गये.... ''आभार'' शब्द बोलना ये भी डाक्टर के लिए गाली के बराबर लगता ऐसा पक्का अनुभव करके चुपचाप दरवाजे से बाहर निकल गये।

उस डाक्टर के मिठास भरी तिखाश में अनुभव हो रहा था जैन साधु के प्रति अप्रतिम सद्भाव!

उन्होंने कहा था कि, ''म.सा.! पहले तो मैं खुद ही उपाश्रय जाता था। संतो को मेरे पास आना पड़े ये मुझे पसंद नहीं था परंतु अब उम्र हो गई बार-बार आना जाना भी नहीं

होता इसलिए विशेष कारण ना हो तो मैं नहीं जाता। क्षमा करना म.सा.।''

एक मजेदार डाक्टर का मजेदार अनुभव लेकर हम उपाश्रय वापस आये। मात्र पांच ही दिनों में हमारे महात्मा का फगंस सपूंर्ण गायब हो गया।

एक मुमुक्षु : नीलम बहन

''म.सा.! मैंने पाप किया है, मुझे आलोचना करनी हैं।'' मुमुक्षु नीलम बहन ने मुझे बताया। मेरे लिए ऐसी बातें रोज की हो गई थी। बड़ी आलोचनाएं बुक भरकर लिख कर दी हुई आलोचनाएं मैं अहमदाबाद-सुरत भेज देता पर छोटी-छोटी आलोचनाओं के लिए ये संभव नहीं होता, इसलिए प्रायश्चित देता।

''बोलो, क्या बात है....''

आज पांचम है इसलिए मैंने आंयबिल किया। धर्मनाथ मंदिर के आयंबिल खाते में आयंबिल करने गयी। भीड़ ज्यादा होने से मुझे पुरूस्कारी करने की इच्छा हुई, मैंने सबका लाभ तो लिया पर मैंने देखा कि सबको रोटी पहुँच नहीं रही थी। मैंने तभी ही निर्णय कर लिया की आज मैं रोटी नहीं वापरूंगी जिससे मेरी रोटी दूसरे को वापरने को मिलेंगी और पूरा ही लाभ मुझे मिलेगा।

फिर मैं वापरने बैठी, थूली-मूंग.... ऐसी तीन वस्तुएं मैंने ली....

वो बहन बोलते-बोलते रूक गये क्योंकि उनका गला भर आया, मुझे ख्याल आ गया कि, ''उनका मन भर गया है वो थोड़ा और बोलेंगे तो रोने लगेंगे....'' पर मुझे ये ख्याल नहीं आया कि इसमें रोने जैसा क्या हैं?

वो आगे बोले, ''गुरूजी! उस वक्त मेरा मन पापड़ में अटक गया। मुझे इच्छा हुई कि मुझे पापड़ खाना है पर आत्मा मना कर रही थी कि, ''नहीं पापाड़ तो मात्र स्वाद के लिए है, शरीर टिकाने के लिए नहीं, ये नहीं खाना'' ऐसे मन और आत्मा की लड़ाई चालु हो गई। मन शांत नहीं हो रहा था, बार-बार वो पापड़-पापड़ कर रहा था।''

मैं ये बात सुन ही रहा था, आज ही मेरी भी गोचरी में पापड़ आये, वो तो चालु गोचरी के व्यवस्थित पापड़ थे, इसलिए मैंने तो वो पापड़ वापरे और पिछले दो-तीन दिनों से पापड़ के लोया भी आ रहे थे, वो मुझे भाने के कारण मैं वो वापरता था। मुझे पश्चाताप नहीं हुआ था।

मुझे अभी भान आया कि वो पापड़ या पापड़ के लोया आधाकर्मादि दोषवाले भले

नहीं थे परंतु रागजनक तो थे ही।

मुझे अभी भान हुआ कि मेरे तो मन और आत्मा के बीच लड़ाई हुई ही नहीं क्योंकि, मैंने तो मन की पराधीनता ही स्वीकार कर ली थी, गुलाम ही बन गया था और मुझे ये भान भी नहीं रहा कि, ''मैं गुलाम हुँ, मेरे मन का....''

नीलम बहन क्यों रो रहे थे ये मुझे समझ आ गया पर अभी तक मेरा एक और भ्रम टूटना बाकी था, मैं ऐसे समझा कि मन और आत्मा की लड़ाई में नीलम बहन हार गये होंगे और पापड़ खा लिया होगा, फिर घोर पश्चात्ताप हुआ होगा, इसलिए रो रहे होंगे।

पर ये मेरी गलतफहमी थी।

वो आगे बोले, ''मैंने तुरन्त ही दोनों हाथ जोड़कर वहां ही नियम ले लिया कि मैं पापड़ नहीं खाऊँगी।'' और मैंने पापड़ नहीं खाया। मुझे आश्चर्य हुआ, ये तो अच्छी बात है, इसमें रोने जैसा क्या है? इसमें प्रायश्चित क्या करना?

''म.सा.! मुझे पापड़ खाने का विचार ही क्यों आया? चलो आ भी गया, तो भी मुझे इतने समय लड़ना क्यों पड़ा? ये मेरे ाात्मा की कमजोरी ही कहीं जाएगी ना? एक झटके में ही मैं जीत क्यों नहीं गई? ये नीलम बेन की फरियाद थी।''

अब मुझे ख्याल आया की वो क्यों रो रहे थे....

हारने वाले रोए ये तो समझे....

पर सघंर्ष करके जितने वाले भी रोए और उसके लिए उदास हो जाए कि, ''मुझे संघर्ष करना पड़ा, ये मेरी कमजोरी.... ''ये भी एक अलौलिक दुनिया है ना!

वो बहन प्रेमसूरिदादा की उत्तमता सुनने के बाद एक तरफ से ही वापरते है, मुँह में दोनों बाजु कौर घुमाते नहीं जिससे की उनको राग नहीं हो जाए।

संघ के लिए भोग दो

''म.सा.! आपको विनंती है कि इस बार आप छूट दे दो। आठ वस्तु के बदले दस-बारह बनाने दो। ट्रस्ट बोर्ड भी खुश होगा।'' बबलुभाई ट्रस्टी ने दोपहर तीन बजे मुझसे विनती की।

ता. 4 मार्च 2017 का आराधना भवन में शनिवार का वो दिन! चेत्री ओली नजदीक में ही थी। आराधना भवन आदि सिर्फ चैन्नई का ही नहीं, परंतु शायद पुरे दक्षिण भारत का मुख्य संघ। ओली की आराधना के लिए वहां साधु महात्मा प्राय: तो होते ही हैं....

पर इस बार ट्रस्ट बोर्ड चिंता में था।

क्योंकी

1. चैन्नई में साधु भगवंत के सिर्फ दो ही ग्रुप थे, एक मेरा और एक भाग्यचन्द्र वि.....

2. भाग्यचन्द्र वि. की ओली नक्की हो गई थी, मेरी बाकी थी

3. मेरी शर्त उनको पता थी कि, ''पारणे में आठ वस्तु होगी, तो ही मैं निश्राा दुंगा'' और चातुर्मास और पोषदशमी के अट्ठम में भी ये बात उन लोगों ने मानी थी। पर वो मन से नहीं, दुसरा कोई विकल्प नहीं होने के कारण....

4.पोषदशमी के वक्त लाभार्थी ने कह दिया कि, ''मुझे पारणे आठ वस्तु नहीं चलेगी, मुझे इस तरह पारणे नहीं करवाने।''

उस वक्त ट्रस्टबोर्ड के लिए चिंता खड़ी हुई। पोषदशम की आराधना करानी जरूरी थी, इस तरफ मैं नहीं मान रहा था, दुसरी तरफ लाभार्थी नहीं माने.... अंत में संघ ने लाभार्थी को अगले वर्ष का लाभ दे दिया, आठ द्रव्य के लिए तैयार दुसरे लाभार्थी को लाभ दिया और मेरी निश्रा में अट्ठम हुए।

ऐसी ही परिस्थिति चैत्री ओली में भी खड़ी हुई, ट्रस्टबोर्ड को आठ द्रव्य मंजुर नहीं थे, पर दुसरा कोई विकल्प नहीं दिख रहा था, इतने बड़े संघ में चैत्री ओली की आराधना साधु होने पर भी नहीं हो, ये अच्छा नहीं लगता है ना? ट्रस्टबोर्ड की भी जिम्मेदारी तो बनती ही है ना?

इसलिए ट्रस्टबोर्ड चिंता में था।

पारणे वगैरह में आठ ही द्रव्य का आग्रह रखने के पीछे मेरे कारण स्पष्ट ही थे और हैं।

- कम द्रव्य होंगे तो जयणा बराबर होगी।(सुर्योदय बाद ही रसोड़ा चालु.... वगैरह)

- व्यर्थ बिल्कुल नहीं होता।

- ज्यादा द्रव्य आजकल भक्ति के लिए नहीं पर दिखावे के लिए है.... ये सब दुषण रोकना जरूरी है.... वगैरह

पर लोग ये बात समझ नहीं सकते।

मैंने मन में संकल्प कर लिया कि, ''मैं दुसरी जगह ओली करू लूंगा, पर आठ द्रव्य का नियम तो पालना ही पड़ेंगा।''

वैसे मुझे एक बात का दुःख था।

मेरे मन में 0.0001 प्रतिशत भी ऐसा भाव नहीं था कि, ''ट्रस्टबोर्ड को इस बार में

गरज है, मजबुरी है....क्योंकि दुसरे कोई साधु नहीं है इसलिए इस गरज, मजबुरी का लाभ उठाना।''

पर परिस्थिति ऐसी ही खड़ी हुई थी कि ऐसा स्पष्ट लग रहा था कि ट्रस्टबोर्ड को गरज है और मैं उसका फायदा उठा रहा हुँ।

ये किसी भी प्रकार से उचित नहीं गिना जाता ट्रस्टबोर्ड अपने संघ के आराधकों की आराधना के लिए ऐसी गरज रखे, ये उनकी महानता है....

मैं मेरे एक अच्छे आदर्श पर दृढ़ रहुँ, ये मेरे लिए उचित है फिर भी इस तरह चैत्री ओली नक्की हो, ये मुझे सचमुच अच्छा नहीं लग रहा था।

इसलिए क्या करना? ये विचार कर रहा था। मुझे पता था कि यदि मैं आठ द्रव्य की बात पकड़ कर रखूंगा, तो ट्रस्टबोर्ड अंत में स्वीकार करेगा ही, अनिच्छा भी स्वीकार करेगा.... पर ये बराबर नहीं था।

और ऐसी विचित्र परिस्थिति टालने के लिए यदि में ज्यादा द्रव्य की छूट दु, तो बनाया हुआ एक आदर्श हमेशा के लिए छूट जाएगा, वो भी बराबर नहीं था।

क्या करना? ये समझ नहीं आ रहा था।

ट्रस्टबोर्ड की मीटिंग में ये चर्चा चल ही रही थी, ये समाचार मेरे पास आये ही थे।

ऐसी परिस्थिति के बीच बबलुभाई मुझे विनंती करने आये उनकी पहचान।

1. पहलीबार ट्रस्टी बने थे।

2. ट्रस्टी बनने के पहले लंबे-लंबे बाल रखते थे।

3. सुपारी वगैरह खाने से दांत सड गये थे।

4. जब वो ट्रस्टी के चुनाव में खड़े हुए तब लोग मैसेज भेज रहे थे कि, ''बबलु बन गया जेन्टलमेन'' इसका सीधा अर्थ ये ही कि बबलुभाई अभी तक जेन्टलमेन तरीके प्रसिद्ध नहीं थे।

5. चुनाव में खड़े होने से पहले मेरे पास वासक्षेप डलवाने आए थे और कहा था कि, '' 'अगर जीतुंगा तो सुपारी वगैरह छोड़ दुंगा' परंतु ट्रस्टी बनने के बाद पांच महिने हो जाने पर भी वो सुपारी नहीं छोड़ पाए थे।

ऐसे थे बबलुभाई अभी मुझे वितनी कर रहे थे कि मैं आठ द्रव्य के बदले बारह द्रव्य की छूट दूँ।

''ये नहीं होगा, आपको मेरी निश्रा में ओली करवाली हो तो मेरी बात माननी

पड़ेगी। नहीं तो मैं आपको कहाँ रोकता हुँ? मैं कहीं भी दुसरी जगह ओली करूंगा, चैन्नई बहुत ही बड़ा हैं।'' मैंने तो जवाब दे दिया।

''बावजी! कृपा करो....'' बबलुभाई सचमुच रोने जैसे हो गये मुझे लगा कि ये भाग्यशाली ऐसे मेरा पिछा नहीं छोड़ेंगे इसलिए मैंने उनके सामने ऐसी शर्त रखी कि जो मंजुर नहीं कर सकेंगे, ''बबलुभाई! आप सुपारी छोड़ दो तो मैं 12 द्रव्य की छुट दुंगा और ओली यहां करूंगा....''

मुझे ऐसा ही था कि इनके लिए ये संभव ही नहीं हैं।

पर मेरी मान्यता गलत हुई।

''म.सा.! मैं तो कोई आराधना नहीं करता पर ट्रस्टी बना हूँ तो संघ के आराधकों की आराधना बढ़े उसके लिए जो मैं थोड़ा भोग दे सकता हुँ तो मैं अपने आप को धन्य मानुंगा। मेरे लिए सुपारी छोड़नी मुश्किल है पर आपकी बात मुझे मंजुर हैं। मैं पूरी जिन्दगी के लिए सुपारी की बाधा लेता हुँ....''

मैं उनको देखता ही रहा

उनके मुख पर सच्चाई थी।

उनके मुख पर संघ के आराधकों के लिए कुछ कर गुजरने की तमन्ना थी।

उनके मुह पर बालक जैसा भोलापन था।

मैं हार गया, मुझे हारना पड़ा, इस हार में भी मुझे आनंद था। रात को सेक्रेटरी सुश्रावक किरीटभाई, तपस्वी ट्रस्टी डुंगरमलजी वगैरह चार ट्रस्टी भी विनती करके गये, उनको हमारी दोपहर की बात का अंदाजा नहीं था। मैंने सामान्य चर्चा के बाद बारह द्रव्य के लिए हाँ कर दिया कह दिया कि, ''पारणा के दिन सुबह ही विहार कर देंगे, जिससे हमारी निश्रा में बारह द्रव्य नहीं गिने जाएंगे....''

पर उन्होंने मना किया, ''साहेबजी! ऐसा मत करना....'' और अंत में ये बात मैंने जाने दी, भविष्य में मेरा आदर्श टूट न जाए, इसके लिए दुसरा उपाय सोच कर रखा था।

दुसरे दिन रविवार को 9.15 से 11.00 के प्रवचन में 500 व्यक्तिओं की हाजरी के बीच ट्रस्टीओं ने ओलीकी विनती की और मैंने बबलुभाई का प्रसंग विस्तार से बताकर उनकी बहुत अनुमोदना की और ओली की जय बुलाई गयी।

वैसे मैंने साथ में कह दिया कि, ''श्री संघ की आराधना और ट्रस्टबोर्ड की भावना के लिए मैंने मेरा आदर्श छोड़ा है पर इसका प्रायश्चित मैं करूंगा। क्या प्रायश्चित करूंगा? ये बाद में पता चलेगा।''

अभी तो सोमवार शाम को 6मार्च के दिन किलपाक में रेम्बो-राखी के उपाश्रय में बैठकर में ये सब लिख रहा हुँ। मैंने विचार कर लिया है कि 12 अप्रैल चैत्री औली के पारने के दिन जब बारह द्रव्यों से पारना हमारी निश्रा में होगा, तब उस दिन हम साधु सब(कुल 9) साधु प्रायश्चित रूप आयम्बिल करेंगे। तपस्वीयों में त्याग की भावना बढ़ाने के लिए हम इतना करेंगे तो इसमें कुछ गलत नहीं।

बबलुभाई ने 500 व्यक्तियों की हाजरी मैं सुपारी आदि का नियम लिया, प्रवचन बाद कितने ही लोगों ने तो उनके पैरों में पड़कर अनुमोदना की।

(हर संघ में आराधकों की सच्ची आराधना के लिए चिंता करने वालों और उसके लिए भोग देने वाले ऐसे ट्रस्टी जन्म ले तो कितना अच्छा माहौल हो जाएगा?)

(मैंने अब एक ऐसा निर्णय भी कर लिया कि यदि कोई भी प्रोग्राम में आठ से ज्यादा द्रव्य हो तो वहां मेरी निश्रा नहीं। दूसरे की निश्रा हो और हाजरी देनी पड़े ये अलग बात। सोचो की कारणवश मुझे मेरी निश्रा देनी ही पड़े और सामने वाले आठ द्रव्य में नहीं माने तो वहाँ गोचरी नहीं वहोरना, घरों में से ही गोचरी लानी....

ये निर्णय अभी मुझे उचित लगता हैं।)

भूख न जुए टाढो भात

"म.सा.! अरिहत अपार्टमेंन्ट में पधारो, मंदिर के दर्शन भी हो जाएँगे और वहां प्रवचन के लिए जगह भी है, वो भी देख लेंगे।" तनसुख भाई ने प्रवचन के बाद मुझसे विनती की। किल्पाक संघ में नोबल हॉस्पिटल के सामने छोटे से हॉल में हवा नहीं आने के कारण मुझे जगह बदलनी थी, परंतु अभी तक सेट नहीं हुआ था। गरमी चालु हो गई थी, इसलिए प्रवचन के समय यदि हवा न हो, तो मुझे पसीना होता और उससे कफ हो जाता इसलिए हवा जरूरी थी।

तनसुखभाई ने विनंति तो की पर उनका घर दुर होने से मैं नहीं गया और रेम्बों-राखी उपाश्रय की और मूड़ा। रास्ते में और उपाश्रय में आने के बाद तनसुखभाई के साथ बहुत सारी बाते हुई तभी उन 70 आसपास की उम्रवाले तनसुखभाई की सच्ची पहचान हुई।

"म.सा.! मैं भावनगर का हुँ, गुजराती हुँ, एक भी संतान नहीं है, इसलिए से आज से 25 वर्ष पहले ही सब धंधा बंद करके सभी पापों से बच गया हुँ। पू.आ. विक्रमसूरिजी म. के पास में ही नियम ले लिया था।" श्राविका को भी कोई शौक नहीं तो किसके लिए पैसा कमाना? "तो फिर दीक्षा क्यु नहीं ली?" मैंने पुछा।

''स्वास्थ्य ठीक नहीं, तीनबार हार्ट अटैक आया है, बायपास सर्जरी करायी हैं। अब तो इतनी ही भावना है कि जैसे ही ये शरीर बदल जाए अगले भव में अच्छा शरीर मिले कि तुरन्त ही प्रभु के मार्ग में आगे बढ़ना हैं, दीक्षा लेनी हैं।''

''म.सा. ! इसलिए पुरे वर्ष में कभी भी एसी, पंखा उपयोग नहीं करता।''

''पंखा भी नहीं, चैन्नई में तो बहुत गरती है, तुम्हारे जैसे श्रावकों को तो कैसे चलता हैं ?''

''साहेबजी ! आप सबको चलता ही है ना ! मैं जब भी ज्यादा गरमी लगे, तब सयंमीओं को ही याद करता हुं कि वो सहन करते ही है ना, तो मैं क्यों सहन नहीं कर सकता।'' वो श्रावक बोले।

दीक्षा लेने के बाद, 22 परिषह सहन करने की जवाबदारी स्वीकार करने के बाद छोटी-छोटी बातों में फरियादी बनकर एसी पंखा का उपयोग चालु कर चुके मेरे कितने ही संयमी भाई-बहनों की याद आ जाने से और उनके सामने श्रावक की संयमी के प्रति उच्चतम भावनाएं देखकर मुझे शर्म आ गयी। कितने ही मार्ग भूल चुके मेरे प्यारे सयंमी इस श्रावक की भावना को ध्यान में ले, तो कितना अच्छा।

आजकल सामान्य घरों में भी एसी देखने को मिलता हैं। उसके सामने ये सुखी श्रावक तो पंखा भी नहीं वापरते, ये उनकी कितनी विशिष्टता कही जाएगी ना....

''पूरा दिन क्या करते हो ?''

''संभव हो उतनी आराधना ! घर पर टीवी नहीं, इसलिए उसमें समय खर्च नहीं होता। यहाँ रहता हुँ, पर साहुकारपेट आराधना भवन के साथ वर्षो से जुड़ा हुआ होने से वहाँ कोई भी साधु हो या न हो तो भी वहा ही आराधना करने जाता हुँ सुबह 4:30 बजे उठ जाता हुँ। पुरे दिन में दो प्रतिक्रमण- तीन सामायिक पूजा, वैगरह आराधना होती हैं।'' तनसुखभाई बोले।

चातुर्मास में उनको बहुत बार देखा था। परंतु वो ऐसी आराधना करते लोग होंगे ऐसा मुझे अंदाज नहीं था। मुझे सबसे ज्यादा आश्चर्य इसी बात से हुआ कि चेन्नई कि चिपचिपी गरमी में भी वो पंखा उपयोग नहीं करते थे। उपाश्रय तो बड़े, खुले होने से हवा आती है पर श्रावकों के घर तो छोटे, पैक होने से कुदरती हवा भी कम आती हैं।

उन्होंने कहाँ, ''गरमी सहन करने की शक्ति बढ़ाने के लिए 42 डीग्री गर्मी में दोपहर को बहुत बार घुमने निकलता हुँ। उपर से आग जैसी गरमी पड़ती है पसीने की धार छुटती हैं। तब अन्दर एक अलग प्रकार की ठंडक अनुभव होती हैं।''

(गुजराती में कहावत है कि "भूख न जुअे टाढो भात" सचमुच भूख लगी हो तो व्यक्ति ठंडा, वासी, सादा चावल भी खा लेता हैं।

साधक को साधना की, आराधना की ऐसी भूख होती हैं कि वो पल-पल ढुँढ़ता ही रहता है मुझे कब साधना-आराधना मिलेगी ? और जैसे-जितनी साधना मिलती है, वो कर लेता है....गरमी के दिनों में पन्द्रह दिन पंखे, एसी के बिना रहकर तो देखो....)

"मत्थएण वंदामि ! अंदर आ सकते है ?" किसी बहन की आवाज सुनाई दी। किल्पाक रेनबो राखी फ्लेट में हम उतरे हुए थे। ता. 7 मार्च का दिन था। साधु के उपाश्रय में प्रवेश करने से पहले बाहर से इस तरह पूछ लेना ये बहनों के लिए उचित विवेक है और आने वाली बहनों ने ये विवेक बताया।

"आ सकते हो।" मैंने कहाँ और तीन बहने अन्दर आयी। 22 वर्ष के आस-पास की उम्र वाली ये बहने लगभग रोज व्याख्यान में आती थी। सुखी परिवार के होने पर और नये जमाने में होने पर भी धर्म की सच्ची लगन उनमें देखने को मिल रही थी।

"बोलो क्या काम हैं ?" मैंने पूछा।

"म.सा. ! एक छोटी सी भूल हो गई है उसका प्रायश्चित लेना हैं।" बहुतो के मुँह से सुन चुका था और इसलिए ही वर्तमान दुनिया को अच्छी भी मान चुका मैं ये सुन ज्यादा आश्चर्यचकित नहीं हुआ पर इन हरेक जीवों के लिए तो पश्चात्ताप-प्रायश्चित इस संसार सागर से तरने के लिए जहाज ही था।

आंखों में आँसु के साथ बहन ने सुंदर आलोचना की। "म.सा. ! मुझे दीक्षा लेने की भावना है पर घर पर मम्मी-पापा की बहुत लाड़ली हुँ। वो मुझे किसी भी तरह आज्ञा नहीं दे रहे मम्मी तो कहती है कि मैं मर जाऊंगी पर तुझे दीक्षा की आज्ञा नहीं दुंगी...."

"मैंने संकल्प किया था कि दीक्षा नहीं मिले तब तक सब फ्रुट बन्द! मैंने पच्चक्खान नहीं लिया था पर मन में दृढ़ संकल्प किया था।"

"अभी केरी की सीजन चालु हुई। इसलिए घर में केरी आने लगी मैंने मना किया तो घर में बड़ी मम्मी, मम्मी वगैरह सबने मुझे बहुत डांटा। मम्मी कहती है कि तु नहीं खायेगी तो घर में कोई नहीं खायेगा...." उसके बाद मैंने कहा कि, "मुझे कोई भी एक फल की छुट हैं। और मैंने केरी खाना शुरू किया।

इसमें भले मैंने नियम नहीं लिया था पर मैंने मेरा संकल्प तो तोड़ा ही है और सिर्फ परिवार की जबरदस्ती के कारण ही मैंने केरी खाई ऐसा नहीं परंतु मुझे भी अन्दर से तो केरी खाने की थोड़ी इच्छा हो गई थी। ये दोनों कारण इकट्ठा हुए और मैंने केरी खा ली

अभी भी रोज खाती हुँ।''

''म.सा.! कितने ही दिनों से इसका प्रायश्चित लेना या परंतु नहीं ले सकी पर आज तो कैसे भी समय निकालकर आयी हुँ....''

चैन्नई जैसे महानगर में बड़ी हुई, करोड़पति परिवार की, ग्रेज्युअेट ऐसी लड़की को केरी खाने की इच्छा हुई ये पाप लगता है, नियम नहीं होने पर भी संकल्प टुटना भी पाप लगता है और उसके लिए लाखों लोग जिस काल में चारित्र भ्रष्ट हो चुके है.... ऐसे काल में ये लड़की आँसू गिरा रही थी ये ही जिनशासन के जिंदा होने की साक्षात निशानी थी।

''घर पर क्यों मना करते है? धार्मिक परिवार नहीं हैं?''

''वैसे तो हमारे परिवार में दीक्षा हुई है पर मैं बचपन से ही लाडली हु मम्मी-पापा की शादीके बाद बहुत वर्षो के बाद मेरा जन्म हुआ था इसलिए उनको मुझ पर बहुत राग है।'' मम्मी कहती है कि, ''तु शादी करेगी तो मेरे घर आ सकती है तेरा परिवार मुझे देखने को मिलेगा.... पर तू दीक्षा लेगी तो मुझे कुछ भी देखने को नहीं मिलेगा। तु मेरे घर पर भी नहीं आएगी, इसलिए दीक्षा तो नहीं दुंगी।''

''वो मेरे लिए लड़का देख रहे है पर मैंने तो दादी को कह दिया है कि मैंने पुरी जिन्दगी के ब्रह्मचर्य की बाधा ले ली हैं।'' ''मैं यह सुनकर आश्चर्यचकित हो गया, ये न्यु जनरेशन बहुत ही साहस वाली लगी। न्यु जनरेशन भाग कर मुस्लिम जैसो से शादी भी कर सकते है और इस तरह ब्रह्मचर्य की पुरी जिन्दगी के लिए प्रतिज्ञा भी परिपक्व उम्र में ले सकते हैं। बहुत ही भारी कहा जाता हैं।''

''देखो बहन!'' मैंने प्रायश्चित दिया ''तुम घर कि परिस्थिति के कारण संपूर्ण रूप से केरी नहीं छोड़ सकते तो वो केरी नहीं भाये उस तरह से खाना चालु करना।''

''यानी? रोटी, साग, दाल सब कुछ चुर कर केरी का रस डाल देना। ऐसे ही ना?'' बहन बोले।

''ऐसा ही कुछ।'' ''चलेगा! मुझे उसमें कोई तकलीफ नहीं आएगी।''

''या फिर.... जैसे करायता एक ही घुंट में पी जाते है वैसे ही केरी का रस स्वाद लिये बिना अंत में एक ही घुंट में पी जाना....''

और उन्होंने प्रायश्चित स्वीकार कर लिया। दीक्षा के लिए दृढ़ संघर्ष करने के भावों के साथ उन बहन ने विदा ली।

(कॉलेज में लड़कों के साथ में, ''लव-अफेयर'' वगैरह रूप में गलत रास्ते जाने वाली अपनी लड़की को रोक नहीं पाने वाले माँ-बाप प्रभु के मार्ग में आगे बढ़ती अपनी

बेटियों पर गर्व करने के बदले उनको रोकने का पाप क्यों करते हैं? ये ही पता नहीं चलता। लड़की को साध्वीजी के पास में या व्याख्यान में या पाठशाला.... कही नहीं जाने देने के सख्त आग्रह रखने वाले ये माँ-बाप लड़की को कॉलेज में बॉयफ्रेंड के साथ में घुमने, होटल में क्यु जाने देते हैं?

क्या माँ-बाप तो बिगड़े हुए नहीं है ना? भगवान जाने।)

भगवान महावीर का शिष्य

" एक विचित्र घटना मेरे जीवन में हुई है, इसलिए मुझे आपकी सलाह लेनी हैं।" आराधना भवन के तीसरे फ्लोर के हॉल में 27 के आस-पास की उम्र वाले एक बहन मुझे मिलने आये, सुबह ही वो पूछ कर गये थे(उनका नाम तब पुछा था, पर अभी याद नहीं।)

"कहाँ से आये हो?"

यहाँ साहुकारपेट में ही रहती हुँ। चातुर्मास में तो एक बार भी यहा आयी ही नहीं थी। इस आराधना भवन की सीढ़ी भी पहली बार चढ़ी हूँ, ग्रेज्युअेट होने के बाद मुझे एक बार इच्छा हुई कि जैन धर्म का भी अभ्यास करूं। बहुत मेहनत के बाद मुश्किल से मेरे दो प्रतिक्रमण पुरे हुए। मेरी जिज्ञासा के कारण स्थानकवासी, तेरापंथ, दिंगबर, मुर्तिपूजक.... सब जगह घुम कर आयी और सब जगह अनुभव किया हैं।

"इसमें मेरा क्या मार्गदर्शन चाहिए?" मैंने सीधा ही प्रश्न किया।

"मैं कॉलेज में पढ़ती थी, तब एक तेलुगु युवान के साथ मेरा परिचय हुआ था। वो लड़का शांत स्वभाव वाला.... दोनों के बीच दोस्ती भी हो गई थी, फिर तो वो अलग हो गये। थोड़े दिनों पहले वापस मिलने का हुआ तब पता चला कि, "अब वो रिजर्व बैंक ऑफ इन्डिया की हैदराबाद की एक शाखा में मैंनेजर हैं। उसने वेदों का बहुत ही अभ्यास किया हैं। संस्कृत श्लोक फटाफट बोल सकता हैं।"

मुझे लगा कि दो प्रतिक्रमण पढ़ते-पढ़ते भी मेरा दम निकल गया और ये तो कितने फटाफट श्लोक बोलता हैं.... तो एकबार उसको अपने भगवान के दर्शन कराऊँ...."

मैंने उनसे बात की, तेलुगु ब्राह्मण होने पर भी उन्होंने तुरंत ही हाँ कर दी और महावीर स्वामी भगवान के मंदिर में मैं उसको दर्शन करने ले गई। वो प्रभु वीर के सामने हाथ जोड़कर खड़ा रहा, और उसकी आँखों में से अनायास आंसु गिरने लगे। मैं समझ ही नहीं पायी कि वो क्यों रो रहा हैं?

मैंने जोर से नवकार बोलना शुरू किया, पर मैंने देखा कि उसका ध्यान वो सुनने में नहीं था, बस बंद आंखों में से आंसु बह रहे थे।

''हम हमारे भगवान को खमासमणा से वंदन करते हैं.... तुम करोगे?'' मैंने उनको कहाँ और उन्होंने मेरे जैसे वंदन किया।

फिर उन्होंने इशारे से मुझे पुछा कि, ''मैं उनको स्पर्श कर सकता हुँ?'' मैंने पहले तो मना किया, पूजा के कपड़ों के बिना स्पर्श कैसे कर सकते हैं? परंतु फिर मैंने विचार किया कि एक तेलगु ब्राह्मण को इतनी भावना हुई है तो उसके पीछे कुछ रहस्य तो होगा ही, इसलिए मैंने हाँ की और उसने भावपूर्वक प्रभुवीर को स्पर्श किया।

उसके बाद मैंने उसको पास में रही गौतमस्वामी जी की मूर्ति के दर्शन कराये, पर पता नहीं क्यों उस वक्त उसका मुंह बिगड़ गया। उसको अच्छा नहीं लगा। मुझे आश्चर्य हुआ कि, ''प्रभु के दर्शन के वक्त भावविभोर होने वाला यह प्रसाद गौतम-स्वामीजी के दर्शन के वक्त मुँह क्यों बिगाड़ रहा हैं।'' पर मैंने कुछ नहीं पुछा।

थोड़े समय के बाद उसने मुझे प्रश्न किया कि, ''तुझे पता है कि तेरे भगवान को मृत्यु के बाद उनका अग्निदाह करते है या दफनाते हैं?

मुझे पता नहीं था, इसलिए मैंने कहा पता नहीं ,पर उसने विचित्र जवाब दिया, ''मुझे पता है, उनका अग्निदाह किया गया था।''

''तुझे कैसे पता? तुझे किसने बताया?'' मैंने चौक कर पूछा।

''मुझे कैसे पता? मैं उस वक्त वहाँ हाजिर था।'' उसने कहाँ।

''क्या?'' मेरी आँखे फट गई।

''हा! वीर प्रभु को जब अग्निदाह दिया गया, तब मैं वहाँ ही हाजिर था, क्योंकि मैं उनका ही शिष्य था।'' उसने दर्द भरी भाषा में बताया।

मुझे उसकी बात पर विश्वास नहीं हो रहा था, कैसे होगा? शायद आपको भी इस बात पर विश्वार नहीं होगा।

''अग्निदाह के समय मैं बहुत रोया, गुरू के प्रति राग था मुझे....''

''तो फिर गौतम स्वामी जी की मुर्ति को देखकर मुँह क्यों बिगाड़ दिया?'' मैंने पुछा।

''मेरे पुराने खराब संस्कार! गौतमस्वामी प्रभुवीर के प्रथम शिष्य थे, प्रभु के सबसे नजदीक थे.... इसलिए मुझे ईष्या थी। उनके गुणो को देख-देख कर जलता था। इसलिए

ही शायद मेरा आत्मविकास विशिष्ट कोटि का नहीं हुआ। उनके प्रति ये अरूचि भाव ही उनकी मूर्ति के दर्शन के वक्त बाहर प्रगट हुआ। लेकिन प्रभु के प्रति रूचिभाव–प्रीत के कारण प्रभु के दर्शन के वक्त आंखों में आंसु रूप प्रगट हुआ।''

प्रसाद की ये बाते आज भी मुझे अंचभित करती हैं। पर म.सा.! मुझे ये जो अनुभव हुआ है, वो ही मैंने आपको बताया हैं। इसमें सच्चा क्या? झुठा क्या? वो मुझे पता नहीं। मुझे लगा कि ये बात आपके जैसे महात्मा को तो बतानी ही चाहिए इसलिए कहा हैं। इसमें अब आगे क्या कर सकते है, वो आप ही बताना।

तब तो मैंने उन बहन को विदा किया क्योंकि मुझे स्वयं को ही इस बात पर पक्का विश्वास नहीं था, अभी भी नहीं। पर बाद में मुझे लगा कि एक बार सच्चाई जानने की कोशिक करेने में क्या जाता हैं? वो प्रसाद भाई मिलेंगे और पूछेंगे तो पता चल जायेगा कि वो सच्चे है या झुठे.... ?

पर उन बहन का मुझे कोई परिचय नहीं था। वो पहली ही बार मिले थे, उस वक्त तो मैंने नाम भी पूछा था, पर ये लिखते समय तो मैं नाम भी भूल गया हुँ और आराधना भवन में वो पहली बार ही आये होने से कोई उनको जानते भी नहीं होंगे। शायद नाम याद आयेगा, तो उनकी खोज करा सकता हुँ।

हा! ''हैदराबाद में आरबीआई में प्रसाद भाई मैनेजर हैं।'' ये बात मुझे बराबर याद रह गई थी। आज ही यानि कि 8मार्च के दिन मैंने मोहनभाई–मनोजभाई के द्धारा हैदराबाद में इन्कवारी तो शुरू करा दी हैं, जो सचमुच ये बात निकलेगी, तो उनको मिलकर बहुत सारी बाते जानने की इच्छा हैं।

प्रभुवीर का शिष्य रह चुका जीव हमको रूबरू मिले, तो कैसा आनंद उत्पन्न होगा ना?

(बहन का नाम अचानक याद आ गया, ''आरती बहन! मेरा ऐसा अनुभव है कि कोई भी वस्तु याद नहीं आ रही हो, तो रात को सोने के बाद सुबह उठते ही पहले ही जो उसको याद करने का प्रयत्न करूं तो वो वस्तु तुरन्त ही याद आ जाती हैं। ये नाम भी मुझे इस तरह ही याद आया हैं।'')

''म.सा.! कल एक गजब का अनुभव हुआ।'' घर पर दीक्षा के लिए संघर्ष करने वाले एक बहन ने अनुभव होने के एक दिन बाद मुझे यह बात बतायी।

रात को लगभग तीन बजे मुझे कोई नींद में से उठा रहा था, मुझे ऐसा लगा। मैंने उठकर चारों तरफ देखा तो कोई भी नहीं था। मुझे थोड़ा डर लगा फिर विचार आया कि,

''शायद मेरा भ्रम होगा।'' इसलिए फिर सो गई। पर अभी आधी नींद में ही थी और मुझे स्पष्ट आभास हुआ कि, ''कोई मेरे पैर हिलाकर मुझे उठा रहा हैं।'' उस वक्त तो मैं एकदम डर गई, बिस्तर में ही उठकर बैठ गई पर कोई नहीं दिखा।

अचानक ही मेरी नजर पीछे की तरफ गई, वहा महावीर स्वामी की मूर्ति थी, पर अभी तो मैं उनको देखकर एकदम आश्चर्यचकित हो गई। प्रभु वीर का अलौकिक शणगार किया हुआ दिखा। प्रभु की आंखें खुल रही थी, बंद हो रही थी। जैसे कि जिंदा प्रभु हो, ऐसा ही लगा।

''आप बराबर जग गये थे? या स्वप्न था?'' मुझे विश्वास नहीं हुआ, इसलिए मैंने बीच में ही प्रश्न कर लिया।

''म.सा.! बराबर जग गई थी। नजर के सामने एकदम स्पष्ट ये द्रश्य मैंने देखा हैं। मेरे तो आनंद का कोई पार नहीं रहा, फिर तो मुझे लगा जैसे कि मुझे कोई प्रेरणा दे रहा हो- खड़ी हो, स्वाध्याय रूम में जा और पढ़....'' और मैं स्वाध्याय रूम में गई, एक घंटा स्वाध्याय किया.... उस वक्त जो मजा आया उसका वर्णन मैं नहीं कर सकती।

पांच बजे वापस सो गई, घर पर मम्मी-पापा को पता चलेगा कि, ''मैंने रात को इस तरह स्वाध्याय किया है तो गुस्सा हो जाएंगे। उनको मेरे उपर बहुत ही राग है, वो मुझे दीक्षा देना नहीं चाहते, मम्मी रोते ही रहते हैं।''

राजस्थानी घरों में संतानो के प्रति तीव्र राग की दुनिया मैं देख चुका था, इसलिए अब इस बात में मुझे आश्चर्य नहीं लगा।

''म.सा.! मैं दीक्षा ही लुंगी, ये तो तय ही है, शादी तो नहीं करूंगी, कुछ भी हो जाए तो भी नहीं....'' एकदम धीमी आवाज वाले वो बहन, ध्यान लगाकर जिनका आवाज सुनना पड़ता एकदम दृढ़ निश्चय की आवाज में बोले।

''देखो बहन! भगवान तो मोक्ष में होने से वो तो साक्षात् नहीं आएंगे। परंतु भगवान के भक्त ऐसे देव तुम्हारे उपर प्रसन्न होकर आपको इस तरह प्रभु के दर्शन कराए, आपको भविष्य की उज्जवलता का संकेत दे.... आपका आनंद बढ़ाये, ये संभव ही हैं। आप अब निश्चित बन जाओ, प्रभु ने आपको ऐसा रास्ता बताया है कि जिसमें अब आपको सफलता मिलनी ही चाहिए।'' मैंने उनको उचित आश्वासन के साथ में उत्साह वर्धक शब्द कहे।

और ''भविष्य में मैं उत्तम साध्वी बनुंगी'' ऐसे विचारों में डुब कर थोड़ी नम आंखों के साथ में उन बहन ने विदा ली।

(माँ–बाप को इतनी विनती कि आपकी संतान विश्वभर में पुजनीय बने, ऐसी पात्रता है उनमें। उनको आप आपके स्नेह बधंन में बांध कर कचरापेटी का कचरा मत बनने देना, संसार में मत गिराना, उनको उनके हिसाब से आगे बढ़ने देना। सारे गांवों को पवित्र करने के लिए ही आगे बढ़ने के लिए ही उनका जन्म हुआ हैं....)

जो छोड़े उसको मिलता हैं

म.सा.! मुझे नियम लेना है कि धंधे में जो मुनाफा हो उसमें से 30 प्रतिशत रकम मुझे धर्मक्षेत्र में खर्चा करना श्रीपाल भाई ने मुझे बात की।

कोडितोप के उपाश्रय में उनके श्राविका के साथ वो वंदन करने आये थे। उनका काम फ्लेट वगैरह के अंदर की डिजाईन तैयार कर देने का हैं। उन्होंने बीच में ऐसी बात भी की थी कि, "ये काम बराबर नहीं चल रहा, एक तो ये काम जल्दी मिलता नहीं, अगर कोई काम देने के लिए फोन करे, तो भी अंत में वो अटक जाता।"

परिवार सुखी होने से ऐसे तो चिंता नहीं थी, परंतु अपने खुद का धंधा व्यवस्थित चले, ऐसी अपेक्षा संसारी युवान को हो ये स्वभाविक है इसलिए ही उनकी ये अपेक्षा पूरी नहीं होने के कारण चिंता होती रहती थी।

हम तो उनको धर्म की ही प्रेरणा करेंगे ना? आज उन्होंन सामने से ही 30 प्रतिशत की बात निकाली, प्रतिज्ञा मांगी।

"क्यों? धंधा बढ़ गया हैं?"

"ना जी! पर इतना करने की भावना हैं।"

"30 प्रतिशत किस तरह करोगें? धंधे में यदि मुनाफा होगा, उसमें से घर के खर्च वगैरह निकालने के बाद अंत में जो बढ़ेगा, यानि की जो मुनाफा बढ़ेगा , उससे से 30 प्रतिशत निकालना ना?(जैसे कि 4 लाख का काम होगा तो, 1 लाख का नफा हो, उसमें से 50 हजार घर खर्चे के निकल जाए, उसके बाद 50 हजार में से 30 प्रतिशत यानि की 15 हजार के आसपास धर्मक्षेत्र में खर्च करना।)" "नहीं! सीधे कमाई में से ही 30 प्रतिशत धर्मक्षेत्र में खर्च करना।" उन्होंने कहा,(यानि कि 1 लाख की कमाई हो, तो 30 हजार रू. ....)

"श्राविका को पुछ लिया? इन सब को बहुत शौक होते है...."

"म.सा.! ये जो करेंगे, मुझे मंजुर हैं।" श्राविका ने जवाब दिया उसके बाद पन्द्रह

दिन बाद वो 2 मार्च को आराधना भवन में ही मिले। ''म.सा. ! चमत्कार हुआ या क्या ? वो नहीं पता, पर अब फोन पर फोन आने लगे हैं। बाहरगांव से भी फोन आ रहा हैं। काम बढ़ने लगा हैं। धर्मक्षेत्र में 30 प्रतिशत जितनी कमाई देने की इन छोटे से श्रावक की भावना से उनके जीवन में पुष्योदय शुरू हो गया था। आज जिनके पास करोड़ो रू. है और करोंड़ो नये कमाते हैं, वो भी सीधी कमाई में से 30 प्रतिशत जितनी रकम धर्म में देने वाले मुश्किल से ही देखने को मिलते हैं। उनके पास इतने ज्यादा पैसे है कि वो अपनी 100 प्रतिशत कमाई धर्म में दे दे तो भी उनकी सात पेढ़ी तक कम नहीं पड़ेगा पर पैसे का मोह हर एक के जीवन में कितना बढ़ गया है ये सब जानते ही हैं।''

इस युवान के पास इतने भी पैसे नहीं यानि ज्यादा कमाई भी नहीं फिर भी धर्म के प्रति श्रद्धा के कारण उन्होंने सहज ही ये प्रतिज्ञा मांग ली। सच पूछो तो मुझे डर था कि, ''भविष्य में उनको ऐसी प्रतिज्ञा लेने का पश्चाताप तो नहीं होगा ना ?'' पर उनके चेहरे पर ऐसा कोई भी डर नहीं दिख रहा था, और वो पूरी समझदारी पूर्वक प्रतिज्ञा ले रहे थे।

जब वो 15 दिन पहले कोडितोप संघ में प्रतिज्ञा लेने आए थे तब उन्होंने मुझे कहा था कि, ''म.सा. ! एक काम में लाख रूपये मुनाफा हुआ है काम तीन महिने में पुरा हुआ है, उसमें से 30 हजार रू. मुझे कहाँ खर्च करने ? ये आप ही मुझे बताना....''

तब मैंने प्रेरणा की थी कि, ''तुम्हारी श्राविका को अभी अच्छे दिन चल रहे है इन नौ मास दरम्यान वो प्रभु की अपने उत्कृष्ट द्रव्यों से पूजा करे, ये बहुत अच्छा होगा। आने वाली संतान पर उसका बहुत ही अच्छा असर पड़ेगा तो आप इन 30 हजार रू. में से पूजा की सुंदर सामग्री लाकर दे दो। चांदी की थाली, वाटकी, दीपक वगैरह।''

''पर म.सा. ! ये तो हमारे लिये ही उपयोग गिना जायेगा ना ? हमनें धर्म में कहाँ वापरा ?'' उन्होंने दलील की।

''ना, यदि आप आपके संसार के सुख के लिए संपत्ति खर्च करते हो तो नहीं चलेगा पर पूजा की सामग्री लाने के लिए खर्च करोगे तो चलेगा।'' मैंने समाधान किया।

उनके श्राविका बहुत खुश हो गये, ''म.सा. ! प्रभु की अष्ट प्रकारी पूजा करने में मुझे भी बहुत ही आनंद आता है, मुझे ऐसा ही नहीं आया कि मैं अपने लिए उत्कृष्ट सामग्री लाकर उससे पूजा करू पर आपकी ये बात मुझे बहुत ही अच्छी लगी।'' ये सब बात पन्द्रह दिन पहले की थी पर आज तो ये श्राविका बोले, ''म.सा. ! ये कहे रहे है कि मैं तुझे पुजा की सामग्री ऐक्स्ट्रा पैसों में से लाकर दुंगा। ये 30 हजार तो मुझे धर्म कार्य में ही खर्च करने हैं।''

मुझे उस युवान की उदार भावना के लिए सचमुच सद्भाव हुआ, उसको तो 30 हजार बच ही रहे थे और मैंने आगे से छुट दी थी, पर उसको वो मजुंर नहीं था।

उस युवान ने कहा, ''म.सा.! मेरे काम में किसी के साथ भी चीटींग नहीं करना। मेरा मुनाफा कम हो, तो भी चला लेता हुँ, पर सामने वाले को अच्छी से अच्छी क्वालिटी का ही फर्नीचर वगैरह करता हुं परंतु लोगों को विश्वास नहीं होता, लोग ऐसे ही समझते है कि मेरे जैसे हल्की वस्तुओं का उपयोग करके ज्यादा नफा ले लेते होंगे।''

मुझे ये युवान सचमुच ईमानदार लगा। उसके शब्दों में उसके व्यवहार में सच्चाई दिख रही थी। वो भाई यानी ढेबरा वाली के पतिदेव। (धर्म बिंदु में दर्शाया है कि, ''नीति-प्रमाणिकता ये ही धन की प्राप्ति का श्रेष्ठ उपाय हैं। परंतु ये बात बहुत ही गंभीर है, इसलिए ही लोग इस बात को स्वीकार नहीं कर सकते।''

सावधान! मेरा ये लेख पढ़कर कोई उनके पास अपना काम करवाने जाये और सोचो कि उनको बुरा अनुभव हो तो वो आपका दोष हैं। मेरा कर्तव्य सद्गुणों की अनुमोदना करना हैं।)

पूर्व भव के संस्कार

''म.सा.! आलोचना लेनी है'' बारहवी कक्षा में पढ़ने वाली दो बहने वंदन करने आयी, और उसमें से एक बहन ने अपनी इच्छा दर्शायी।

दो-तीन दिनों से वो आ रहे थे, ऐसा लग रहा था कि वो कुछ बात करना चाहते थे पर मेरे पास में कोई बैठा देखकर चले जाते। अगर दो-पाँच मिनिट राह देखते तो बात हो जाती परंतु शायद उनको संकोच हो रहा था। आज संकोच दुर करके उन्होंने अपनी बात बताई थी।

राजस्थानीओं को शोभे ऐसे मर्यादा युक्त वस्त्र, नयी पीढ़ी की हवा उनको ना लगी हो ऐसा व्यवहार, बोलने आदि का व्यवहार भी बहुत ही विनयभरा....

''बोलो, किसकी आलोचना लेनी है?''

उसके बाद उन्होंने आलोचना की और कहा कि, ''म.सा.! जब आपकी पहली शिविर पिछले वैशाख महिने में केशरवाड़ी में हुई थी, तब मैं भी उस शिविर में आई थी, तब आपने आलोचना की प्रेरणा की थी, सुक्ष्म दोष भी गुरू को कहकर पवित्र होने की बात की थी तब मैंने नक्की किया था कि मैं आलोचना करूंगी.... पर फिर अवसर ही नहीं मिला। बीच-बीच में याद आता, पर प्रमाद के कारण रह गया।''

इसका मतलब ये कि दस-दस महिने तक आपने अपने इन भावों को टिका कर रखा, बहुत ही अच्छा। लोग तो अपने किये हुए संकल्प को दो-पांच दिनों में ही भूल जाते हैं। या तो वो संकल्प पर अमल करते है या फिर संकल्प छोड़ देते हैं.... मैंने उनकी अनुमोदना की।

''म.सा. ! सच कहूँ तो अभी ही ये आलोचना करने के पीछे मेरे मन का एक मलिन भाव भी है मैं उसकी भी आलोचना कर लेती हूँ। अभी हमारी वार्षिक परिक्षा शुरू होने वाली हैं। मुझे ऐसा विचारआया कि अगर मैं आलोचना कर लुं तो मेरे पाप धुल जाएंगे, तो मुझे अच्छे मार्क्स आएंगे ''म.सा. ! अच्छे मार्क्स लाने के लिए आलोचना करनी ये तो गलत ही है पर मन में ऐसा विचार आ गया।'' उन बहन ने सरलता पूर्वक अपनेमन की सुक्ष्म दुनिया भी खोल दी।

''आपके मन में सिर्फ खराब भावना ही थी, ऐसा तो नहीं है ना। अच्छी भावनाएं भी थी ही ना। और बहन ! संपूर्ण भाव तो भाग्य से ही आते है, अपने ज्यादातर भाव तो मिश्रण वाले ही होते है और आपने तो उसकी भी आलोचना कर दी हैं।'' मैंने आश्वासन दिया।

उन्होंने जिन दोषों की आलोचना की, वो दोष वर्तमान काल की दृष्टि से एकदम सामान्य कक्षा के थे पर ऐसे भी दोषो के लिए उनके मन में जो खेद था वह अद्‌भूत था जो पश्चाताप था वह वंदनीय था। मुझे आनंद इस बात का था कि मेरी मान्यता दृढ़ हो रही थी कि आज की नयी पीढ़ी में भी पात्रता भरपूर है, सिर्फ अज्ञान है.... वो दूर हो जाएं तो वो भगवान बनने के रास्ते पर आगे बढ़ जाए।

इन पवित्र बहन का नाम है हीना बहन !

उनकी बड़ी बहन ने संस्कृत की दो बुक पुरी की, वो अब सुलभ चारित्रिणि पढ़ रहे है, थोड़े ही दिनों में वो पुरा होने के बाद व्यवस्थित ग्रंथ का अभ्यास शुरू करेंगे।

उनकी एक दुसरी बड़ी बहन ने दीक्षा ली हुई हैं।

मैंने उनको प्रायश्चित में जीव विचार आदि पढ़ने को कहा और कहा कि, ''दीक्षा ना लो, तो भी जिनशासन के सब पदार्थ तो पढ़ लो।''

तब वो नम्र स्वर में बोले, ''म.सा. ! मुझे भी दीक्षा लेनी है मैं बहन म. के पास जाने वाली हुँ।''

आप सब प्रार्थना करें कि उनकी ये भावना प्रभु जल्दी पुरी करें।

oooo

"आप किल्पाक से यहा वेपेरी तक अकेले आते हो तो आपको डर नहीं लगता ?" मैंने 11 वर्ष की एक छोटी लड़की को पूछा।

अत्यन्त सुखी परिवार की ये लड़की ! चैन्नई में वजावत परिवार के नाम से प्रव्यात कुंटुब की लाडली लड़की। हम किल्पाक संघ में रूके, तब लगभग रोज व्याख्यान में आती। मुझे लगता कि 11 वर्ष की लड़की को हमारे व्याख्यान में क्या पता चलता होगा ? ये तो उसकी मम्मी धार्मिक है, इसलिए वो उसको लेकर आते होंगे।

सात दिन किल्पाक संघ में रूकने के बाद हम वेपेरी संभवनाथ जैन संघ में आये मुझे आश्चर्य हुआ। मैंने पुछा, "यहाँ कैसे ?" तब जवाब मिला, "व्याख्यान सुनने।"

मेरा आश्चर्य और आनंद दोनों बढ़ गये "मम्मी साथ में हैं ?"

"नहीं.... मैं अकेली ही आयी हुँ, पापा को हॉस्पीटल में भर्ती किया है इसलिए मम्मी तो आ नहीं सकते थे इसलिए मैं अकेली आयी हुँ।"

पर, मम्मी ने हाँ कर दी ? किसमें आये ?

मम्मी तो आगे से भेजते हैं, ऑटो में आयी हुँ, मैं रोज शाम को यहाँ पाठशाला में आती ही हुँ।

"ऑटो वाला कितने रू.लेता हैं ?"

"आने के 40, जाने के 40...."

"तो तु रोज सुबह-शाम आती है तो रोज के 140 रू. होंगे ना ?"

"हा ! भले हो जाय।"

एकदम साफ मन से आने वाले उसके जवाब सुनकर मुझे सचमुच अत्यन्त आनन्द हुआ।

"व्याख्यान समझ में आता हैं ?"

"हाँ.... मजा आती हैं।"

पहले दिन इतनी बात करने के बाद तो रोज शाम को पाठशाला के लिए आती तब एक-दो छोटे-बड़े प्रश्न पुछती ही।

एक दिन "म.सा. ! मेरी बेस्ट फ्रेंड मुझे कहती है कि वो उसके मम्मी-पापा को छोड़कर जाने वाली हैं।"

"क्यों?"

"उसके मम्मी-पापा की एक ही धुन है हमारी लड़की का पहला नंबर ही आना चाहिए इसलिए यदि उसका दुसरा नंबर भी आए तो उसको मारते है.... वो इस टेन्शन से थक गई है इसलिए वो मम्मी-पापा को छोड़ने की बात करती हैं।"

मैं विचार में पड़ गया, पश्चिम देशों की संस्कृति के कारण ऐसे तुच्छ शिक्षण पीछे पागल बने हुए माँ-बाप को किस तरह समझाना? और वो लड़की भी सिर्फ 11 ही वर्ष की है, इतनी छोटी उम्र में उसके मन की हालत क्या हो गई?

"वो जैन हैं?"

"नहीं! अग्रवाल हैं।"

"उसने तुमको क्या कहां? और तुमने क्या जवाब दिया?"

"खुद का दुःख हल्का करने के लिए मुझे कहां। मैं उसकी बेस्ट फ्रेंड हु ना! और मैंने तो जवाब दिया कि कैसे भी हो फिर भी माँ-बाप तो अपने उपकारी है, वो अपने दुश्मन नहीं उनको छोड़ कर जाने का विचार नहीं करना। ये तो अपने पूर्व भव के पापकर्म का उदय हो तब ऐसे दुख आते हैं।" 11 वर्ष की बजावत परिवार की लड़की जैस की 40-50 वर्ष की बड़ी-परिपक्व समझदार बहन हो उस तरह बात कर रही थी।

"म.सा. ! मैंने जो जवाब दिया, वो बराबर है ना?" उसने पूछा "

"हा! एकदम बराबर है! मैंने हँसते-हँसते कहां। वेपेरी में ही एक शाम को मुझे पुछा "ये वैज्ञानिक ऐसा कहते है कि, "पृथ्वी घुमती हैं।" पर वो तो गलत है, हम उनको जवाब दे सकते है कि अगर पृथ्वी घुमती है तो हमको विमान उडाने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी, विमान को सिर्फ आकाश में अधर रखो, पृथ्वी घुमती रहेगी, जहाँ विमान को पहुँचना है, वो जमीन घुमती-घुमती नीचे आएगी, तब विमान नीचे उतार देना।"

म.सा. ! हमको उनको ऐसा जवाब देकर चुप कर देना चाहिए।

उस लड़की के शब्दों में जिनवचन के प्रति जो श्रद्धा झलकती रही थी वो याद करते वक्त आंखे हर्षालु से भर जाती है, मैंने फिर समझाया कि उसके सामने वैज्ञानिकों का जवाब क्या हैं?....

सबसे मुख्य बात मुझे अब करनी हैं। वेपेरी में स्थिरता का अंतिम दिन था। सुबह तो वो लड़की व्याख्यान में आयी ही थी।

उसके बाद शाम को भी पाठशाला में आयी और वंदन करने आयी, उस वक्त मेरे पास दुसरे लोग बैठे होने के कारण उनके साथ बातचीत में ज्यादा समय निकल गया,

फिर भी वो बैठी रही। दुसरे सब गये उसके बाद उसका नंबर लगा, मुझे थोड़ा दुख तो हुआ कि छोटी उम्र की जिज्ञासादि गुणोवाली रत्न तुल्य लड़की को मुझे इंतजार कराना पड़ा, पर मेरे पास दुसरा विकल्प नहीं था।

वो कुछ प्रश्न ही पुछ रही थी तभी ही एक बहन ने आकर उसको कहा कि, "तेरी मम्मी का फोन आया है, देर हो गयी इसलिए उनको चिंता हो रही थी.... तु यहाँ ही है तो कोई बात नहीं, मैं उनको बता दुंगी।"

सुर्यास्त को आधा-पौना घंटा बाकी हैं।

मैंने वापस प्रश्न किया कि, "तु ऑटो में अकेली घर जाएंगी तो तुझे सचमुच डर नहीं लगता?"

"नहीं, बिल्कुल नहीं" एकदम सहजभाव से उसने उत्तर दिया।

"पर ऑटोवाला तुझे उठा ले जाएगा तो? अपहरण कर लेगा तो? परेशान करेगा तो?"

"पर मेरे पास ये है" ऐसा कहकर उसने अपना छोटा सा पंजा दिखाया अर्थात् वो कहना चाहती थी कि मैं उसको एक तमाचा मारकर सीधा कर दुंगी, मुझमें ताकत हैं।

मुझे लगा कि छोटी लड़की ज्यादा विश्वास में हैं,उसको इस दुनिया का भान नहीं। इसलिए मैंने पुछा कि, "तु इस बात को समझती हैं? या ऐसे ही बोल रही हैं?"

तब उस झांसी की छोटी रानी जैसी लड़की ने जवाब दिया....

"म.सा.! दो वर्ष पहले की बात है, मेरी उम्र तब 9 वर्ष की थी। मुझे तब टाईफाईड हुआ था, इसलिए घर पर आराम कर रही थी, तभी अचानक मेरी बड़ी बहन भागती-भागती घर पर आयी, वो बहुत डरी हुई थी। मैंने पुछा "क्या हुआ?" तब हाँफते-हाँफते वो बोली कि मैं रस्ते पर चल रही थी तभी एक तमिल लड़के ने मेरी मस्ती की, मुझे रोका, टपली मारी....इसलिए मैं भागी...."

म.सा.! ये सुनकर मुझे गुस्सा आया। मैं समझ गई कि रवड़ी जैसा (एक प्रकार की हल्की जाति वाले तमिल) लड़के ऐसे धंधे करते हैं।

मैंने बहन को पूछा, "कब हुआ ये सब?"

अभी ही.... बाहर ही....

और मेरा माथा खिसका टाईफाईट होने पर भी मैं अकेली बाहर गयी, बहन ने मुझे वो आगे जाते लड़के को दिखाया, और चिल्लाकर मैं उसके पिछे भागी, वो लगभग

सोलह वर्ष का होगा, मुझे इस तरह आते देखकर वो घबरा गया, वो समझा गया कि अगर वो पकड़ा गया तो लोग तो उसको मारने वाले ही हैं.... इसलिए वो जोर से भागा, मैं भी पिछे भागी पर टाईफाईट के कारण से मैं जोर से भाग न सकी। गली के नाके से बाहर वो निकल गया, फिर मैं रूकी और वापस घर पर आयी। बहन को कह दिया कि, "चिंता मत कर, वो पीठ दिखाकर भाग गया हैं।"

म.सा. ! बोलो, अब मैं क्यों डरूं ?

मैं तो उस लड़की की निर्भयता देखकर, बोलने की दृढ़ता देखकर चकित हो गया। दीक्षा लेनी हैं ? मैंने प्रश्न किया।

"भावना तो है" जवाब सुनने को मिला।

"11 वर्ष की उम्र में मैं कैसा था ? मुझ में बुद्धि कितनी कम थी ? ये सब मुझे पता है, उसके सामने जब आज की ये नयी पिढ़ी को देखता हुँ, तो आँखे बारबार आश्चर्य से फट जाती हैं। छोटी उम्र से ही स्कुल का अभ्यास शुरूहो जाना ये नुकसानकारी तो है ही पर थोड़े बड़े होने के बाद यदि उनकी दिशा बदले, उनको अच्छे मार्ग पर रूचि जगे तो ये गलत पढ़ाई से हुई बुद्धि का विकास यहाँ अच्छे काम में आ जाता हैं। असारात सारमुद्धरेत ये ही उसका नाम ! waste को best बनाना ये ही उसका नाम !"

oooo

"म.सा. ! मेरे लड़के ने चैत्री ओली में पुरे नौ दिन आंयबिल किये है, वो अहमदाबाद गुरूकुल में पढ़ता हैं। हमको तो अभी ही समाचार मिले, जानकर बहुत ही आनंद हुआ। साहेबजी ! आप मुझे मार्गदर्शन दो कि उसकी ओली की आराधना निमित्त मैं क्या करूं ?" एक स्थानकवासी बहन ने मुझे प्रश्न पुछा।

चैत्रवेद एकम के दिन (मारवाड़ी तिथि वैशाख वद एकम) में चूले संघ के पास में जयजिनेन्द्र अपार्टमेन्ट में आया था, पीछे ही स्थानक वासी संघ की विशाल जगह में मोहनभाई, मनोजभाई ने सामुहिक ओली की आराधना करवाई थी वहा ही 7:30 से 8:30 प्रवचन रखा था। प्रवचन पूरा होने के बाद मैं बाहर निकल रहा था, तभी ही वो बहन ने मुझे कम्पाउन्ड में ही प्रश्न पूछा।

"बहन ! आप उपाश्रय आ सकते हो ? तो मैं शांति से जवाब दे सकता हुँ।" मैंने कहा और वो बहन उपाश्रय में आये।

"नो दिन आंयबिल किये है, तो नौ लाख रू. का सद्व्यय कर दो।" मैंने हँसते-

हँसते कहां।

"पक्का, मैं आज से ही चालु कर दुंगी, और मुझे धार्मिक अभ्यास भी करना है, तो उसके लिए मुझे क्या करना?"

"आप दोपहर चार बजे के बाद आओगे, तो मैं उसका मार्गदर्शन दे पाऊंगा।"

और दोपहर को बराबर चार बजे वो विनीता बहन हाजिर हो गये। उसी वक्त ज्ञान-क्षेत्र में अति-उत्तम ऐसे नेहा बहन और विधि बहन भी वहाँ बैठे हुए थे।

"निधि बहन! इन विनीता बहन को पढ़ना है, तो उनकी व्यवस्था आप कर देना ना?"

"म.सा.! ये व्यवस्था तो मैं कर दुंगी, पर आपको महत्व की बात तो ये बतानी है कि ये बहन कोई सामान्य व्यक्ति नहीं, इन्होंने छोटी उम्र में ही चतुर्थ व्रत का स्वीकार किया हुआ हैं।" निधिबहन बहुमान पूर्वक बोले।

"बहन! अभी आपकी उम्र?"

"32"

"व्रत का स्वीकार कब किया था?"

अपने गुण को बताने में संकोच अनुभव करते वो बहन बोले "28वर्ष में! म.सा. मेरे श्रावक आपके पास आए हुए है, अभय भाई उनका नाम हैं?"

हा, हा! अब याद आया, उन्होंने मुझे कहा था कि उनके गुरूजी प्रमोद मुनि जी ने उनको प्रेरणा की थी कि, "तेरे पुत्र को गुरूकुल में भेजो" तब मैंने गुरूजी को कहा कि "वहा तो सब मूर्तिपूजक है, मेरा पुत्र वहाँ पढ़ने जाएगा तो स्थानकवासी के बदले मूर्तिपूजक बन जाएगा, मुझे वहा नहीं भेजना।"

उस वक्त गुरूजी ने जवाब दिया कि, "अभय! वहा पढ़ेगा तो अच्छे संस्कार पाएगा जैन बनेगा, अगर घर पर ही रहेगा....तो नास्तिक बन जाएगा। मूर्तिपूजक बन जाएगा" ऐसी चिंता करके उसको नास्तिक बनाने की भूल मत करना।

म.सा.! मेरे गुरूजी प्रमोदमुनिश्री की ऐसी दीर्घ दृष्टि और उदार मनोवृत्ति देखकर मुझे बहुत आनंद हुआ। उन्होंने मेरे पुत्र को अपने पास खिंचने के बदले योग्य स्थान पर भेजने के लिए सामने से प्रेरणा की....

- विनीता बहन! उपर की सब बाते आपके श्रावक ने मुझे की, मुझे ये सब सुनकर बहुत ही आनंद हुआ।

(इस पुरे प्रसंग में विनीता बहन की आध्यात्मिकता निधि बहन की गुणानुरागिता, प्रमोदमुनिजी की उदारवृत्ति.... ये सब देखने को मिलता हैं।)

oooo

"साहेबजी! आज तो श्राविका ने कमाल कर दिया।" सुरेशभाई चौहान बोले। 38वर्ष की उम्र में धंधा बंद कर देने वाले, एक भी रूपया लिए बिना बिदाई समारोह गिरनार भावयात्रा, शासन संवेदना वगैरह अनेक कार्यक्रमों द्धारा हजारों लोगों को भावभीना बना चुके उनके मुँह से उनके श्राविका की प्रशंसा सुनना ये अलग ही बात थी।

बहुत सारे शासनकार्यो के कारण उनको बारबार बाहरगांव जाना पड़ता ,घर पर हो तो भी सतत् ये ही चर्चाए, ये ही चिंताए.... इसलिए श्राविका को और दो बालकों को समय नहीं दे पाते, कम दे पाते ये स्वभाविक हैं।

उनके श्राविका राजुल बहन साध्वीजी नहीं हैं, श्राविका है....पति के पास अपेक्षाएं होती ही है, ये स्वभाविक हैं। पति उनके साथ में बाते करे, घुमने लेकर जाए, परिवार के साथ घुले-मिले....ये सब अपेक्षाएं होती हैं, और ये पुरी ना हो तो मन भर जाता है, गुस्सा आता है, शब्दों के द्धारा फरियाद बाहर प्रगट हो जाती हैं। ये सब संभव है, और ये कोई नयी बात नहीं, ये तो घर-घर का प्रश्न हैं।

या तो दोनों परम-धार्मिक हो तो मुश्किल नहीं आएंगी

या तो दोनों परम-अधार्मिक हो तो मुश्किल नहीं आएंगी....

पर एक परमधार्मिक और दुसरा परम-अधार्मिक, अथवा अधार्मिक अथवा अल्प-धार्मिक हो....तो थोड़ा तो क्लेश होता ही हैं।

पर आज सुरेशभाई अत्यंत प्रसन्नता के साथ श्राविका की अनुमोदना कर रहे थे।

"क्या कमाल किया?" मैंने पूछा।

"आपने प्रेरणा की ना कि प्रभु वीर के जन्म दिवस पर प्रभुवीर को एक गिफ्ट दो, एक वर्ष के लिए कुछ सुकृत करो...."

"हाँ"

श्राविका ने आज मुझे बताया कि उन्होंने निर्णय किया है कि आज के बाद कैसी भी परिस्थिति आएंगी वो मात्र उसको स्वीकार करेगी, वो कोई भी अपेक्षा मेरे पास नहीं रखेगी, वो परिस्थिती को बदलने की कोशिश

नहीं करेगी, पर वो खुद ही परिस्थिति के अनुसार ढल जाएंगी।

मैं समझ सकता था कि इस कारण सुरेशभाई का शासन के कार्य करने का उल्लास कितना जोरदार बढ़ जाएगा....

"साहेबजी! उन्होंने बड़े लड़के को भी एक वर्ष के लिए नियम दिलाया है कि उसके छोटे भाई से ईर्ष्या नहीं करनी, छोटे को कुछ भी मिले तो बड़े को मुँह नहीं बिगाड़ना, खुश होना।"

"और छोटे भाई को नियम दिया कि वो अपनी वस्तु दुसरों को भी दे, स्वार्थी नहीं बनना, उदार बनना।"

9 और 8वर्ष की उम्र के बालको के दोषों को ध्यान में लेकर एक सच्ची माँ बनकर वो दोनों को गुणवान बनाने का प्रयत्न कर रही हैं।

और साहेबजी! सबसे बड़ी बात तो ये है कि मैंने जब उनको कहा कि, "तेरी इस प्रतिज्ञा से मुझे बहुत ही आनंद हुआ है तो तु बोल, तु जो कहेगी वो नियम एक वर्ष के लिए मैं लेने के लिए तैयार हुँ।"

तब उन्होंने मेरे पास जो मांगा वो सुनकर मेरा हृदय भर गया.... उन्होंने अपने लिए कुछ भी नहीं मांगा, उन्होंने मेरे लिए ही मेरे पास मांगा, बोलते-बोलते सुरेशभाई की आंखे नम हो गई।

"क्या मांगा?"

"म.सा.! नवम्बर 18तारीख से तमिलनाड़ श्वेताम्बर जैन संघ की तरफ से गिरनारमें नव्वाणु कराने वाले है, उनकी जवाबदारी मैंने ली हैं, दुसरे भी सब साथ में हैं। एक जगह उसके लिए कोई प्रोग्राम में गिरनार के गीतों का सेटिंग करना था, परंतु वो काम करने वाले ने भूल की इसलिए मुझे गुस्सा आ गया, मैंने उसको ठपका दिया।

ऐसा दो-तीन बार हुआ।

श्राविका को ये सब पता था, इसलिए उन्होंने मेरे पास में ये ही मांगा कि, "जब तक गिरनार की नव्वाणु पुरी ना हो, तब तक उसके काम के लिए आपको छोटे बड़े किसी पर भी थोड़ा भी क्रोध नहीं करना। सबके साथ में शांति से बात करनी। आप भगवान के काम के लिए किसी को भी थोड़ा सा भी दुख पहुंचाओं, ये नहीं चलेगा!"

बोलो साहेबजी! उन्होंने अपने लिए कुछ भी नहीं मांगा। मेरे आत्मा के हित की ही उन्होंने चिंता की।"

नेमिनाथ ने राजुल को तारा पर यहां तो ये राजुल मुझे तारेगी ऐसा मुझे लगता हैं....

सुरेशभाई की श्राविका की भक्ति जानकर-सुनकर मैं भी हँसे बिना नहीं रह पाया।

सौजन्य

गुरुश्री विजय शांतिसूरीश्वरजी योगीराज

(माउंट आबू)

का भक्त परिवार